pb
प्रवासी भारतीय
जुलाई २०१२ । वर्ष ५ । अंक ७

भारत को उसके प्रवासी समुदाय से जोड़ते हुए

खाड़ी देशों के साथ हमारा रिश्ता दोतरफा है – दोनों इससे काफी लाभान्वित हुए हैं

– श्री वायलार रवि,
प्रवासी भारतीय कार्य मंत्री

खाड़ी संपर्क

खाड़ी क्षेत्र में रहने वाले करीब साठ लाख भारतीय अपने मेजबान देशों के विकास में महती योगदान दे रहे हैं

प्रवासी भारतीय
कार्य मंत्रालय

साथ में

पेज १२
आव्रजन पर फोकस

पेज ३६
फ्रांसीसी विरासत

पेज ४२
अलौकिक स्वाद

GLOBAL – INDIAN NETWORK OF KNOWLEDGE (GLOBAL–INK):

"THE VIRTUAL THINK TANK"

AN INITIATIVE OF THE MINISTRY OF OVERSEAS INDIAN AFFAIRS

Global –INK positioned as a strategic "virtual think tank" connects Overseas Indians (knowledge providers) with the development process (knowledge receivers) in India and empowers them to partner in India's progress.

Being a next generation knowledge management, collaboration and business solution platform, Global-INK provides context to connect knowledge experts with knowledge seekers Consequently, these connections enable flow of knowledge and expertise from the Diaspora back into India and facilitate collective action.

Global – INK will catalyze Diaspora ability and willingness into well thought out projects and programs for development, transform individual initiatives into community action and achieve critical mass in chosen verticals.

The portal can be accessed only by registered users. Registration request can be submitted by filing out the registration form located on the Global-INK homepage (www.globalink.in)

Confederation of Indian Industry

प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय
Ministry of Overseas Indian Affairs

OIFC
Overseas Indian Facilitation Centre

pb
प्रवासी भारतीय

भारत को उसके प्रवासी समुदाय से जोड़ते हुए

सत्यमेव जयते

Ministry of Overseas Indian Affairs
www.moia.gov.in
www.overseasindian.in

एन. सिम्टे द्वारा प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय के लिए प्रकाशित एवं मुद्रित
अकबर भवन, चाणक्यपुरी
नई दिल्ली-११००२१
वेबसाइटः http://moia.gov.in
www.overseasindian.in

प्रवासी भारतीय मासिक जर्नल है। इस जर्नल में प्रकाशित लेख और विचार लेखकों के हैं और ये आलेख प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय (एमओआईए) के विचार को पूरी तरह प्रक्षेपित नहीं करते। सर्वाधिकार सुरक्षित है। एमओआईए की अनुमति के बगैर जर्नल के किसी भी अंश का न तो इस्तेमाल किया जा सकता है और न ही इन्हें प्रकाशित किया जा सकता है। मंत्रालय की अनुमति के बगैर इन अंशों का इलेक्ट्रॉनिक व यांत्रिक प्रकाशन के लिए इस्तेमाल भी नहीं किया जा सकता है। प्रतिलिपि तैयार करने के लिए भी पूर्वानुमति जरूरी है।

संपादकीय पत्र व्यवहार और संपर्क के लिए *pravasi.bharatiya@gmail.com* का इस्तेमाल करें।

प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय की ओर से आईएएनएस (www.ianspublishing.com) द्वारा डिजाइन और तैयार।

अनित प्रिंटर्स
१८११, ज्ञानी बाजार,
अपोजिट डी-५६ एन.डी.एस.ई
पार्ट-१,कोटला मुबारकपुर,
नई दिल्ली-११०००३ में मुद्रित

प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय
Ministry of Overseas Indian Affairs
www.overseasindian.in

विषय वस्तु

14 आवरण कथा
खाड़ी संपर्क
खाड़ी सहयोग परिषद (जीसीसी) के छह देशों में रह रहे करीब ६० लाख भारतीय कामगार क्षेत्र के विकास में अहम भूमिका निभा रहे हैं

आवरण फोटो : यू.ए.ई में एक लोकप्रिय भारतीय बाजार (फोटोः सौजन्य, एट होम इन द वर्ल्ड, ओवरसीज इंडियन फेसिलिटेशन सेंटर (ओआईएफसी)। (ऊपर) दुबई का समुद्री इलाका

10
विशेष रिपोर्ट
लाभकारी है ओआईएफसी
वर्ष २००७ में अपनी स्थापना से लेकर अब तक ओवरसीज इंडियन फेसिलिटेशन सेंटर हजारों प्रवासी भारतीयों की जिंदगी को प्रभावित करता रहा है

34
संगीत
संगीत का मरहम
ग्रैमी पुरस्कार के लिए नामित हुए बौद्ध भिक्षु नवांग केचोग अपनी बांसुरी का इस्तेमाल बौद्ध, हिंदू धर्म और पाश्चात्य दुनिया के बीच सेतु के रूप में करते हैं

22
प्रवासी खबरें
मॉरीशस में प्रवासी मिलन
यह द्वीप राष्ट्र अक्टूबर में छठे मिनी प्रवासी भारतीय दिवस का आयोजन करने वाला है

30 कला
अस्तित्व की कला
आसान अभिव्यक्ति वाले डिजिटल एवं विडियो आर्ट के नए जमाने में वाटरकलर नामक कला रूप अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहा है

32 नृत्य
नृत्य में फ्यूजन
शास्त्रीय नृत्य की भंगिमाओं से लैस समकालीन नृत्य भारत में लोकप्रिय होता जा रहा है

36 यात्रा
फ्रांसीसी विरासत
क्या आप विशुद्ध औपनिवेशिक विरासत की छांव में सुकून के क्षण बिताना चाहते हैं? आप इस इच्छा की पूर्ति के लिए भारत की फ्रांसीसी बस्तियों का रुख कर सकते हैं। विश्वास कीजिए, आप वाकई यूरोपीय परिवेश में होने का अहसास करेंगे...

42 व्यंजन
अलौकिक स्वाद
पूर्वोत्तर की खान-पान दुनिया हमेशा से संतुलित रही है, जिनमें मसालेदार एवं सादा दोनों तरह के व्यंजनों को अपनी-अपनी महत्ता हासिल है

28 पुस्तकें
बॉम्बे गर्ल
पत्रकार से उपन्यासकार बनी कविता दसवानी का उपन्यास नए भारत की एक ऐसी कहानी है जिसके कथ्य के दायरे में कई महादेश हैं

एम्सटर्डम में होगा प्रवासी सम्मेलन

सालाना इंडियन डायस्पोरा कांफ्रेंस इस साल ३० सितंबर को नीदरलैंड की एम्सटर्डम सिटी में होगा। ईयूएशिया न्यूज ने यह खबर दी है।

फाउंडेशन फॉर इंडियन डायस्पोरा इन यूरोप द्वारा आयोजित इस एक दिवसीय सम्मेलन का लक्ष्य अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को सुधारने के अलावा नीदरलैंड में प्रवासी भारतीयों के विभिन्न समूहों के बीच संबंधों को प्रगाढ़ बनाना है।

नीदरलैंड में भारतीय राजदूत भासवती मुखर्जी, डच अधिकारियों, भारतीय एवं डच विशेषज्ञों एवं विभिन्न सामाजिक और कारोबारी संगठनों के प्रतिनिधियों के इसमें भाग लेने की संभावना है। कार्यक्रम के आयोजकों ने इसकी पुष्टि की।

इसका उद्देश्य विभिन्न प्रवासी संगठनों एवं समूहों के बीच रिश्ते को सशक्त बनाना, डच समाज में प्रवासी भारतीयों की भूमिका को प्रोमोट करना और विभिन्न क्षेत्रों में भारत एवं नीदरलैंड के बीच रिश्तों को सशक्त एवं व्यापक बनाना है।

नीदरलैंड यूरोप में भारतीय की सर्वाधिक आबादी वाला दूसरा देश है, जहां भारतीय

भासवती मुखर्जी

मूल के करीब २००,००० लोग हैं, जिनमें मूलतः सूरीनाम और भारत के अनिवासी भारतीय प्रमुखता से शामिल हैं।

एनआरआई के लिए कार्ड लांच करेगा पंजाब

पंजाब सरकार ने घोषणा की है कि वह शीघ्र ही विदेशों में रहने वाले पंजाबियों के लिए एनआरआई कार्ड जारी करेगी ताकि उन्हें विभिन्न आधिकारिक कारकों के लिए पहचाना जा सके एवं विभिन्न सेवाएं प्रदान की जा सकें। पंजाब के उप मुख्यमंत्री सुखबीर सिंह बादल, एनाआरआई मामलों के मंत्री बिक्रम सिंह मजीठिया और पूर्व केंद्रीय मंत्री बलवंत सिंह रामूवालिया ने एनआरआई मामलों

विभाग से कहा कि वह जल्द एनआरआई कार्ड पर काम करे और इसे जल्द से जल्द लागू करे।

बादल ने कहा कि पंजाब को एनआरआई को अपने विकास में शामिल करना होगा और इसके लिए राज्य सरकार इस समुदाय को भरपूर सहायता प्रदान करेगी। उन्होंने कहा कि एनआरआई समुदाय के लोग इस कार्ड के लिए विभाग की वेबसाइट पर आवेदन कर सकेंगे।

उन्होंने कहा कि कार्ड न सिर्फ एनआरआई को एक पहचान देगा, बल्कि उन्हें गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सुविधा एवं पंजाब में खरीदारी पर आकर्षक रियायत भी दिला सकेगा।

मजीठिया ने कहा कि एनआरआई विभाग की एक समग्र वेबसाइट व पोर्टल तैयार कर लिया गया है, और उसे जल्द ही शुरू कर दिया जाएगा।

बादल ने कहा कि २४ घंटे की एनआरआई हेल्पलाइन शुरू की जाएगी, जहां एनआरआई अपनी शिकायतों को पंजीकृत कर सकेंगे और उन्हें समय-बद्ध प्रतिक्रिया मिल पाएगी।

उन्होंने कहा कि इस कदम से एनआरआई में भरोसा जगेगा, क्योंकि वे पंजाब में अपनी जमीन, संपत्ति एवं निवेशों को लेकर असुरक्षित महसूस करते रहे हैं।

भारतीय मिशन ने त्रिनिदाद में आयुर्वेद केंद्र लांच किया

त्रिनिदाद एवं टुबैगो में भारतीय उच्चायोग ने पारंपरिक भारतीय इलाज पद्धति में इस कैरीबियाई देश के लोगों की बढ़ती दिलचस्पी को देखते हुए एक आयुर्वेद केंद्र लांच किया है। इस केंद्र का उद्घाटन त्रिनिदाद एवं टुबैगो के स्थानीय सरकार मामलों के मंत्री सुरुजतन रामबचन ने हाल ही में किया।

मंत्री ने यह भी घोषणा की कि जल्द ही सेंट आगस्टिन में यूनिवर्सिटी ऑफ वेस्ट इंडीज में चेयर ऑफ आयुर्वेद मेडिसीन की स्थापना की जाएगी।

उन्होंने बताया कि यह विश्वविद्यालय में ऐसा दूसरा अकादमिक कार्यक्रम होगा। पहला संस्थान चेयर ऑफ एशियन स्टडीज है। रामबचन ने कहा कि यह फैसला जनवरी में प्रधानमंत्री कमला परसाद बिसेसर की अपनी ऐतिहासिक

भारत यात्रा के दौरान भारतीय प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह के साथ हुए कई करारों की ही कड़ी है। रामबचन ने कहा कि दोनों देशों के बीच रिश्ता न सिर्फ सांस्कृतिक एवं धार्मिक क्षेत्रों तक सीमित है, बल्कि यह आर्थिक एवं निवेश क्षेत्रों तक भी तेजी से प्रगाढ़ हो चुका है। उन्होंने भारतीय उच्चायुक्त मलय मिश्रा की तारीफ करते हुए उन्हें उद्यमशील उच्चायुक्त करार दिया।

मिश्रा ने कहा कि त्रिनिदाद एवं टुबैगो भारत के बाहर दूसरा ऐसा देश है जहां आयुर्वेद केंद्र स्थापित हुआ है। पहला ऐसा देश मलेशिया है। उन्होंने कहा कि लोक केंद्र में आकर आयुर्वेद संबंधी सभी जानकारी, ब्रॉशर, प्रकाशन एवं वीडियो हासिल कर सकते हैं।

मेडिकल कालेज के लिए एनआरआई निवेश चाहता है केरल

केरल सरकार ने ३०० करोड़ रुपये की लागत से अस्पताल एवं मेडिकल कालेज स्थापित करने की मंजूरी दे दी है, जिसमें प्रवासियों को निवेश करने की अनुमति होगी। केरल इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल एजुकेशन एंड रिसर्च की स्थापना अगले तीन सालों में अलप्पुजा जिले में की जाएगी। एक अधिकारी ने यह बताया। राज्य के मुख्यमंत्री ऊमेन चैंडी ने हाल ही में एक कैबिनेट बैठक में इस पर सहमति की मुहर लगाई।

अपने बजटीय भाषण में राज्य के वित्तमंत्री के.एम. मणि ने राज्य में पांच सरकारी मेडिकल कालेजों की स्थापना की योजना की घोषणा की। यह कालेज इनमें पहला होगा। एक अधिकारी ने आईएएनएस से बातचीत करते हुए कहा कि यह अत्याधुनिक संस्थान खंडित संरचना वाला होगा - सरकारी अधिकारियों की एक समिति इस अस्पताल एवं एक प्रबंधन इस कालेज को संचालित करेगा।

एक और समिति अस्पताल एवं कालेज के ढांचागत विकास को देखेगी। अधिकारी ने बताया, ''यह परियोजना अगले तीन सालों में अस्तित्व में आ जाएगी। इच्छुक अनिवासी केरली इस परियोजना में निवेश कर सकेंगे एवं इसमें शेयर हासिल कर सकेंगे।''

उन्होंने कहा, ''यह संस्थान निजी-सार्वजनिक भागीदारी मॉडल पर बनेगा और इसे सरकार द्वारा गठित एक समिति संचालित करेगी।''

सरकार ने अलप्पुजा में नेशनल थर्मल पावर कॉर्प संयंत्र के पास इस परियोजना के लिए २५ एकड़ जमीन आवंटित की है।

अधिकारी ने कहा, ''इसमें सरकार का योगदान कुल इक्विटी २६ फीसदी होगा। शेष राशि प्रवासी समुदाय की ओर से निवेश के तौर पर आएगी। जो भी संस्थान का शेयर खरीदेंगे, उन्हें एमबीबीएस कोर्स में दाखिले के लिए हर साल एक सीट मिलेगी। चूंकि इसकी परिपक्वता अवधि दूसरे उपक्रमों से अधिक होगी, इसमें निवेश चाहने वाले प्रवासी को यह ध्यान रखना होगा कि अगले १० सालों तक उन्हें इससे कोई मौद्रिक लाभ नहीं होगा।''

कन्नूर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा परियोजना के बाद यह दूसरी योजना है जहां सरकार ने प्रवासियों से निवेश के लिए कहा है।

भारत पर लैटिन अमेरिका की नजर

लातीनी अमेरिका के तीन प्रमुख देशों चिली, क्यूबा एवं वेनेजुएला ने भारत के साथ नजदीकी रणनीतिक एवं आर्थिक भागीदारी पर जोर देते हुए भारत को एक ऐसी उभरती हुई बड़ी आर्थिक ताकत करार दिया है जो इस क्षेत्र की तकदीर संवारने में अहम रोल अदा कर सकता है। विविध क्षेत्रों में भारत के साथ रिश्ते को ऊंचाई देने की जरूरत पर जोर देते हुए चिली के विदेश मंत्री अलफ्रेडो मोरेनो चार्म ने भारत एवं लातीनी अमेरिका के बीच प्रगाढ़ रिश्ते के कई लाभों को गिनाते हुए कहा कि इससे दोनों को कई सामाजिक और आर्थिक लाभ होंगे।

इंडियन काउंसिल ऑफ वर्ल्ड अफेयर (आ. ईसीडब्ल्यूए) द्वारा 'रिसेंट डेवलपमेंट्स इन लैटिन अमेरिकन एंड कैरिबियन (एलएसी) रीजन' विषय पर आयोजित गोष्ठी में बोतले हुए चार्म ने कहा, ''भारत उभरती हुई ताकत है। दोनों क्षेत्रों के बीच नजदीकी रिश्ते से आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में सहयोग के नए क्षेत्र खुलेंगे।''

विदेश मंत्रालय में सचिव (पश्चिम) एम. गणपति ने भी दोनों क्षेत्रों के बीच प्रगाढ़ रिश्ते की जमकर वकालत की। उन्होंने कहा, ''यह दोनों के हित में है। इस रिश्ते के कई लाभ हैं और कई अवसर पैदा होंगे। हम कम्युनिटी ऑफ लैटिन अमेरिकन कंट्रीज (सीईएलएसी) के साथ संपूर्ण महादेशीय रिश्ता चाहते हैं।''

आईसीडब्ल्यूए के महानिदेशक राजीव भाटिया ने कहा, ''कभी एलआईसी क्षेत्र भारतीय राजनय परिदृश्य से दूर था। अब रिश्तों में बहु-आयामी परिवर्तन हो रहा है।''

भारत और इन देशों के समूह के बीच बातचीत का निष्कर्ष विविध क्षेत्रों में संयुक्त समितियों के गठन के रूप में सामने आया।

चुनावी सुधारों के लिए भारत-द. कोरिया गठजोड़

भारत और दक्षिण कोरिया ने दोनों देशों में लोकतंत्र, बेहतर प्रशासन एवं कानून के शासन को सुदृढ़ बनाने के लिए संस्थानों एवं प्रक्रियाओं के स्तर पर गठजोड़ मजबूत करने का फैसला किया है।

भारत के मुख्य चुनाव आयुक्त वी.एस संपत एवं नेशनल इलेक्टोरल कमीशन ऑफ रिपब्लिक ऑफ कोरिया के प्रमुख जस्टिस नुंग ह्वान किम ने हाल ही में एक सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किया।

संपत ने कहा, ''हम लोकतांत्रिक कार्य प्रणाली और श्रेष्ठ चुनावी कार्यों में कोरिया के बेहतर रिकार्ड से अवगत हैं।''

इस करार का उद्देश्य संयुक्त प्रयासों से भारत और दक्षिण कोरिया ने दोनों देशों में लोकतंत्र, बेहतर प्रशासन एवं कानून के शासन को सुदृढ़ बनाने के लिए संस्थानों एवं प्रक्रियाओं के स्तर पर गठजोड़ मजबूत करने का फैसला किया है।

कोरियन इलेक्शन कमीशन वर्तमान में एसोसिएशन ऑफ एशियन इलेक्शन अथॉरिटीज का अध्यक्ष है, वहीं भारत उपाध्यक्ष है।

भारत-अमेरिका रक्षा संबंध में गर्मजोशी

भारत में अपने रक्षा उत्पादों की बिक्री को बढ़ावा देने के लिए अमेरिका बगैर प्रतियोगी बोली के 'सरकार से सरकार को हस्तांतरण' पर आधारित अपने फारेन मिलिट्री सेल्स (एफएमएस) प्रोग्राम की अपनी तकनीकी एवं राजनीतिक खूबियों को पेश कर रहा है।

विदेश विभाग के ब्यूरो ऑफ पॉलिटिकल-मिलिट्री अफेयर्स में सहायक मंत्री एंड्रयू जे. शैपिरो ने डिफेंस ट्रेड एडवाइजरी ग्रुप को संबोधित करते हुए कहा, ''हम ऐसे नए भागीदारों एवं उभरते बाजारों तक पहुंचने की कोशिश कर रहे हैं, जहां रक्षा कारोबार में वृद्धि के आसार हैं।''

रक्षा व्यापार को विस्तारित करने के अमेरिकी प्रयासों की चर्चा करते हुए शैपिरो, जो पिछले छह वर्षों में आयोजित पहली राजनीतिक-सैन्य वार्ता में भाग लेने के लिए भारत आये हुए थे, ने कहा कि हम कि अपनी प्रणाली के बारे में भारत सरकार को वाकिफ कराने और उसकी चिंताओं को दूर करने की कोशिश कर रहे हैं।''

उन्होंने कहा, ''हमें लगता है कि रक्षा बिक्रियों को व्यापक रणनीतिक लक्ष्यों से जोड़ने से अमेरिका-भारत रक्षा एवं व्यापार संबंध को लाभ पहुंचेगा। यही वजह है कि हम एफएमएस ऑफर के तकनीकी एवं राजनीतिक लाभों को आगे रख रहे हैं।''

उन्होंने कहा कि नई दिल्ली में राजनीतिक-सैन्य वार्ताओं के प्रमुख लक्ष्यों में से एक है रक्षा व्यापार को बढावा देना। उन्होंने इसका ज़िक्र किया कि भारत को संचयी रक्षा बिक्री २००८ के लगभग तुच्छ स्तर से बढ़कर अब ८ अरब डालर पर पहुंच गई है।

उन्होंने कहा कि ओबामा प्रशासन अमेरिकी रक्षा उद्योग को अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा एवं विदेश नीति को आगे बढ़ाने की रणनीति के तौर पर देखता है।

आईएएस कोचिंग केंद्रों की नजर एनआरआई उम्मीदवारों पर

राष्ट्रप्रेम की नब्ज को टटोलते हुए कई निजी कोचिंग संस्थान विदेशों में बसे भारतीयों एवं उनके बच्चों को बतौर नौकरशाह मातृभूमि की सेवा करने के लिए भारतीय लोक सेवाओं की परीक्षाएं देने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

यह भारतीय नागरिकता से लैस एनआरआई के लिए एक अनूठा विचार हो सकता है, पर कुछ संस्थानों को उम्मीद है कि उनका यह प्रयास जरूर रंग लाएगा।

उदाहरण के लिए, नई दिल्ली स्थित चाणक्या आईएएस एकेडमी ने भावी एनआरआई सिविल सर्विस प्रतियोगियों के लिए दुबई में एक संपर्क कार्यक्रम आयोजित किया। एकेडमी के प्रमुख ए.के मिश्रा ने कहा, ''अपने बच्चों को मातृभूमि की सेवा करने के लिए तैयार करने की इस अवधारणा ने कई एनआरआई को प्रभावित किया। वे उत्साहित थे।''

उन्होंने कहा, ''कई एनआरआई एवं उनके बच्चों ने यह स्वीकार किया कि भारतीय लोक सेवाओं से जुड़ना मातृभूमि की सेवा का एक अनूठा प्रयास होगा।'' मिश्रा लोक सेवा के प्रतियोगियों के लिए एक सफल मार्गदर्शक हैं।

मिश्रा के अनुसार देश में सिविल सेवा कोचिंग का कारोबार करोड़ों रुपये का है और ५०० से अधिक संस्थान इसमें जुटे हैं। नई दिल्ली और चेन्नै जैसे महानगरों में से ऐसे संस्थानों का उच्च घनत्व है।

मिश्रा का कहना है कि एनआरआई को सिविल सेवाओं में उपलब्ध मौकों के बारे में अवगत होने की जरूरत है, क्योंकि उनकी दिलचस्पी ज्यादातर पेशेवर कोर्सों में रही है।

पहला बोइंग सी-१७ मध्य २०१३ तक भारत को मिलेगा

भारत के लिए बोइंग द्वारा निर्मित १० सी-१७ ग्लोबमास्टर तृतीय में से पहले विमान की निर्माण प्रक्रिया में उस वक्त तेजी आई जब कैलिफोर्निया के लॉन्ग बीच स्थित बोइंग संयंत्र में हाल ही में इससे जुड़ा एक कार्यक्रम हुआ।

भारतीय वायु सेना (आईएएफ) अमेरिका से ४.१ अरब डालर में खरीदे जा रहे उपरोक्त श्रेणी के विमानों में से प्रथम विमान को जून २०१३ में सेना में शामिल करेगी।

सैन फ्रांसिस्को में भारत के वाणिज्य महादूत एन. पार्थसारथी ने विमान के फारवार्ड, सेंटर, एफ्ट फ्यूजलेज एवं विंग एसेंबली के समेकन के उपलक्ष्य में आयोजित एक कार्यक्रम में

इस विमान के एक कीलक को संचालित किया। विमान निर्माण के इस चरण को 'मेजर ज्वाइन' कहा जाता है। इस समारोह में बोइंग, भारतीय दूतावास, भारतीय वायुसेना एवं स्थानीय निर्वाचित प्रशासन के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

भारत एवं थाईलैंड ने त्रिपक्षीय राजमार्ग के लिए प्रयास तेज किया

भारत एवं थाईलैंड ने एक मुक्त व्यापार संधि की संभावनाओं पर जारी वार्ताओं की समीक्षा की और म्यांमार होते हुए दोनों देशों के बीच सड़क संपर्क के लिए एक त्रिपक्षीय उच्च पथ समेत कई संपर्क परियोजनाओं पर प्रयास तेज करने का फैसला लिया है।

विदेश मंत्रालय में सचिव (पूर्व) संजय सिंह ने थाईलैंड विदेश मंत्रालय में स्थायी सचिव सिहासाक फुआंगकेटक्यू के नेतृत्व वाले प्रतिनिधिमंडल से बैंकाक में १० अगस्त को बातचीत की।

बैंकाक में भारतीय दूतावास द्वारा जारी बयान में कहा गया कि थाईलैंड-म्यांमार-भारत त्रिपक्षीय हाईवे एवं दवेई जैसी परियोजनाओं के कार्यान्वयन की प्रमुख कड़ी के तौर पर विदेश मंत्रालय की इस आकलन बैठक में संपर्क एवं ढांचागत नेटवर्क बढ़ाने की दिशा में उठाए जा रहे कदमों की चर्चा हुई।

भारतीय दूतावास ने कहा, ''इन अधिकारियों ने समग्र द्विपक्षीय एफटीए पर वाताओं की स्थिति, व्यापारिक रिश्तों को बढ़ाने के उपायों, सुरक्षा मसलों एवं सांस्कृतिक और लोक संपर्क में तेजी के उपायों पर चर्चा की।''

थाई प्रधानमंत्री यिंगलुक शिनावात्रा की इस साल हुई ऐतिहासिक भारत यात्रा के दौरान दोनों पक्षों द्वारा लिए गए कुछ फैसलों के कार्यान्वयन की दिशा में हुई प्रगति की भी

इस वार्ता में समीक्षा की गई। उनकी यात्रा से दोनों देशों के बीच रणनीतिक भागीदारी में तेजी आई थी।

भारतीय पक्ष ने थाई राजनयिकों को दिसंबर में होने वाले विशेष भारत-आसियान समग्र शिखर सम्मेलन के लिए भारत द्वारा की जा रही तैयारियों से भी अवगत कराया।

भारत ने पूरब की ओर देखो अपनी नीति को ध्यान में रखकर थाईलैंड की प्रथम महिला एवं सर्वाधिक युवा प्रधानमंत्री शिनावात्रा का गर्मजोशी से स्वागत किया। उन्हें इस साल जनवरी में गणतंत्र दिवस समारोह में मुख्य अतिथि बनाया गया। यह लगातार तीसरा ऐसा मौका था जब भारत ने किसी दक्षिण-पूर्वी एशियाई देश के नेता को इस समारोह में मुख्य अतिथि बनाया।

इंडोनेशियाई राष्ट्रपति सुसीलो बामबैंग युधोयोनो और दक्षिण कोरियाई राष्ट्रपति ली म्युंग-बैक को वर्ष २०११ एवं २०१० में इस समारोह में मुख्य अतिथि बनाया गया।

आईटी में बेलारूस से सहयोग बढ़ाएगा भारत

भारतीय कंपनियां आईटी उद्योग में अपने बेलारूसी भागीदारों के साथ सहयोग बढ़ाने को इच्छुक हैं। भारतीय राजदूत मनोज भारती ने यह कहा।

कुछ ऐसी भारतीय कंपनियां बेलारूस को अपने सॉफ्टवेयर विकास के लिए आउटसोर्सिंग ठिकाने के तौर पर देखती हैं, यूरोप में अपने उत्पादों को बेचना चाहती हैं।

भारती ने कहा। भारतीय दूतावास को उम्मीद है कि बेलारूस में भारतीय कंपनियों के कार्यालयों में वृद्धि होगी।

उन्होंने जोर देकर कहा कि बेलारूस आने वाली भारतीय कंपनियां यहां के आईटी पेशेवरों के प्रशिक्षण से प्रभावित हैं। भारती ने कहा, ''उन्होंने इसकी बेहद तारीफ की है और उन्हें पूरा भरोसा है कि बेलारूस संयुक्त भागीदारियों के लिए बेहतर पसंद साबित होगा।''

मिंस्क में बेलारूसियन-इंडियन ट्रेनिंग सेंटर की स्थापना २०११ में हुई थी। इसे आईटी पेशेवरों एवं तकनीकी विश्वविद्यालयों के प्रोफेसरों के पेशेवर उत्थान में विशेषज्ञता हासिल है। यहां २,००० से अधिक पेशेवर इस प्रशिक्षण से गुजर चुके हैं।

केंद्र ने बेलारूस, भारत एवं दूसरे देशों से नामी शिक्षकों, प्रमुख आईटी कंपनियों के विशेषज्ञों, शैक्षिक एवं शोध केंद्रों की सेवा ली है। प्रशिक्षण कार्यक्रम सर्वाधिक संगत वैश्विक प्रचलनों पर आधारित है।

भारतीय को मैगसेसे पुरस्कार

भारत के कुलनदेई फ्रांसिस वर्ष २०१२ के छह रमन मैगसेसे पुरस्कार विजेताओं में से एक हैं। आयोजकों ने मनीला में इसकी घोषणा की। रेमन मैगसेसे अवार्ड फाउंडेशन (आरएमएएफ) द्वारा जारी एक बयान में कहा गया है कि फ्रांसिस को उनकी विजनरी प्रतिबद्धता, सामुदायिक ऊर्जाओं में उनकी गहरी आस्था और ग्रामीण भारत में हजारों महिलाओं एवं उनके परिवार वालों के समग्र आर्थिक सशक्तिकरण प्रयासों को आगे बढ़ाने के लिए यह पुरस्कार दिया जाता है।

फ्रांसिस ने तमिलनाडु के कृष्णागिरि में १९७९ में इंटीग्रेटेड विलेज डेवलपमेंट प्रोजेक्ट (आईवीडीपी) की शुरुआत की। उन्होंने रात्रिकालीन स्कूल और प्राथमिक उपचार केंद्र की स्थापना जैसी छोटी परियोजनाओं से अपने इस मिशन का आरंभ किया था।

(बायें) माननीय प्रवासी भारतीय कार्य मंत्री श्री वायलार रवि राजस्थान के माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत और सीआईआई के महानिदेशक और ओआईएफसी के सह-अध्यक्ष श्री चंद्रजीत बनर्जी के साथ पीबीडी २०१२ में ओआईएफसी मार्केट प्लेस का उद्घाटन करते हुए।

लाभकारी संपर्क का सेतु है ओआईएफसी

वर्ष २००७ में अपनी स्थापना से लेकर अब तक ओवरसीज इंडियन फेसिलिटेशन सेंटर हजारों प्रवासी भारतीयों की जिंदगी को प्रभावित करता रहा है, **एन.सी. बिपिंद्रा** की रिपोर्ट

विदेशों में २.५ करोड़ से अधिक प्रवासी भारतीय रहते हैं और यह समुदाय अपने मूल देश के लिए ज्ञान, विशेषज्ञता, संसाधनों का स्रोत एवं विकास का बाजार रहा है। इससे प्रेरित होकर ओवरसीज इंडियन फेलिसिटेशन सेंटर (ओआईएफसी) की स्थापना वर्ष २००७ में की गई और पिछले पांच वर्षों में इसने हजारों प्रवासी भारतीयों की जिंदकी को स्पर्श किया है। ओआईएफसी ने उन भारतीयों के लिए आसान प्रकियाएं सुनिश्चित की हैं, जो भारत के साथ मिलकर काम करना चाहते हैं।

इन तथ्यों पर जहां गौर करें : संगठन ने उन प्रवासी भारतीयों की ओर से १०,००० से अधिक सवालों के जवाब दिए हैं, जो भारत में निवेश करना चाहते हैं और भारत के साथ मिलकर काम करना चाहते हैं।

ऐसे प्रवासी भारतीयों की संख्या १३,००० से अधिक है जिन्होंने इसमें पंजीकरण कराकर व्यापार क्षेत्र में परस्पर लाभान्वित होना चाहते हैं। इसके मासिक न्यूजलेटर 'इंडिया कनेक्ट' के कम से कम ३५,००० ग्राहक हैं, जिनका लक्ष्य ताजा भारतीय निवेश हलचलों से अवगत होना है। और यह फेसबुक, ट्विटर एवं लिंक्डइन जैसे लोकप्रिय सोशल नेटवर्किंग साइटों पर लोकप्रिय लिंक है।

प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय (एमओआईए) एवं भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) की निजी-सार्वजनिक भागीदारी पहल ओआईएफसी का उद्देश्य प्रवासी भारतीयों को भारत के साथ आर्थिक गतिविधियों में सहयोग देना है।

ओआईएफसी की स्थापना की प्रेरणा भारत में निवेश परिवेश पर सूचना की कमी एवं एक भरोसेमंद कारोबार उत्प्रेरक का अभाव थी। अर्न्स्ट एंड यंग की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत विदेशी निवेश के लिए दूसरा सर्वाधिक पसंदीदा ठिकाना है। रिपोर्ट के अनुसार भारत के लिए प्रमुख आकर्षणों में उसका एयरोस्पेस, रक्षा उद्योग, ऑटोमोबाइल उद्योग, दवा एवं चिकित्सा केंद्र आदि हैं, जहां हाल में तेजी का दौर देखा गया है। एक ओआईएफसी अधिकारी ने कहा, ''भारत में निवेश के प्रयास में प्रवासी निवेशकों को कई बार अवरोधों का भी सामना करना पड़ता है। उनके पास इसे लेकर सवाल तो होते हैं, पर उत्तर नहीं। उन्हें शक तो होता है, लेकिन उन्हें पता नहीं कि कैसे इन्हें मिटाया जाए। वे अगला कदम तो उठाना चाहते हैं, लेकिन वे सही व्यक्ति और विश्वसनीय सूचना तक नहीं पहुंच पाने के कारण ऐसा नहीं कर पाते। यहां यह संगठन इस अंतराल को पाटता है।''

यह गैर-लाभकारी पहल है जिसका उद्देश्य भारत की विकास यात्रा में प्रवासियों की भूमिका बढ़ाना है।

उपनगरी गुड़गांव में मुख्यालय वाले इस संगठन के अधिदेश हैं एक प्रवासी ज्ञान नेटवर्क की स्थापना एवं उसका संपोषण, भारत में प्रवासी निवेश को बढ़ावा एवं कारोबारी भागीदारियों को सुनिश्चित करना। यह राज्यों को प्रवासियों के समक्ष निवेश अवसरों को प्रस्तुत करने में मदद देता है और भारतीय मूल के लोगों और अनिवासी भारतीयों को कई तरह की सेवाएं प्रदान करता है।

भारत में निवेश को इच्छुक प्रवासी भारतीयों को इसके द्वारा जो सेवाएं प्रदान की जाती हैं, उनमें बिजनेस नेटवर्किंग प्लेटफार्म, इसकी वेबसाइट ूण्वपबिण्पद पर सप्ताह में पांच दिन रोजाना १६ घंटों तक सेवा में रहने वाला लाइव चैट विंडो और 'आस्क द एक्सपर्ट' सेवा प्रमुखता से शामिल है।

ऐसे राज्य जिनसे इसका गठजोड़ है, वे हैं असम, बिहार, गुजरात, हरियाणा, झारखंड, कर्नाटक, केरल ओडिशा, पंजाब और राजस्थान। इच्छुक निवेशकों को सही मार्गदर्शन प्रदान करने के उद्देश्य से संगठन ने कोटक महिंद्रा बैंक लिमि. (एनआरआई बैंकिंग) और यूनियन बैंक को अपना ज्ञान भागीदार बनाया है।

अधिकारी ने बताया, ''इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि प्रवासी समुदाय पूरी दुनिया में विभिन्न समय-जोन में फैला हुआ है, संपर्क का यह दायित्व वाकई कठिन है। सवालों का दायरा एवं गहराई व्यापक है। हमारा उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि कोई भी उत्तर अनुत्तरित नहीं रह जाए और न ही कोई शक बना रह जाए।''

ये सभी प्रयास माननीय प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह के इस वक्तव्य की संवेदना पर खरा उतरते हैं, ''भारत दुनिया के सर्वाधिक तेज अर्थव्यवस्था के तौर पर उभरा है। मैं चाहता हूं कि प्रवासी समुदाय प्रवासी समुदाय इन मौकों का पूरा लाभ उठाएं। मैं चाहता हूं कि आप भारत तक पहुंचें और इसमें निवेश करें। न सिर्फ वित्तीय रूप से बल्कि बौद्धिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और इस सबसे ऊपर भावनात्मक रूप से भी इसमें निवेश करें।''

ओआईएफसी के बारे में टिप्पणी करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा, ''यह भारत में निवेश मामलों पर प्रवासी भारतीयों के साथ संपर्क का एक प्रभावशाली माध्यम होगा।''

माननीय प्रवासी भारतीय कार्य मंत्री श्री वायलार रवि ने ओआईएफसी के लक्ष्यों की चर्चा करते हुए कहा था कि यह 'भारतीय राज्यों, भारतीय व्यापारियों और भावी निवेशकों को एक ही मंच पर लाएगा और निवेशकों को निवेश मौकों की पहचान में मदद देगा।'

इन लक्ष्यों को हासिल करने के लिए संगठन ने अफ्रीका, कैरीबियाई क्षेत्र, यूरोप, मध्य-पूर्व, उत्तरी अमेरिका, ग्रेट ब्रिटेन और पूवी अफ्रीकी देशों में विभिन्न रोड शो एवं बिजनेस फोरम का आयोजन किया है।

अप्रैल २०१२ में संगठन ने केन्या के नैरोबी में एक 'इंडियन डायस्पोरा इनगेजमेंट मीट' का आयोजन किया।

एमओआईए सचिव श्री परवेज दीवान, जो ओआईएफसी के चेयरमैन भी हैं, भी इस सम्मेलन में थे, जिसका आयोजन केन्या स्थित भारतीय उच्चायोग के सहयोग से किया गया था जिसमें ग्लोबल ऑर्गनाइजेशन ऑफ पीपुल ऑफ इंडियन ऑरिजन (गोपियो), अफ्रीका, ने भी भूमिका निभाई।

इस मॉडल को वियतनाम, जॉर्जिया, कजाखस्तान और जमैका जैसे देश भी अपने प्रवासी निवेशकों से संपर्क के लिए अपनाने पर विचार कर रहे हैं। pb

केन्या गणराज्य के विदेशमंत्री माननीय एम्बी. प्रो. सैमसन के. ओंगेरी (ऊपर) अप्रैल २०१२ में ओआईएफसी के 'प्रवासी संपर्क सम्मेलन' में बोलते हुए, (बायें) ओआईएफसी की सीईओ श्रीमती सुजाता सुदर्शन नीदरलैंड में ओआईएफसी बिजनेस सत्र में बोलती हुईं।

केन्या में अप्रैल २०१२ में ओआईएफसी के 'प्रवासी संपर्क सम्मेलन' में भाग लेते हुए प्रतिनिधि।

आव्रजन पर फोकस

एमओआईए एवं यूरोपीय संघ ने आव्रजन एवं संचरण पर सहयोग के लिए भावी संरचनात्मक ढांचा विकसित करने की दिशा में पहल की है

कामगारों के अव्यवस्थित आव्रजन एवं संचरण के दुष्प्रभावों से अच्छी तरह वाकिफ भारत एवं यूरोपीय संघ ने एक ऐसे ढांचे के विकास की दिशा में पहल तेज कर दी है जो कुशल एवं अकुशल श्रम बल के संचरण से जुड़े मसलों से निपटने में मदद देगा।

इस परिप्रेक्ष्य में दोनों पक्षों ने २ जुलाई को यहां एक एकदिवसीय उच्च-स्तरीय वार्ता की जिसमें आव्रजन एवं गतिशीलता पर सहयोग के कई पहलुओं पर चर्चा हुई।

इसमें यूरोपीय संघ का नेतृत्व यूरोपीय आयोग के गृह मामलों महानिदेशक स्टीफानो मानसेरवेसी ने किया, जिसमें प्रेसीडेंसी ऑफ द यूरोपीयन यूनियन के प्रतिनिधियों, सदस्य राष्ट्रों के प्रतिनिधियों एवं यूरोपीयन एक्सटर्नल एक्शन सर्विस के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया।

भारतीय पक्ष का नेतृत्व प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय (एमओआईए) के सचिव परवेज दीवान ने किया। भारतीय दल में एमओआईए में वित्तीय सेवा मामलों के संयुक्त सचिव अतुल कुमार तिवारी समेत कई एमओआई

(शीर्ष) २ जुलाई को नई दिल्ली में एमओआईए-यूरोपीय संघ की बैठक प्रगति पर, (ऊपर) गृह मामलों के लिए यूरोपीय आयोग के महानिदेशक स्टेफानो मानसेर्विसी।

प्रतिनिधिओं के अलावा विदेश मंत्रालय, गृह मंत्रालय एवं इंडिया सेंटर फॉर माइग्रेशन के प्रतिनिधि भी शामिल थे।

इस उच्च-स्तरीय वार्ता में विभिन्न विषयों पर मंथन के बाद दोनों पक्ष इस पर सहमत हुए कि भारत एवं यूरोपीय संघ के बीच आव्रजन एवं संचरण पर ऐसे कई साझा क्षेत्र हैं, जहां द्विपक्षीय सहयोग बढ़ाया जा सकता है।

दोनों पक्षों ने स्वीकार किया कि इन चार प्राथमिकता क्षेत्रों में समग्र कदम उठाए जाने की जरूरत है - सुरक्षित एवं कानूनी आव्रजन, अनियमित आव्रजन से मुकाबला, आव्रजन एवं विकास और सूचना एवं सर्वश्रेष्ठ कार्य व्यवहारों से जुड़े अनुभवों का आदान-प्रदान। वे सुरक्षित एवं कानूनी आव्रजन चाहते थे, जिसके जिसके लिए उन्होंने निर्णय लिया कि सबूत आधारित शोध को संयुक्त तौर पर संचालित किया जा सकता है।

इसके अलावा दोनों पक्षों ने विदेशों में रोजगार के लिए उड़ान पकड़ने से पहले कामगारों का प्रस्थान-पूर्व अनुकूलन को जरूरी माना। आप्रवासी कामगारों को लेकर मेजबान देश की प्राथमिक चिंता है ऐसे जरूरी कौशल की कमी जो उन्हें रोजगार दिला सके एवं विदेशी धरती पर आजीविका की क्षमता प्रदान कर सके।

इस उद्देश्य से भारत एवं यूरोपीय संघ ने उन क्षेत्रों में उपयुक्त कौशल विकास करने पर जोर दिया जहां ये कामगार रोजगार को ज्यादा तवज्जों देते हैं।

इस उच्च स्तरीय वार्ता में जिन मसलों पर खास मंथन हुआ उनमें सूचना प्रौद्योगिकी एवं स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र प्रमुखता से शामिल हैं, जहां प्रवासी कामगारों को बड़े पैमाने पर रोजगार दिलाये जा सकते हैं।

इस सुनिश्चित करने के लिए आव्रजन एवं संचरण कानूनी रूप से हो और प्रवासी कामगारों के हितों की सर्वश्रेष्ठ तरीकों से रक्षा हो, दोनों पक्षों ने ऐसी वीजा नीतियों पर काम करने का फैसला लिया जो विदेशी रोजगार सुनिश्चित करने में मददगार हो।

अनियमित आव्रजन से निपटने के लिए भारत एवं यूरोपीय संघ ने फैसला लिया कि उन्हें कामगारों के संचरण के नियमन के लिए साक्ष्य-आधारित शोध संचालित करने की जरूरत है ताकि इस सिलसिले को नियंत्रित किया जा सके। दोनों पक्षों ने प्रशिक्षण के जरिए अपने प्रवासी कार्य बल एवं अपनी संबद्ध सरकारी एजेंसियों की क्षमताओं को बढ़ाने का फैसला लिया।

उन्होंने यूरोस्टैट, जो यूरोपीय संघ के देशों पर सांख्यिक आंकड़ा प्रदान करने वाला महानिदेशालय है, एवं यूरोपीय संघ के दायरे में सीमाओं एवं लोगों की आवाजाही का प्रबंधन करने वाली एजेंसी फ्रांटेक्स जैसी एजेंसियों के आधार पर आंकड़ों के आदान-प्रदान एवं तुलनात्मक अध्ययन का फैसला किया।

सूचना का यह आदान-प्रदान एवं तुलनात्मक अध्ययन बेहतर नीति निर्माण एवं कामगारों के आव्रजन और गतिशीलता के संदर्भ में बेहतर दखल का रास्ता साफ करेगा। दोनों पक्षों ने सूचना के आदान-प्रदान पर जोर दिया। साथ ही अनियमित आप्रवासियों की वापसी और संभावित सहयोग के लिए त्वरित राष्ट्रीयता सत्यापन पर जोर दिया।

दोनों के बीच मंथन के दायरे में आव्रजन एवं विकास का मसला भी प्रमुखता से शामिल था, जिसके तहत दोनों ने विस्तारित आव्रजन प्रोफाइल के तहत अपने ज्ञान आधार को बढ़ाने का भी फैसला लिया। उनका मानना था कि इससे विदेशों से प्रवासी कामगारों की ओर से रेमिटेंस में इजाफा होगा, वहीं वैज्ञानिकों और तकनीशियनों के संचरण के नियमन का रास्ता और प्रशस्त होगा जिससे अभिनवीकरण को प्रेरणा मिलेगी।

चिंता का प्रमुख मसला था भुक्तभोगियों की सुरक्षा और इस मामले में दोनों पक्षों ने

सूचना और जरूरतमंद आप्रवासियों की अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े कार्य व्यवहारों का आदान-प्रदान करने का फैसला किया।

बैठक का निष्कर्ष था, ''ये पहल आव्रजन एवं गतिशीलता पर भारत-यूरोपीय संघ सहयोग के भावी ढांचे की ईंट साबित होगी।''

दोनों पक्षों ने फैसला लिया, ''यह सहयोग अपनी रणनीति में समग्रवादी होना चाहिए, जिसे निकट भविष्य में सशक्त बनाया जाए।''

वार्ता में भारत और यूरोपीय संघ के अधिकारियों ने आव्रजन एवं संचरण पर साझा एजेंडा तय करने का भी फैसला लिया। उन्होंने कहा, ''दोनों पक्षों की ओर से संभाव्यता की गुंजाइश तलाशी जाएगी।''

प्रस्तावित गठजोड़ को आगे बढ़ाने के कदमों एवं रणनीतियों के तौर पर बैठक में

दोनों पक्षों ने स्वीकार किया कि इन चार प्राथमिकता क्षेत्रों में समग्र कदम उठाए जाने की जरूरत है - सुरक्षित एवं कानूनी आव्रजन, अनियमित आव्रजन से मुकाबला, आव्रजन एवं विकास और सूचना एवं सर्वश्रेष्ठ कार्य व्यवहारों से जुड़े अनुभवों का आदान-प्रदान

२ जुलाई को नई दिल्ली में एमओआईए-यूरोपीय संघ वार्ता प्रगति पर।

यह फैसला लिया गया कि २०१३ की प्रथम छमाही में अपनी उच्चस्तरीय वार्ता से पहले ग्लोबल एप्रोच टू माइग्रेशन एंड मोबिलिटी (जीएएमएम) के तहत भारत एवं यूरोपीय संघ के बीच ऐसे सहयोग का फैसला लिया जाएगा।

दोनों पक्षों ने इस उच्च वार्ता के दौरान मंथन का हिस्सा बने इस ढांचे पर अमल की दिशा में उपयुक्त कदम उठाएंगे। इसमें कहा गया, ''इस उद्देश्य से एक संयुक्त भारत-यूरोपीय संघ कार्य समूह गठित किया जाएगा।''

यह उच्च स्तरीय वार्ता मुक्त एवं सहज माहौल, आपसी सहयोग, साझा लाभों एवं चुनौतियों की संवेदना के साथ हुई।

वैश्वीकरण के बल एवं पूंजीवादी विकास की गतिकी भी इस आव्रजन को प्रेरित कर रहे हैं। इसके अलावा जनसांख्यिक बदलाव भी एक वजह है, जहां श्रम संचरण की अंतर्राष्ट्रीयकरण एक आम बात है।

यूं तो कुछ पश्चिमी यूरोपीय देशों में विदेशी कार्य बल में भारतीयों की भागीदारी का आंकड़ा उपलब्ध है, वर्ष २०११ के लिए ऑर्गनाइजेशन फॉर इकोनॉमिक कोऑपरेशन एंड डेवलपमेंट (ओईसीडी) के अनुसार यह आंकड़ा करीब १० प्रतिशत है।

खासकर, आयरलैंड के लिए ओईसीडी का यह आंकड़ा १६ फीसदी एवं लग्जमबर्ग के लिए यह आंकड़ा ४५ फीसदी से ज्यादा है।

ऐसे में आम प्रवासी कामगार सामान्यतया प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करते रहे हैं, अध्ययनों से पता चलता है कि यूरोपीय संघ एवं ओईसीडी देशों में स्थानीय निवासियों की तुलना में उनमें बेरोजगारी दर अधिक है

खाड़ी संपर्क

खाड़ी सहयोग परिषद (जीसीसी) के छह देशों में रह रहे करीब ६० लाख भारतीय कामगार क्षेत्र के विकास में अहम भूमिका निभा रहे हैं एवं यह रिश्ता भविष्य में और प्रगाढ़ होगा, **ज्ञानेंद्र कुमार केशरी** एवं **अरूणिम भुइयां** का आकलन

भारत और खाड़ी देशों के बीच प्राचीन काल से ही रिश्ता रहा है। समय गुजरने के साथ ही यह रिश्ता सशक्त होता गया और इस रिश्ते में कभी कमजोरी के संकेत नहीं मिले। भारत एवं खाड़ी सहयोग परिषद (जीसीसी) के देशों - बहरीन, कुवैत, ओमान, कतर, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात - बीच ये रिश्ते, चाहे राजनयिक हों या आर्थिक या जनता के स्तर पर, आज सशक्त पायदान पर हैं एवं भविष्य में इसमें और मजबूती आएगी, यह राय है प्रवासी भारतीय से बात करने वाले लोगों की।

आज खाड़ी सहयोग परिषद (जीसीसी) के छह देशों में रह रहे करीब ६० लाख भारतीय आबादी है और इसमें से एक बड़ा हिस्सा केरल के मलयालियों का हिस्सा है। प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय एवं विदेश मंत्रालय को उपलब्ध आंकड़ों से इसकी पुष्टि होती है।

भारत और खाड़ी क्षेत्र के बीच वाणिज्यिक संबंध प्राचीन सभ्यताओं के काल से ही रहा है और यह ५,००० वर्ष से भी ज्यादा पुराना है। अरब क्षेत्र के लोग कुशल समुद्री भ्रमणकारी थे और वे सोना, जेड, जड़ी-बूटी जैसे उत्पादों का कारोबार करते थे।

प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह ने भारत एवं जीसीसी के बीच व्यापार एवं आर्थिक संबंध समिति की एक हालिया बैठक को संबोधित करते हुए कहा था, ''दक्षिण-पूर्व एवं दक्षिण एशिया की तरह खाड़ी क्षेत्र भी हमारा सहज आर्थिक सहयोगी है। हमें व्यापक एशियाई भ्रातृत्व के हित में सभी पड़ोसियों के साथ निश्चित तौर पर सशक्त आर्थिक रिश्ता बनाना चाहिए।''

उन्होंने कहा, ''भारत ने दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों के करीब आने के लिए पूरब की ओर देखो नीति पर सफलतापूर्वक अमल किया है। हमें निश्चित तौर पर अपने पश्चिमी पड़ोसियों के नजदीक आना होगा।''

खाड़ी क्षेत्र में रहने वाले प्रवासी भारतीयों के हितों को उच्च प्राथमिकता देने वाले प्रवासी भारतीय कार्य मंत्री वायलार रवि ने खाड़ी देशों के विकास में भारतीयों की भूमिका की सराहना करते हुए कहा कि भारतीयों ने न सिर्फ इनके राष्ट्रनिर्माण में भूमिका निभाई है, बल्कि भारत के विकास, प्रगति और कल्याण में भी उन्होंने रोल अदा किया है। उन्होंने इन देशों से सशक्त संबंध के लिए उनकी यात्रा भी की है।

मंत्री ने प्रवासी भारतीय के साथ बातचीत में कहा, ''खाड़ी देशों के साथ हमारा संबंध दोतरफा रहा है- दोनों ने इससे भारी लाभ हासिल किए हैं। अतीत में वहां केरल या फिर कहीं पूर्ववर्ती त्रावणकोर से, बड़ी संख्या में लोग वहां गए। वहां कामगार एवं डाक्टर, शिक्षक, आईटी विशेषज्ञ और बैंककर्मी आदि जैसे पेशेवर हैं। ये देश इनसे काफी लाभान्वित हुए। यही कारण है कि उनके योगदान को व्यापक पहचान मिली है और उनकी महत्ता बढ़ रही है।''

उन्होंने छह जीसीसी देशों से भारतीय समुदाय द्वारा रेमीटेंस, जो पिछले साल भारत में आए रिकार्ड ६६ अरब डालर रेमीटेंस का एक बड़ा हिस्सा है, भेजे जाने का जिक्र करते

बर दुबई का दुबई क्रीक जो प्रमुख अवरोहण केंद्र व भारतीयों के लिए मौज-मस्ती का अव्वल केंद्र है।

हमारा भारतीय समुदाय खाड़ी देशों में ऐसे रह रहा है, जैसे वह अपनी भूमि पर रहता है। वे वहां के कानून का सम्मान करना जानते हैं। यह वहां के माहौल में उनके ढल जाने की पुष्टि करता है, यह इन देशों के प्रति उनकी महानता का सबूत है... खाड़ी देशों के साथ हमारा रिश्ता दोतरफा है - दोनों इससे लाभान्वित होते रहे हैं।

– श्री वायलार रवि, प्रवासी भारतीय कार्य मंत्री

कुवैत में भारत के राजदूत एच.ई. सतीश सी. मेहता भारतीय दूतावास में भारतीय समुदाय के साथ ६६वां गणतंत्र दिवस मनाते हुए।

६जीसीसी देशों में एनआरआई

सऊदी अरब	यूएई	कुवैत	ओमान	बहरीन	कतर
2,000,000	1,750,000	640,000	700,000	350,000	500,000

हुए कहा, ''अब, बदले में ये भारतीय अपने घर करोड़ों डालर रकम भेज रहे हैं और स्कूल, अस्पताल बना रहे हैं एवं कल्याणकारी कार्य कर रहे हैं।''

मंत्री ने कहा, ''यहीं तक सीमित नहीं है, हमारा भारतीय समुदाय खाड़ी देशों में ऐसे रह रहा है, जैसे वह अपनी भूमि पर रहता है। ये भारतीय कानून का सम्मान करते हैं और उनकी ओर से कोई परेशानी पैदा नहीं होती। यह इन लोगों के वहां के माहौल में ढल जाने की पुष्टि करता है। यह उनकी महानता का सबूत है। जिन देशों में भी वे रहते हैं, वहां वे शांति और कानून की महत्ता जानते हैं। यही कारण है कि उन्हें वहां के समाज ने अपने में बेहतर ढंग से समाहित कर लिया है और उनकी काफी सराहना होती रही है।'' उन्होंने कहा, ''इस क्षेत्र के भारतीय समुदाय का एक और रोचक पहलू यह है कि दूसरी जगहों के उलट यहां रहने वाला तकरीबन हर भारतीय व्यक्ति भारतीय पासपोर्ट से लैस है। वे यह धारणा पुष्ट करते हैं कि उनका भारत के साथ जुड़ाव बरकरार है।'' उन्होंने कहा, ''वे मताधिकार चाहते थे। मैं बेहद खुश हूं कि उन्हें यह अधिकार दिया गया। उनके लिए जन प्रतिनिधित्व कानून में संशोधन किया गया। उनके नाम भारत की मतदाता सूची में है और वे अब वोट कर सकते हैं।'' यह उनके सशक्तिकरण की दिशा में एक बड़ा कदम है।

सिंहावलोकन, आगे की राह

इस क्षेत्र से भारत का रिश्ता दो सहस्राब्दियों से भी ज्यादा पुराना है, जब अरब के समुद्री भ्रमणकारियों ने मानसून हवाओं का रहस्य सुलझाया था और इसका इस्तेमाल व्यापार में किया था।

इस क्षेत्र के बड़े जहाजों का गहरा संबंध पांडव, चोल और चेर साम्राज्यों से था– जो आज के केरल एवं तमिलनाडु हैं। ऐसे रिश्ते ५०० ई.पू. पहले भी मौजूद थे। समय के साथ इनमें सुधार आता गया और दोनों क्षेत्रों का रिश्ता एक-दूसरे के विकास का पूरक बन गया।

अरब के लोग केरल के बेयपोरे में निर्मित नावों पर काफी निर्भर हुआ करते थे और आज भी यहां यह जहाज निर्माण उद्योग मौजूद है, जो १,५०० वर्ष से भी ज्यादा पुराना है। ऐसी नाव, जिन्हें मलयालम में उरूस कहा जाता है, अरबियों को इसलिए पंसद थीं, क्योंकि उन्हें केरल की सांगवान लकड़ी, जिससे यह नाव बनाई जाती थी, काफी पसंद थी। (बॉक्स देखें)।

दोनों क्षेत्रों के बीच आवाजाही से केरल को इस्लाम से परिचित होने का मौका भी मिला।

बेपोर का उरू रिश्ता

कोझीकोड के नजदीक स्थित वेपोर व्यापार बंदरगाह एवं समुद्री केंद है, जो सदियों से अरब, चीनी और यूरोपीय व्यापारियों की गहमागहमी का केंद्र रहा है। यह करीब १५०० वर्ष पुराने नौका निर्माण उद्योग, खासकर धाउ यानी उरू, का केंद्र रहा है। इन जहाजों को स्थानीय भाषा में पैकप्पल यानी सेलिंग शिप भी कहते हैं।

बेपोर पोर्ट केरल से सांगवान का प्रमुख आउटलेट रहा है। कई समुद्री भ्रमणकारी, खासकर अरब देशों के, नौकाओं के निर्माण के लिए केरल के सांगवान को महत्व देते हैं। ऐसे में बेपोर के इर्द-गिर्द एक नौकानिर्माण उद्योग विकसित हो गया है। यह कारोबार प्रथम विश्वयुद्ध तक खूब फला-फूला, इसके बाद अधिक आधुनिक जहाज चलन में ज्यादा आने लगे। वैसे, हालिया समय में लकड़ी के केबिन क्रूजर एवं प्लीजर बोट्स के बढ़ते क्रेज से इस उद्योग में नई ताजगी आई है। आज भी अरब देशों के कई लोग बेपोर के कुछ खास व्यापारियों से ही उरू खरीदना पसंद करते हैं। ये नौकाएं इस मामले में विशिष्ट हैं कि ये पूरी तरह से लकड़ियों बनाई जाती हैं और वह भी हाथों से। यहां तक कि लकड़ी काटने के लिए भी मशीनों का इस्तेमाल नहीं होता है।

उरू बढ़इयों, लुहारों, पेंटरों आदि की ५० से अधिक सदस्यों वाली टीम की मेहनत का सुखद परिणाम होता है। वे तंबुओं में बैठकर इस पर काम करते हैं। यहां तैयार अधिकांश नौकाओं की जीवन अवधि कम से कम ७५ साल होती है और इसे बनाने में छह महीने से दो साल लग सकते हैं।

इस गतिविधि की एक खासियत यह है कि यह कला पीढ़ी दर पीढ़ी अगली संतति को प्राप्त होती रही है। फोरमैन यानी मुख्य कारीगर इसका विशेषज्ञ होता है। मतलब इस कला का विश्वकोश। इसे इसकी सभी बारीकियों की जानकारी होती है।

इन नौकाओं का निर्माण बिना किसी चार्ट या ड्राइंग के किया जाता है। ऐसा कहा जाता है कि एक बार जब बोट बनकर तैयार हो जाता है, फोरमैन अपने हाथों से जलरेखा खींचता है और तब नौका जल में प्रवेश करती है। ऐसे में नौका बिल्कुल संतुलित स्थिति में रहती है।

एक प्राचीन नौका
(फोटो : सौजन्य, इंडिया एंड यूएई : इन सेलेब्रेशन ऑफ ए लिजेंडरी फ्रेंडशिप)

आधुनिक समय में औपनिवेशिक काल में खाड़ी क्षेत्र एवं भारत के बीच सपंर्क का दायरा बढ़ता गया। दरअसल, खाड़ी क्षेत्र में अंग्रेजों के हितों की रक्षा बॉम्बे मेरिन से होती थी। यहां तक कि १८६० से १९६६ तक खाड़ी क्षेत्र की प्रधान मुदा भारतीय मुद्रा हुआ करती थी। उदाहरण के लिए, यूएई की आज की दिरहम मुद्रा से पहले रियाल वहां की मुद्रा हुआ करती थी, जो गल्फ रूपी के बाद प्रचलन में थी और यह एक सशक्त आर्थिक रिश्ते का सबूत है।

खाड़ी स्थित बरजील जियोजित सिक्योरिटीज एलएलसी नामक वित्तीय कंपनी का संचालन करने वाले के. वी. शमसुदीन कहते हैं, ''मुझे याद है कि ५० फिल (१०० फिल एक यूएई रियाल के बराबर होता था) को आठ आना कहा जाता था जैसा कि हम ५० पैसे को आठअन्ना कहा करते थे।'' वे उन भारतीयों में से एक हैं जिन्होंने इस परिवर्तन को देखा है।

प्रवासी बंधु वेलफेयर ट्रस्ट का संचालन करने वाले शम्सुदीन ने कहा कि जब वे

खाड़ी क्षेत्र में आए थे, तो उनकी मुलाकात उन भारतीयों से हुई थी, जो यहां लंबे समय से रह रहे थे। वे कहते हैं, ''मेरी मुलाकात ऐसे भारतीय डाक्टरों से हुई जो यहां १५ वर्षों से भी अधिक समय से रह रहे थे। सिंधी व्यापारी तो वहां ६० से भी ज्यादा वर्षों से रह रहे थे और यह ध्यान देने की बात है कि उन्होंने कड़ी मेहनत से अपनी दुनिया बनाई, जबकि उनके पास एक कौड़ी नहीं थी।''

फिर, १९७० के दशक में खाड़ी क्षेत्र में तेल का बूम आया और बड़े पैमाने पर भारतीयों का आना शुरू हुआ, उनका मकसद था बेहतर मौकों की तलाश। खाड़ी क्षेत्र में प्रवासी भारतीयों के लिए एक लोकप्रिय वेबसाइट संचालित करने वाले रियाद स्थित माविया मेडिकल ग्रुप के मुख्य कार्यकारी सईद जिया उर रहमान कहते हैं, ''जेद्दाह, दम्माम और जुबैल में बड़े पैमाने पर तेलशोधकों के अस्तित्व में आने के बाद १९७० के दशक में बड़े पैमाने पर सऊदी अरब की ओर भारतीयों का पलायन शुरू हुआ।''

दरअसल, भारतीयों के आगमन का यह सिलसिला पूरे क्षेत्र में देखा गया। दुबई में एल्युमीनियम एवं ग्लास क्लैडिंग का कारोबार करने वाले एवं १९७० में केरल के कन्नूर से यूएई आने वाले अकबर अली इसकी पुष्टि करते हुए कहते हैं, ''हर तरह के भारतीय तब यहां आने लगे और इनमें मलयालियों की संख्या अच्छी थी।''

तेल बूम के बाद निर्माण बूम शुरू हुआ। तेल ने जब क्षेत्र का परिदृश्य बदल दिया तो यह सहज था कि खाड़ी देशों में बुनियादी सुविधाओं के विकास के क्षेत्र में बूम आता। १९८० और १९९० के दशकों से यह बदलाव जोर पकड़ा। इससे भारत से ब्लू-कलर कामगारों के आगमन में तेजी आई।

सभी छह जीसीसी देशों में ब्लू-कॉलर भारतीय कामगार दिखाई देने लगे। वैसे, पिछले एक दशक में खाड़ी की ओर भारतीयों के पलायन का स्वरूप फिर बदलने लगा है।

दोहा बैंक ग्रुप के सीईओ आर. सीथारमन ने कहा, ''जीसीसी अर्थव्यवस्थाएं हाइड्रोकार्बन से गैर-हाइड्रोकार्बन की ओर विविधीकरण का प्रयास कर रही हैं। इससे निर्माण, आतिथ्य एवं बैंकिंग क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। पारंपरिक रूप से हाइड्रोकार्बन सेक्टर ने इंजीनियरों और एकाउंटेंटों जैसे कई तकनीकी कर्मियों के लिए संभावनाएं पैदा की हैं। ऐसे उद्योग इन कुशल लोगों के लिए भी संभावना पैदा करते रहेंगे।''

डा. सीथारमन ने कहा, ''ऐसे डाक्टरों, इंजीनियरों, चार्टर्ड एकांउटेंटों, बैंकरों, प्रबंधकों और दूसरे पेशेवरों की संख्या अच्छी

कभी यूएई में कानूनन प्रचलित भारतीय मुद्रा के नमूने एमीरेट्स एनबीडी पर्ल म्युजियम में प्रदर्शित।
(फोटो : सौजन्य, इंडिया एंड यूएई : इन द सेलेब्रेशन ऑफ ए लिजेंडरी फ्रेंडशिप)

है जिन्होंने जीसीसी अर्थव्यवस्थाओं के विकास में बेहतर योगदान दिया और यह सिलसिला जारी रहेगा। दूरसंचार उद्योग भारत में कुशल कामगारों के लिए अवसर प्रदान करता रहेगा।''

स्वास्थ्य क्षेत्र में भी भारी संभावनाएं हैं। सऊदी अरब, जो जीसीसी का सबसे बड़ा देश है, में कई बड़ी स्वास्थ्य परियोजनाएं शुरू हो रही हैं। सभी खाड़ी देशों में भारतीय डाक्टरों एवं नर्सों की भारी मांग है। दरअसल, भारतीय नर्सों को सरकारी एवं गैर-सरकारी दोनों अस्पताओं में शीर्ष प्राथमिकता हासिल है। आज, करीब साठ लाख भारतीय कामगार जीसीसी देशों के विकास में योगदान दे रहे हैं। कॉस्मॉस-आईटीएल ग्रुप, जो क्षेत्र के सर्वाधिक पुराने भारतीय-संचालित समूहों में से एक है, के अध्यक्ष राम बुक्सानी ने कहा, ''भारत और खाड़ी क्षेत्र एक-दूसरे के पूरक हैं। जीसीसी को अपने विकास के लिए भारतीयों की जरूरत है, जबकि भारत ऊर्जा के लिए खाड़ी क्षेत्र पर निर्भर करता है। भारत को प्राप्त होने वाले रेमीटेंस का एक बड़ा हिस्सा जीसीसी देशों से प्राप्त होता है।''

खाड़ी क्षेत्र में भारतीय समुदाय सबसे बड़ा प्रवासी समुदाय है। सबसे समूह सऊदी अरब में है, जो करीब २० लाख है। इसके बाद यूएई में १७.५ लाख, ओमन में ७२०,०००, कुवैत में ६४०,०००, कतर में ५००,००० और बहरीन में ३५०,००० भारतीय हैं।

आज करीब ६० लाख भारतीय कामगार जीसीसी देशों के विकास में अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं

बहरीन

बहरीन इस क्षेत्र का एक छोटा सा देश है, जिसका क्षेत्रफल ७१२ वर्ग किलोमीटर एवं आबादी १२ लाख है। छोटा होने के बावजूद यह भारतीयों के लिए पसंदीदा ठिकाना रहा है। विदेश मंत्रालय के अनुसार कुछ वर्षों में भारतीयों की यहां संख्या बढ़कर करीब ३५०,००० हो गई है। इनमें से करीब २२०,००० केरल से हैं, जबकि आंध्र प्रदेश एवं तमिलनाडु से करीब ४०-४० हजार लोग यहां रहते हैं। शेष ५०,००० महाराष्ट्र, कर्नाटक, पंजाब और दूसरे देशों से हैं। बहरीन से रिश्ते में तब ताजगी आई जब मंत्री वायलार रवि ने १४ से १६ नवंबर, २०११ तक देश की यात्रा की।

कुवैत

कुवैत का क्षेत्रफल करीब १७,८२० वर्ग किलोमीटर है, जबकि वहां की आबादी ३६ लाख है। यहां भारतीयों की तादाद करीब ६४१,००० है, जो दोनों देशों के रिश्ते में महत्वपूर्ण आयाम जोड़ता है। कुवैत में भी भारतीय सबसे बड़ा प्रवासी समुदाय है। विदेश मंत्रालय के अनुसार इस देश से भारत को लगभग ४ अरब डालर का रेमीटेंस प्राप्त होता है, जो बड़ा योगदान है। १९६१ तक भारतीय रुपया कुवैत में कानूनी प्रचलन में था। तेल की खोज होने से पहले कुवैत की अर्थव्यवस्था इसकी बंदरगाह एवं समुद्री गतिविधियों पर केंद्रित थी, जिनमें जहाज निर्माण, मोती की खोज, मत्स्य शिकार और लकड़ी, अनाज, कपड़ा एवं मसालों से खजूर की अदला-बदली के लिए नौका से भारत यात्रा जैसी गतिविधियां शामिल थीं।

ओमान

ओमन का क्षेत्रफल ३०९,५०१ वर्ग किलोमीटर है, वहीं इसकी आबादी २७.७ लाख है। यहां ७१८,००० से अधिक भारतीय रहते हैं, जो देश का सबसे बड़ा प्रवासी समुदाय है। हजारों भारतीय डाक्टर, इंजीनियर, लेक्चरर, नर्स, प्रबंधक यहां काम करते हैं। दरअसल, ओमान ऐसे करीब २,००० भारतीय डाक्टर हैं जो यहां के सरकारी अस्पताओं एवं निजी क्लिनीकों में काम करते हैं। दोनों देशों को रिश्ता सौहार्दपूर्ण रहा है, जिसके पीछे पुराने सामुद्रिक रिश्ते, शाही परिवार के भारत से लगाव और देश निर्माण में भारतीयों की शानदार भूमिका आदि प्रमुख कारण हैं। मंत्री रवि ने इस साल मार्च ६ से ८ तक मस्कट की यात्रा की, वहीं जून २००९ में भी वे वहां के दौरे पर थे।

कतर

कतर अपेक्षाकृत एक छोटा देश है जिसका क्षेत्रफल ११,४३७ वर्ग किलोमीटर एवं आबादी करीब १८.५ लाख है। पर यहां भी भारतीयों की मजबूत उपस्थिति है, जहां करीब ५०,००० भारतीय रहते हैं। वे यहां से भारत को रेमीटेंस के तौर पर १ अरब डॉलर से अधिक की राशि भेजते हैं। कतर भारत के लिए हाइड्रोकार्बन का एक बहुत बड़ा स्रोत है, जिसमें सालाना ७५ लाख टन के द्रवीकृत प्राकृतिक गैस की आपूर्ति का अनुबंध एवं स्पॉट खरीदारी शामिल हैं। कतर को भारत की ओर से किए जाने वाले निर्यात में मशीनरी एवं उपकरण, परिवहन उपकरण, टेक्सटाइल्स, खाद्य उत्पाद, खनिज एवं अयस्क शामिल हैं।

दरअसल, कतर जापान, दक्षिण कोरिया और सिंगापुर के बाद भारत के लिए चौथा सबसे बड़ा निर्यात बाजार है। कतरी आयात के संदर्भ में भारत १०वें नंबर पर है। मंत्री रवि ने कतर की यात्रा १-३ मार्च, २०१२ तक की। इससे पहले वे मार्च २००६ एवं अप्रैल २००७ में कतर की यात्रा पर थे।

सऊदी अरब

इन सबके विपरीत सऊदी अरब क्षेत्र का सबसे बड़ा देश है, जिसका क्षेत्रफल २,२५०,००० वर्ग किलोमीटर एवं आबादी २.८३७ करोड़ है। विदेश मंत्रालय के अनुसार यहां रहने वाले करीब २० लाख भारतीय यहां के सबसे बड़े प्रवासी समुदाय हैं, और उन्हें अपनी विशेषज्ञता, अनुशासन की भावना, कानून के प्रति सम्मान की भावना एवं शांतिवादी स्वभाव के कारण पसंद किया जाता है। देश के विकास में भारतीयों की भूमिका की यहां की सरकार की ओर से प्रशंसा होती रही है। हज द्विपक्षीय रिश्ते का एक महत्वपूर्ण संघटक है, जिसमें हर साल करीब १,७०,००० भारतीय शामिल होते हैं, जो तीसरा सबसे बड़ा जत्था माना जाता है। आर्थिक मोर्चे पर सऊदी अरब भारत का चौथा सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है। द्विपक्षीय कारोबार करीब २५ अरब डालर का है, वहीं यह भारत का सबसे बड़ा कच्चा तेल निर्यातक है। रवि ने सितंबर, २०१० में रियाद की यात्रा की।

संयुक्त अरब अमीरात

सात प्रांतों - अबू धाबी, अजमान, दुबई, फुजैराह, रास अल-खैमाह, शारजाह एवं उम्म अल-कुवैन - का संघ संयुक्त अरब अमीरात ८३,६०० वर्ग किलोमीटर में फैला है और आबादी करीब ८२.६ लाख है। यहां भी करीब १७.५ लाख भारतीय रहते हैं। विदेश मंत्रालय के अनुसार पेशेवर तौर पर प्रशिक्षित व्यक्ति इस समुदाय में २० फीसदी हैं, वहीं २० हाइट कॉलर रोजगारकर्ता एवं शेष ६० फीसदी ब्लू-कॉलर हैं। भारत यूएई का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है, जो भारत के लिए पांचवा सबसे बड़ा तेल स्रोत है। भारत एवं यूएई के बीच लोक संपर्क की व्यापकता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि दोनों देशों के बीच साप्ताहिक ५०० उड़ानें संचालित होती हैं। रवि ने इस साल अप्रैल में यूएई की यात्रा की।

लोग हैं महत्वपूर्ण

भारत के लोग सिर्फ अपनी विशेषज्ञता के कारण ही खाड़ी क्षेत्रों में पसंद नहीं किए जाते, बल्कि उनका शांतिप्रिय, कानून-प्रिय, अनुशासित होना भी महत्वपूर्ण है। बुक्सानी ने कहा, ''भारतीय कामगारों को उच्च प्राथमिकता दी जाती है। वे चुपचाप काम करते हैं और स्थानीय राजनीति से दूर रहते हैं। उनकी क्षमता एवं गुणवत्ता की तारीफ होती रही है।''

पिछले एक दशक में खाड़ी क्षेत्र जाने वाले लोगों की श्रेणी का स्वरूप काफी बदला है। अब बड़े पैमाने पर कुशल और हाइट कॉलर कामगार इस क्षेत्र की ओर रुख कर रहे हैं। दोहा स्थित मॉरीसन मेनन चार्टर्ड एकाउंटेंट्स के चेयरमैन कुरियन कुरियाकोसे ने कहा, ''कई देशों ने ढांचागत विकास के प्रथम चरण को पूरा कर लिया है, जिसमें बड़े पैमाने पर मजदूरों की जरूरत थी। अब वे ज्ञान आधारित उद्योगों पर फोकस कर रहे हैं। इससे खाड़ी क्षेत्र में हाइट कॉलर कामगारों के लिए रोजगार के अवसर बढ़ेंगे।''

कुरियाकोसे ने कहा कि खाड़ी देशों की ओर भारतीय कामगारों के आप्रवासन में एक महत्वपूर्ण बदलाव है भौगोलिक प्रसार। वे कहते हैं, ''अब दक्षिण भारत की तुलना में उत्तर, उत्तर-पूर्व और पश्चिम एशिया से अधिक संख्या में लोग यहां आ रहे हैं।''

उन्होंने कहा, ''ज्ञानी व मेहनती लोगों

(शीर्ष से दायें) मंत्री वायलार रवि गल्फ मेडिकल यूनिवर्सिटी में, २००७ में कुवैत के सामाजिक एवं श्रम मामलों के मंत्री शेख सबाह अल-खालिद अल-हमद अल-सबाह के साथ, बहरीन में एक कार्यक्रम के दौरान एवं रियाद के कार्यवाहक गवर्नर प्रिंस सत्ताम बिन अब्दुलअजीज के साथ। सऊदी अरब में भारत के तत्कालीन राजदूत तालमिज अहमद भी दिखाई दे रहे हैं।

खाड़ी क्षेत्र के सर्वाधिक अमीर भारतीय

मिकी जगतियानी
प्रमुख, लैंडमार्क ग्रुप
संपत्ति : ३.२ अरब डालर

यूसुफली एमए
प्रबंध निदेशक,
ईएमकेई ग्रुप
संपत्ति : १.७५ अरब डालर

बीआर शेट्टी
सीईओ, न्यू मेडिकल
सेंटर (एनएमसी) ग्रुप
संपत्ति : १.७२ अरब डालर

छाबरिया परिवार
पर्टनर्स, जंबो इलेक्ट्रॉनिक्स
संपत्ति : १.३ अरब डालर

पीएनसी मेनन
प्रमुख, सोभा डेवलेपर्स
संपत्ति : १.२ अरब डालर

सनी वर्के
संस्थापक, जेम्स एजुकेशन
संपत्ति : ६५० मि. डालर

राजेन किलाचंद
चेयरमैन, डोडसाल ग्रुप
संपत्ति : ६०० मि. डालर

टोनी जशानमल
कार्यकारी निदेशक,
जशानमल ग्रुप
संपत्ति : ६०० मि. डालर

एलटी पगरानी
चेयरमैन, चोइतराम एंड सन्स
संपत्ति : ८२० मि. डालर

डा. मोहम्मद अली
संस्थापक, गलफार इंजीनियरिंग
एंड कॉंट्रेक्टिंग
संपत्ति : ७२५ मि. डालर

पारस शाहदादपुर
चेयरमैन, निकई ग्रुप
संपत्ति : ६५० मि. डालर

हितेश बोदानी
चेयरमैन, बॉन्ड इनवेस्टमेंट
ग्रुप होल्डिंग्स
संपत्ति : ६३० मि. डालर

योगेश मेहता
एमडी, पेट्रोकेम
मिडिल ईस्ट
संपत्ति : ६२३ मि. डालर

जयंत गनवानी
सीईओ, लाल्स ग्रुप
संपत्ति : ५३० मि. डालर

नीलेश वेद
संस्थापक, अपेरेल ग्रुप
संपत्ति : ४८० मि. डालर

खिमजी परिवार
संस्थापक, खिमजी रामदास
एलएलसी
संपत्ति : ३६० मि. डालर

संतोष जोसेफ
अध्यक्ष, दुबई पर्ल
संपत्ति : ३६० मि. डालर

फैजल कोट्टीकोलॉन
सीईओ, केईएफ होल्डिंग
संपत्ति : ३०० मि. डालर

मोहन वलरानी
उप चेयरमैन, अल शिरावी
ग्रुप ऑफ कंपनीज
संपत्ति : २८५ मि. डालर

सीके मेनन
चेयरमैन, बेहजाद ग्रुप
संपत्ति : २५० मि. डालर

राम बुक्सानी
चेयरमैन, कॉस्मॉस-आईटीएल
ग्रुप
संपत्ति : २३० मि. डालर

जॉय अलुक्कास
एमडी, जॉयअलुक्कास ग्रुप
संपत्ति : २३० मि. डालर

रिजवान साजन
चेयरमैन, डेनुबे बिल्डिंग मे.
टेरियल्स
संपत्ति : २३० मि. डालर

वासु श्रॉफ
चेयरमैन, रीगल ग्रुप
संपत्ति : २२० मि. डालर

आजाद मूपेन
चेयरमैन, डीएम ग्रुप
संपत्ति : २१५ मि. डालर

अजय भाटिया
चेयरमैन, भाटिया ग्रुप
संपत्ति : २०५ मि. डालर

रमेश रामाकृष्णन
चेयरमैन, ट्रांसवर्ल्ड
संपत्ति : २०५ मि. डालर

रमेश चोइथराम जेथवानी
चेयरमैन, जीबी ट्रेडिंग
संपत्ति : १६० मि. डालर

एस. कुमार वाधवान
सीईओ, सामरा ग्रुप
संपत्ति : १८० मि. डालर

माघनमल पंचोलिया
चेयरमैन, अरेबियन ट्रेडिंग एजेंसी
संपत्ति : १७० मि. डालर

स्रोत : इंडियन रिच लिस्ट २०११, www.arabianbusiness.com

यूएई में कभी प्रचलित भारतीय मुद्रा।

और युवाओं का देश होने के कारण भारत ही दुनिया का संभवतः एकमात्र देश है जो खाड़ी देशों को उनके तेज विकास के लिए उपयुक्त मानव संसाधन मुहैया करा सकता है। खाड़ी क्षेत्र चीनी या फिलीपीनो कामगारों की तुलना में भारतीय कामगारों से सांस्कृतिक रूप से अधिक परिचित है।''

आर्थिक रिश्ते में बूम

सशक्त लोक संपर्क, सद्भावपूर्ण राजनीतिक संबंध, भौगोलिक नजदीकी के कारण भारत जीसीसी देशों के लिए जापान के बाद दूसरे सबसे बड़े व्यापारिक भागीदार के तौर पर उभरा है। इन देशों के साथ भारत का व्यापार २००१ के २ फीसदी से बढ़कर २०१० में ११ फीसदी पर पहुंच गया है। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के आंकड़े में यह कहा गया है। भारत-जीसीसी द्विपक्षीय व्यापार २०१०-२०११ में ११६ अरब डालर था। इसमें जीसीसी के लिए भारत की ओर से ४४ अरब डालर का निर्यात भी शामिल है।

भारत अब खाड़ी देशों के लिए शीर्ष निर्यातक है। १५.६ फीसदी के शेयर के साथ जापान जीसीसी उत्पादों का नंबर एक उपभोक्ता बना हुआ है।

आने वाले वर्षों में भारत-जीसीसी व्यापार संबंध और मजबूत होगा, क्योंकि तेल की मांग में तेजी का दौर जारी है। भारत तेल और गैस के लिए इन देशों पर काफी निर्भर करता है। छह जीसीसी देश दुनिया के ४५ फीसदी रिकवर योग्य तेल एवं २० फीसदी गैस संसाधनों पर नियंत्रण रखते हैं। भारत का करीब ४० फीसदी कच्चा तेल आयात जीसीसी देशों से पूरा होता है। खाड़ी देश नगदी से भी संपन्न हैं। यूं तो इसका कोई आधिकारिक रिपोर्ट नहीं है, निजी आकलनों के मुताबिक जीसीसी संप्रभु संपत्ति कोष करीब २ ट्रिलियन डालर का है। भारी हाइड्रोकार्बन निर्यातों के कारण जीसीसी देशों में नगदी का बड़ा भंडार तैयार हो गया है। वर्ष २०११ में इनका संयुक्त व्यापार अधिशेष ५२० अरब डालर का था।

खाड़ी स्थित संप्रभु संपत्ति कोष ने अमेरिका एवं यूरोप में कुछ बड़ा निवेश किया है। वैसे, पश्चिमी देशों में निवेश के निराशाजनक नतीजों ने इन फंडों को अब भारत एवं अन्य एशियाई देशों की ओर रुख करने को प्रेरित किया है। पूरे क्षेत्र में व्यापक उपस्थिति रखने वाली तोशिबा इलेवेटर्स की मध्य-पूर्व इकाई के प्रबंध निदेशक एम.जे. मोहम्मद इकबाल कहते हैं, ''भारत एवं खाड़ी देश पारंपरिक व्यापार भागीदार हैं। बदलते आर्थिक परिदृश्य में यह रिश्ता और मजबूत होगा।''

उन्होंने कहा कि खाड़ी देशों की अर्थव्यवस्थाएं एक-दूसरे की पूरक हैं। भारत को अपनी अर्थव्यवस्था को विस्तारित करने के लिए ऊर्जा की जरूरत है। इसकी पूर्ति ये देश कर सकते हैं। दूसरी ओर जीसीसी देशों को कुशल कामगारों एवं अपनी अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाए रखने के लिए ज्ञान संसाधन की जरूरत है। भारत खाड़ी देशों के लिए सबसे बड़ा मानव संसाधन आपूर्तिकर्ता है और यह स्थिति बनी रहेगी। दोनों पक्ष एक मुक्त व्यापार समझौते पर मंथन कर रहे हैं। पिछले सात सालों से यह जारी है। अगस्त २००४ में एक फ्रेमवर्क एग्रीमेंट पर हस्ताक्षर हुआ, जिसका लक्ष्य था आर्थिक सहयोग बढ़ाना एवं एक मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर करना।

एक बार जब यह अमल में आ जाएगा, यह कई शुल्क एवं गैर-शुल्क अवरोधों को दूर कर दोतरफा व्यापार का रास्ता साफ करेगा।

रेमीटेंस के शीर्ष स्रोत हैं खाड़ी के भारतीय

भारत वैश्विक तौर पर रेमीटेंस प्राप्त करने वाला दुनिया का नंबर एक देश है, खासकर खाड़ी क्षेत्र से। विश्व बैंक के अनुसार २०११ में भारत को आधिकारिक तौर पर ५८ अरब डालर रेमीटेंस प्राप्त हुआ, वहीं चीन ५७ अरब डालर के साथ दूसरे स्थान पर था। ऐसे में जब खाड़ी देशों में करीब ६० लाख भारतीय हैं, यह क्षेत्र भारत के लिए सबसे बड़ा रेमीटेंस स्रोत है। वर्ष २००८ में खाड़ी क्षेत्र ने रेमीटेंस स्रोत के रूप में उत्तरी अमेरिका को अपदस्थ कर नंबर एक स्थान हासिल किया। जीसीसी देशों में काम करने वाले भारतीय भारत को प्राप्त रेमीटेंस में करीब एक तिहाई का योगदान देते हैं।

भारतीय रिजर्व बैंक के अनुसार, खाड़ी क्षेत्र २००६-०७ से २००६-१० के बीच भारत में आने वाले रेमीटेंस के २७

सऊदी अरब में भारत के राजदूत माननीय श्री हामिद अली राव रियाद में भारतीय दूतावास में ध्वजारोहण देखते हुए।

फीसदी भाग का स्रोत था।

२००८-२००६ में वैश्विक आर्थिक मंदी में भी भारत के कुल रेमीटेंस में यह योगदान बढ़कर करीब ३१ फीसदी हो गया। वर्ष २०११-१२ में भारत का व्यापार घाटा बढ़कर १७० अरब डालर हो गया। वैसे, प्रवासियों से प्राप्त रेमीटेंस भारत में विदेशी मुद्रा का बड़ा स्रोत रहा है और भुगतान मसले के संतुलन में इसका बड़ा योगदान है।

मॉरीशस में प्रवासी मिलन

यह द्वीप राष्ट्र अक्टूबर में छठे मिनी प्रवासी भारतीय दिवस का आयोजन करने वाला है

अपनी इंद्रधनुषी पारंपरा एवं प्रभावशाली प्रवासी दुनिया का न्यूयार्क, सिंगापुर, द हेग, डरबन और टोरंटो में प्रदर्शन करने के बाद भारत अब मिनी प्रवासी भारतीय दिवस का आयोजन हिंद महासागर के रत्न मॉरीशस में करने जा रहा है।

मिनी पीबीडी का छठा संस्करण २७-२८ अक्टूबर, २०१२ तक मॉरीशस में होगा। ३१ जुलाई को इसकी घोषणा मॉरीशस सरकार के कला एवं संस्कृति मंत्री श्री मूखेस्वर चूनी ने एक प्रेस कांफ्रेंस में की।

इस पर जोर देते हुए कि मॉरीशस सरकार मिनी पीबीडी के आयोजन में पूरा सहयोग करेगी एवं बढ़-चढ़कर हिस्सा लेगी, चूनी ने कहा कि मोका स्थित महात्मा गांधी इंस्टीट्यूट (एमजीआई) इस सम्मेलन का आयोजन स्थल होगा।

उन्होंने यह भी बताया कि फ्रांस, ग्रेट ब्रिटेन, दक्षिण अफ्रीका, आस्ट्रेलिया आदि देशों के प्रतिनिधियों ने इसमें भागीदारी की योजना की पुष्टि कर दी है।

चूनी ने कहा, ''मिनी प्रवासी भारतीय दिवस में मॉरीशस सरकार की भारी भागीदारी होगी। मॉरीशस अफ्रीकी एवं यूरोपीय बाजारों के लिए हब की भूमिका निभाएगा और इसमें फ्रेंच-भाषी एवं राष्ट्रमंडल देशों की अच्छी भागीदारी रहेगी।''

उन्होंने कहा, ''कई देशों ने इसमें भागीदारी की पुष्टि की है। हमें उम्मीद है कि रियूनियन, हौलैंड, आस्ट्रेलिया, ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस और दक्षिण अफ्रीका से करीब ५० प्रतिनिधि इसमें भाग लेंगे।''

८ अगस्त को पोर्ट लुइस में भारतीय उच्चायोग में मीडिया ब्रीफिंग के दौरान प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय में सचिव श्री परवेज दीवान ने भी इसकी पुष्टि की। यहां की दो दिवसीय यात्रा पर आये दीवान ने मोका स्थित एमजीआई की भी यात्रा की।

सम्मेलन का उद्घाटन कार्यक्रम स्वामी विवेकानंद इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर में होगा।

अपनी यात्रा के दौरान दीवान ने मॉरीशस में भारत के उच्चायुक्त श्री टी.पी सीथाराम से भी मुलाकात की। उन्होंने चूनी एवं गोस्क पदधारी, उप प्रधानमंत्री एवं मिनिस्टर ऑफ पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर, नेशनल डेवलपमेंट यूनिट, लैंड ट्रांसपोर्ट एवं शिपिंग, मॉरीशस सरकार, अनिल कुमार बचू से भी बातचीत की। मॉरीशस से भारत का संपर्क १८२० के दशक तक पुराना है जब भारतीय कामगारों ने गन्ना बागानों ने काम करने के लिए मॉरीशस की ओर रुख किया था। इस बीच प्रवासी भारतीय सुविधा केंद्र (ओआईएफसी) ने प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय (एमओआईए) और मॉरीशस स्थित भारतीय उच्चायोग के साथ मिलकर एक पीबीडी-पूर्व कार्यक्रम के तौर पर २६ अक्टूबर, २०१२ को ओआईएफसी डायस्पोरा मीट का भी आयोजन करेगा। इसका लक्ष्य प्रवासी भारतीयों को भारतीय उद्योग प्रतिनिधियों के साथ मुलाकात का मंच प्रदान करना है।

इस मंच के जरिए ओआईएफसी प्रवासियों के सामने अपनी सेवाओं का प्रदर्शन करेगा ताकि एसोचैम-फिक्की के भारतीय उद्योग प्रतिनिधियों के साथ वे विचार-विमर्श कर सकें।

देसाई को रिपब्लिकन पार्टी में दायित्व

फ्लोरिडा स्थित डा. अक्षय देसाई ने मिट रोमनी के एशियन अमेरिकन पैनल में स्थान हासिल किया

अमेरिकी राष्ट्रपति पद के लिए रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवार मिट रोमनी ने पार्टी के शीर्ष भारतीय-अमेरिकी कोष संग्रहकर्ता डा. अक्षय देसाई को अपनी नवनिर्मित एशियन अमेरिकन एंड पैसिफिक आइलैंडर्स फॉर रोमनी कमेटी में सात राष्ट्रीय सह-अध्यक्षों में से एक नियुक्त किया है।

सेंट पीटर्स, फ्लोरिडा स्थित यूनिवर्सल हेल्थ केयर ग्रुप इंक के सीईओ देसाई एकमात्र दक्षिण एशियाई अमेरिकी हैं, जिन्हें पूर्व श्रममंत्री इलेन एल. चाओ के नेतृत्व वाली समिति के सात सह-अध्यक्षों में से एक नियुक्त किया गया है। जार्ज डब्ल्यू. बुश के कार्यकाल के दौरान ह्वाइट हाउस कमीशन ऑन एशियन अमेरिकन्स एंड पैसिफिक आईलैंडर्स के सदस्य रह चुके देसाई को फरवरी में रिपब्लिकन पार्टी ऑफ फ्लोरिडा की वित्तीय

समिति में भी नियुक्त किया गया। उपरोक्त कमीशन में वे २००५ से २००८ तक रहे, वहीं उन्होंने इसकी स्वास्थ्य समिति का भी नेतृत्व किया। वे नेशनल रिपब्लिकन फाइनेंस कमिटी में भी रह चुके हैं।

देसाई ने एक जातीय प्रकाशन इंडो-वेस्ट से हाल ही में बातचीत करते हुए कहा कि रोमनी 'भारत-अमेरिका भागीदारी और इस रिश्ते को प्रगाढ़ बनाने की जरूरत को पूरी शिद्दत से समझते हैं।''

भारतीय-अमेरिकी समुदाय में फिजिशियनों, होटल एवं मोटल मालिकों और कनविनियंश स्टोर मालिकों के बारे में रोमनी से मशविरा कर चुके देसाई ने कहा कि रोमनी कानूनी आव्रजन के प्रबल समर्थक रहे हैं। देसाई ने वर्ष २००२ में यूनिवर्सल हेल्थ केयर एवं अमेरिकन मैनेज्ड केयर, एलएलसी, दोनों के संस्थापक रह चुके हैं। १९९९ से २००० तक वे नॉर्थसाइड हॉस्पिटल एंड हार्ट क्लिनिक एवं सेंट पीटर्सबर्ग के सेंट पीटर्सबर्ग जेनरल हॉस्पिटल में चीफ ऑफ स्टाफ एवं चेयरमैन रहे हैं।

१९८९ से २००० तक देसाई पेनिनसेल्वानिया में अमेरिकन फेमिली एंड जेरियाट्रिक्स केयर के प्रमुख रहे। उन्हें २००७ में 'एलिस आईलैंड मेडल ऑफ ऑनर' से नवाजा गया। देसाई ने भारत से मेडिकल डिग्री एवं जॉर्ज वाशिंगटन यूनिवर्सिटी से पब्लिक हेल्थ एडमिनिस्ट्रेटिव मेडिसीन में स्नातकोत्तर की डिग्री की।

डा. देसाई फ्लोरिडा स्थित यूनिवर्सल हेल्थ केयर ग्रुप इंक के सीईओ हैं।

प्रेजीडेंट कन्वेंशन में भारतीय-अमेरिकियों को बड़ा दायित्व

अमेरिका में रह रहे भारतीय मूल के ३० लाख लोगों को लुभाने के लिए जब डेमोक्रेटिक एवं रिपब्लिकन दोनों पार्टियां जुटी हैं, दोनों ने अपने प्रेजीडेंट कन्वेंशन में तीन भारतीय-अमेरिकियों को अहम पद दिया है।

एक ओर जहां कैलिफोर्निया की भारतीय-अमेरिकन एटर्नी जनरल कमला हैरिस ने सितंबर में नॉर्थ कैरोलिना के डेमोक्रेटिक नेशनल कन्वेंशन में एक प्रमुख वक्ता की भूमिका हासिल की, वहीं लुइसियाना के गवर्नर बॉबी जिंदल एवं साउथ कैरोलिना की गवर्नर निक्की हैले फ्लोरिडा के तंपा में रिपब्लिकन पार्टी कन्वेंशन में छाये रहे।

ओबामा की दूसरी बार राष्ट्रपति पद के लिए उम्मीदवारी को परिपुष्ट करने वाले नेशनल कन्वेंशन में प्रमुख वक्ताओं में से एक होने के अलावा वे रूल्स कमिटी के सह-अध्यक्ष भी हैं।

मिट रोमनी एवं उप राष्ट्रपति पद के रिपब्लिकन उम्मीदवार

बॉबी जिंदल (बायें) और कमला हैरिस।

पॉल रायन के लिए पूरी ताकत झोंक चुके जिंदल ने सम्मेलन से पहले अपने बयान में कहा, ''मैं अपने देश की भावी चुनौतियों की चर्चा करना चाहता हूं। हम न तो यूरोप के रास्ते पर चलेंगे, न ही सार्वजनिक क्षेत्र पर जोर देते हुए अमेरिकियों को सरकार पर और अधिक आश्रित बनायेंगे। हम रोमनी के पीछे पूरी ताकत झोकेंगे और निजी क्षेत्र को बढ़ावा देते हुए अपने लोगों को काम पर लौटायेंगे।''

जीवनदायी पहल

डा. मुकेश हरियावाला को मधुमेह रोगियों के लिए दिल के इलाज की सस्ती कारगर तकनीकी 'ट्रिपल हार्ट थेरेपी' पर प्रशंसनीय कार्य के लिए 'इंडियाज मोस्ट एडमायर्ड सर्जन २०१२' पुरस्कार मिलेगा

कई पुरस्कार प्राप्त कर चुके प्रख्यात भारतीय-अमेरिकी आर्टिफिशियल हार्ट सर्जन डा. मुकेश हरियावाला शीघ्र ही भारत में एक अनूठी सस्ती इलाज तकनीकी 'ट्रिपल हार्ट थेरेपी' लागू करने वाले हैं, जिससे उन मधुमेह रोगियों को फायदा होगा जो मंहगा बाइपास ऑपरेशन कराने का खर्च वहन नहीं कर पाते।

हार्वर्ड में प्रशिक्षण प्राप्त बोस्टन स्थित सर्जन डा. हरियावाला को 'इंडियाज मोस्ट एडमायर्ड सर्जन २०१२' का पुरस्कार दिया जाएगा। उन्हें यह पुरस्कार एंजियोजेनेसिस यानी जख्म भरने में मददगार नई रक्त वाहिकाओं के विकास की तकनीकी में भारी योगदान देने के लिए दिया जाएगा।

हरियावाला ने आईएएनएस से बातचीत करते हुए कहा, ''मुझे खुशी है कि यह अत्याधुनिक एंजियोजेनेसिस थेरेपी मेरी मातृभूमि एवं शेष दुनिया के उन गरीब मरीजों के लिए मददगार होगी और इस तरह स्वास्थ्य क्षेत्र पर बढ़ते वैश्विक बोझ को कम करने में मदद मिलेगी।'' फार्मालीडर्स पत्रिका के मुख्य संपादक एवं पुरस्कार समिति के चेयरमैन सत्य ब्रह्मा ने आईएएनएस से बातचीत करते हुए कहा, ''हरियावाला एंजियोजेनेसिस पर निर्णायक शोध करने के लिए इस प्रतिष्ठित पुरस्कार से सम्मानित होने वाले प्रथम एनआरआई होंगे। इससे वैश्विक स्तर पर दिल के रोग के इलाज में मदद मिलेगी एवं लाखों लोगों की जान बचेगी।''

बोस्टन के हार्वर्ड में एंजियोजेनेसिस शोध के क्षेत्र में शानदार काम कर चुके हरियावाला ने कहा कि 'ट्रिपल हार्ट थेरेपी' प्रक्रिया के अंतर्गत लेजर स्टिमुलेशन एवं रोगी के खुद के स्टेम सेल्स, जो कि उसकी अस्थि मज्जा से निकाले जाते हैं, का इंजेक्शन देने से दिल की नई रक्त वाहिकाओं में तेज विकास होता है।

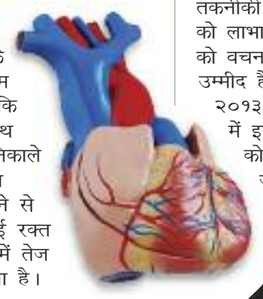

डा. मुकेश हरियावाला ने बोस्टन के हार्वर्ड में एंजियोजेनेसिस शोध के क्षेत्र में शानदार काम किया है।

उन्होंने कहा, ''यह भविष्य में दिल की बीमारी के इलाज में उम्मीद की किरण बनेगी, जिससे लाखों मरीजों की जान बचेगी।'' हरियावाला अगले साल तक भारत में आर्टिफिशियल टाइटेनियम हार्ट यानी वेंट्रिक्यूलर असिस्ट डिवाइस (वीएड) इंप्लांट भी लाना चाहते हैं जो पूरक हार्ट की भूमिका निभाएगा।

हरियावाला, जिन्होंने इस उपकरण के विकास से जुड़े शोध में कोई भूमिका नहीं निभाई है, पर जो भारत में इस तकनीकी से मरीजों को लाभान्वित करने को वचनबद्ध हैं, को उम्मीद है कि २०१३ तक भारत में इसके इस्तेमाल को मंजूरी मिल जाएगी। उन्होंने कहा, ''भारत और यूरोप में वर्तमान में एफडीए अनुमोदित इन उपकरणों की कीमत करीब १००,००० डालर (५५,६५,५००) है, जिनमें सर्जरी का खर्च शामिल नहीं है। भारत के लिए कीमत तय अभी नहीं हुई है, पर इस कीमत के उच्च होने की संभावना है। वैसे, भविष्य में इसे लेकर प्रतियोगिता बढ़ने से इसकी कीमत गिरने की संभावना है, क्योंकि अमेरिका की छह कंपनियां इसका निर्माण करती हैं। भारत में यह स्थायी समाधान के तौर पर पेश किया जाएगा, न कि अनुपूरक प्रत्यारोपित प्रणाली के तौर पर।''

शिशुओं के रक्षक

प्रो. आलोक भार्गवा ने इलेक्ट्रॉनिक वैक्सिनेशन कार्ड के जरिए बाल टीकाकरण की सामयिकता की उपयोगिता पर शोध किया है

भारतीय बच्चों को समय पर टीके दिलाने के उद्देश्य से भारतीय-अमेरिकी इकोनॉमेट्रिशियन प्रो. आलोक भार्गव ने एक ऐसी परियोजना लांच करने की घोषणा की है, जिससे हरियाणा में ०-३ महीना उम्र वर्ग के बच्चों की स्वास्थ्य स्थिति के निर्धारकों की जांच करने में मदद मिलेगी।

हाल ही में हरियाणा के स्वास्थ्य अधिकारियों से मुलाकात के लिए मिलने आये भार्गव ने कहा कि विश्व बैंक से वित्तीय सहायता की मंजूरी के बाद इस परियोजना को लांच किया जाएगा। राजस्थान के अलवर में जन्मे ५८ वर्षीय भार्गव फिलहाल अमेरिका के यूनिवर्सिटी ऑफ मेरीलैंड स्कूल ऑफ पब्लिक पॉलिसी में प्रोफेसर हैं। उन्होंने १९८२ में लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से इकोनॉमिट्रिक्स में पीएच.डी की डिग्री हासिल की।

प्रस्तावित परियोजना में भार्गव कागजी कार्ड की मौजूदा प्रणाली की जगह इलेक्ट्रॉनिक वैक्सिनेशन कार्ड के जरिए बाल टीकाकरण की सामयिकता को बनाए रखने की योजना बनाई है, ताकि इस नये मॉडल को भारत में टीकाकरण के स्तर में सुधार के लिए लागू किया जा सके।

शोध के दौरान, टीकाकरण अभियान को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों (सीएचसी), पब्लिक हेल्थ क्लिनीक्स (पीएचसी) और आंगनवाड़ी केंद्रों के जरिए पूरा किया जाएगा। स्तनपान के स्तर को सुधारने के लिए स्तनपान कराने वाली माताओं को पौष्टिक संपूरक प्रदान किया जाएगा। उन्होंने कहा, ''०-३ महीना उम्र वर्ग के बच्चों तक हर छह महीने में पहुंचा जाएगा और उनके लिए पेपर या इलेक्ट्रॉनिक वैक्सिनेशन कार्ड प्रदान किया जाएगा। वे इसके साथ ही जरूरी टीके दिए जाएंगे।''

उन्होंने बताया कि १८ महीनों की इस परियोजना में छह महीनों के अंतरालों पर १,५०० बच्चों तक पहुंचा जाएगा। इस दौरान बाल मृत्यु, एंथ्रोपोमेट्रिक उपायों एवं परिवारों से जुड़े सामाजिक-आर्थिक चर आंकड़ों पर सूचना रिकार्ड भी किया जाएगा। उन्होंने कहा, ''उभरते अधोमुखी आंकड़ों के अर्थ-मितीय विश्लेषणों से बच्चों के भौतिक विकास और मातृ पोषाहार स्थिति में सुधार की अंतर्दृष्टि हासिल होगी।''

भार्गव के अनुसार समय पर टीकाकरण एवं मातृ स्वास्थ्य में सुधार सहस्राब्दि विकास लक्ष्यों को हासिल करने के लिए महत्वपूर्ण है।

उन्होंने कहा कि एक ओर जहां पोषाहार एवं स्वास्थ्य के स्तर पर बच्चों में सुधार प्रो. आलोक भार्गव के अनुसार समय पर टीकाकरण एवं मातृ स्वास्थ्य में सुधार सहस्राब्दि विकास लक्ष्यों को हासिल करने के लिए महत्वपूर्ण है।

आर्थिक विकास के लिए जरूरी है, बाल टीकाकरण जैसे मूलभूत स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता भारत जैसे विकासशील देशों में अपर्याप्त है

डा. नवीन शाह

अमेरिकी विशेषज्ञता से भारतीय स्वास्थ्य क्षेत्र के कायाकल्प का सपना

एक अग्रणी भारतीय अमेरिकी डाक्टर ने भारतीय स्वास्थ्य क्षेत्र के कायाकल्प के लिए अमेरिकी विशेषज्ञता की मदद से चार प्रमुख परियोजनाओं का प्रस्ताव रखा है। अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ फिजिशियंस ऑफ इंडियन ऑरिजन (एएपीआई) के पूर्व प्रमुख नवीन शाह ने एएपीआई के सहयोग से इन परियोजनाओं पर अमल के लिए भारतीय स्वास्थ्य मंत्री गुलाम नबी आजाद एवं स्वास्थ्य सचिव वी.एम कटोच से वाशिंगटन में बातचीत की। आजाद ने भारत-अमेरिका चिकित्सीय आदान-प्रदान के अंतर्गत डाक्टरों की आवाजाही, संक्रामक रोग स्पेशिलिटी कोर्स एवं भारत में प्रशिक्षण, आपात मेडिकल सेवाएं एवं ट्रॉमा सेंटर्स और भारत में चिकित्सा शिक्षा सुधारने एवं हेल्थ केयर के अमेरिकी छात्र समूहों की भागीदारी के सुझाव पर बेदह साकारात्मक प्रतिक्रिया दी। शाह ने कहा, ''मैं चाहूंगा कि मेरे जैसे प्रथम पीढ़ी के लोग अपने वतन की स्थिति सुधारने में मदद दें। हम भारत में कार्य संस्कृति सुधारना चाहते हैं और दूसरी सुविधाएं उपलब्ध कराना चाहते हैं, ताकि मध्यवर्गीय एवं गरीब वर्गों को लाभ हो सके।''

फिजिशियन एक्सचेंज प्रोग्राम में भारतीय मूल के ६३,००० अमेरिकी डाक्टरों और ७०,००० विशेषज्ञों के परस्पर आदान-प्रदान का निर्णय शामिल है। संक्रामक रोग स्पेशिलिटी ट्रेनिंग को २००८ में भारत सरकार एवं मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया ने अनुमोदित किया था, लेकिन कोर्स अभी तक पूरे नहीं हुए हैं। शाह ने कहा कि अमेरिकी चिकित्सीय समूहों एवं विश्वविद्यालयों के साथ काम करने वाले भारतीय-अमेरिकी चिकित्सकों को भारतीय संक्रामक रोग विशेषज्ञ शिक्षकों के तौर पर अमेरिका में प्रशिक्षण हासिल करने एवं अमेरिकी मॉडल से अवगत होने के लिए वित्तीय सहायता का अनुमोदन हासिल हुआ है। यूएस-इंडिया बिजनेस काउंसिल (यूएसआईबीसी) ने शाह के कार्यक्रमों को समर्थन देने का फैसला किया है, खासकर इंडियन फिजिशियन एक्सचेंज प्रोग्राम को। यह फैसला कोएलिशन फॉर हेल्थ इंडिया इनीशिएटिव के तहत लिया गया है। शाह ने कहा, ''यह कार्यक्रम मेडिकल केयर एवं सेवाओं का स्तर सुधारने में मददगार साबित होगा। इससे ऐसे गरीबों एवं निम्न मध्यवर्गीय वर्गों को मदद मिलेगी, जिन्हें निजी अस्पतालों में मिलने वाली सेवाओं के स्तर की सुविधा नहीं मिलती।''

संगठन इस कार्यक्रम के तहत पहला एक्सचेंज कार्यक्रम २०१३ की प्रथम तिमाही में लांच करने की योजना बना रहा है

क्यूरोसिटी के मंगल मिशन में भारतीय भूमिका

आईआईटी खड़गपुर के छात्र रहे भारतीय मूल के वैज्ञानिक अमिताभ घोष ने मंगल मिशन के लिए नासा के 'क्यूरोसिटी' रोवर की लैंडिंग साइट की पहचान में प्रमुख भूमिका निभाई

जब आप किसी आसन्न अनिश्चितता का इंतजार करते हैं तो एक क्षण भी युग जैसा लगता है। आप अज्ञात भय की चपेट में आ जाते हैं और यह आपके विचार को कुंद कर देता है, लेकिन यह भी सही है कि यह अज्ञात भय आपके दिमाग को अच्छे या बुरे नतीजे के प्रति सतर्क भी रखता है।

ऐसा ही माहौल कैलिफोर्निया, अमेरिका, के नेशनल एयरोनॉटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन (नासा) की जेट प्रोपल्सन लेबोरेटरी, जिसे ६ अगस्त की सुबह मंगल पर उतरने वाले कार के आकार का २००० पौंड वजनी क्योरोसिटी रोवर बनाने का श्रेय जाता है, में भी ऐसा ही शिद्दत भरा माहौल देखा गया। सात मिनटों का वह चरम बेसब्री भरा क्षण - इस रोवर के मंगल के परिवेश में प्रवेश करने से लेकर इसकी जमीं पर उतरने तक का अंतराल - उस वक्त यादगार बन गया जब रोवर सफलतापूर्वक मंगल पर उतरा। इस क्षण का तालियों की गरगराहट के साथ स्वागत हुआ। एक ट्विट में कहा गया, "मैं सफलतापूर्वक मंगल की सतह पर हूं। गेल क्रेटर मैं आप के पास पहुंच गया हूं!!!"

यह मोजेइक इमेज नासा के क्यूरोसिटी रोवर के बायें हिस्से एवं लैंडिंग चरण के दौरान रॉकेट इंजिनों से बने दो ब्लास्ट मार्क को दर्शाता है।

मंगल पर जीवन की तलाश के लिए भेजे गए इस मिशन को अंजाम तक पहुंचाने वाली नासा टीम में जो वैज्ञानिक शामिल रहे, उनमें भारतीय मूल के एक वैज्ञानिक अमिताभ घोष भी शामिल हैं। आईआईटी खड़गपुर के छात्र रहे अमिताभ घोष नासा मार्स एक्सप्लोरेशन रोवर मिशन में साइंस ऑपरेशंस वर्किंग ग्रुप के प्रमुख रहे हैं। उनकी टीम ने गेल क्रेटर नामक उस स्थल की पहचान में खास भूमिका निभाई, जहां मंगल पर इस रोवर को उतरना था। मुंबई स्थित एक अखबार से बातचीत करते हुए अमिताभ ने कहा, "मैं समझता हूं कि क्यूरोसिटी ने रोवर एवं दूसरे रोबोटिक यानों से दूसरे कई ग्रहों के अन्वेषण की प्रभावशाली एवं सस्ती विधियां खोजने की प्रेरणा दी है।" एक टन वजनी एवं छह पहियो वाला यह रोवर अतीत में मंगल ग्रह पर भेजे गए दूसरे सभी रोबोट की तुलना में काफी उन्नत है। पूर्ववर्ती किसी भी रोवर की तुलना में यह करीब दोगुना बड़ा एवं पांच गुना से अधिक वजनी है।

यह १० वैज्ञानिक उपकरणों, जिनमें रोवर के रोबोटिक आर्म द्वारा निकाले गए चट्टानी नमूनों का परीक्षण करने वाले उपकरण भी शामिल हैं, से लैस है।

घोष नासा के १९९७ के मार्स पाथफाइंडर मिशन का हिस्सा भी रह चुके हैं। नासा के ग्रहीय भूगर्भशास्त्री अमिताभ मंगल से उठाए गए पहले नमूने का विश्लेषण किया। साथ ही उन्होंने लैंडिंग साइट की चट्टानों एवं मिट्टी का रसायनिक विश्लेषण भी किया। अपनी शानदार उपलब्धि के लिए उन्होंने नासा मार्स पाथफाइंडर अचीवमेंट अवार्ड पाया। बाद में उन्होंने दो प्रमुख उपकरणों - एपीएक्सएस या अल्फा पार्टिकल एक्स-रे स्पेक्टोमीटर एवं मिनी-टेस या मिनिएचर थर्मल एमिशन स्पेक्ट्रोमीटर, जिन्हें मंगल की चट्टानों के स्वरूप की जांच के लिए मार्स एक्स्प्लोरेशन रोवर स्पिरिट पर लगाया गया, पर शोध कार्य किया।

वैसे, घोष भारतीय मूल के एकमात्र वैज्ञानिक नहीं हैं जो इस मिशन से जुड़े हैं। नासा की एक वरिष्ठ सिस्टम इंजीनियर अनिता सेनगुप्ता ने भी इस रोवर के चर्चित सिस्टम एडीएल - एंट्री, डिसेंट एवं लैंडिंग - की सफलता में अहम रोल निभाया है।

भारतीय मूल के एक और शोधकर्ता अश्विन वासावड़ा भी क्यूरोसिटी के लिए उप परियोजना अधिकारी है।

'हिंदी के पिता' की प्रतिमा लगेगी

पंडित नरदेवजी वेदालंकार को सितंबर में जोहानेसबर्ग में आयोजित वर्ल्ड हिंदी कांफ्रेंस के आयोजन के दौरान भारत सरकार द्वारा खासतौर पर याद किया जाएगा

पंडित नरदेवजी वेदालंकार, जिन्हें दक्षिण अफ्रीका में 'हिंदी का पिता' कहा जाता है, को सितंबर में यहां वर्ल्ड हिंदी कांफ्रेंस के आयोजन के दौरान भारत सरकार द्वारा खासतौर पर याद किया जाएगा।

हिंदी शिक्षा संघ ऑफ दक्षिण अफ्रीका, जो भारत सरकार द्वारा आयोजित सम्मेलन में स्थानीय भागीदार है, के प्रस्ताव को भारतीय उच्चायुक्त विरेंद्र गुप्ता ने सैद्धांतिक रूप से स्वीकार कर लिया है।

सैंडटन कन्वेंशन सेंटर में २२ से २४ सितंबर तक आयोजित नौवें विश्व हिंदी सम्मेलन में उच्चस्तरीय भारतीय एवं दक्षिण अफ्रीकी प्रतिनिधि भाग लेंगे। इसके बाद डरबन में संघ का अपना स्थायी मुख्यालय होगा। यूं तो वेदालंकार गुजराती मूल के थे पर उन्होंने १९४७ में भारत से दक्षिण अफ्रीका आने के बाद हिंदी के प्रचार-प्रसार में महती योगदान दिया।

संघ की गौटेंग ब्रांच के संयुक्त क्षेत्रीय निदेशक हीरालाल सिवनाथ ने कहा, "हिंदी समुदाय की धार्मिक जरूरतों की पूर्ति करने वाले दो राष्ट्रीय संगठनों - आर्य प्रतिनिधि सभा एवं सनातन धर्म सभा - की मदद से २५ अप्रैल, १९४८ को पंडितजी ने हिंदी भाषी लोगों की बैठक बुलाई और इसमें उन्होंने उनकी मातृ भाषा की दशा पर चिंतन करते हुए इस भाषा के संवर्द्धन के संभावित समाधानों पर चर्चा की।"

उन्होंने कहा, "हिंदी शिक्षा संघ इसी बैठक में लांच किया गया और वे इसके प्रथम अध्यक्ष बने। इस पद पर रहते हुए उन्होंने २७ वर्षों तक इस संगठन की सेवा की। उनका योगदान वाकई प्रेरक और उत्कृष्ट है।"

वे १९५१ में वयस्कों एवं बच्चों के लिए सालाना हिंदी इस्टेडफॉड शुरू करने वालों में से एक थे, जो आज तक जारी है और इससे इस भाषा के

प्रसार में काफी योगदान मिला है। संघ ने दक्षिण अफ्रीका में एक मजदूर दंपति की संतान रहे भवानी दयाल संन्यासी को भी सम्मानित करने का फैसला किया है, क्योंकि उन्होंने भारत, दक्षिण अफ्रीका, पूर्वी अफ्रीका और फिजी में भारतीय समुदाय के लिए काम किया है। इस ९वां वर्ल्ड हिंदी कांफ्रेंस २२ से २४ सितंबर तक जोहानेसबर्ग के सैंडटन कन्वेंशन सेंटर में आयोजित किया जाएगा।

सम्मेलन में उनकी आत्मकथा के अंग्रेजी अनुवाद को लांच किया जाएगा।

लॉर्ड खालिद हमीद को ब्रिटिश पुरस्कार

एनआरआई लॉर्ड खालिद हमीद को चिकित्सा के क्षेत्र में शानदार योगदान एवं अंतर-धार्मिक सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए फ्रीडम ऑफ द सिटी ऑफ लंदन अवार्ड से नवाजा गया है। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू को भी यह सम्मान तब दिया गया था जब वे १९५६ में लंदन आये थे। लखनऊ के रहने वाले लॉर्ड हमीद फिलहाल अल्फा हॉस्पिटल ग्रुप के

लॉर्ड खालिद हमीद

चेयरमैन एवं लंदन इंटरनेशनल हॉस्पिटल के मुख्य कार्यकारी अधिकारी हैं। इससे पहले वे लंदन के क्रॉमवेल हॉस्पिटल के मुख्य कार्यकारी निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी रह चुके हैं। वे कॉमनवेल्थ यूथ एक्सचेंज काउंसिल के प्रमुख भी हैं। ब्रिटिश मुस्लिम रिसर्च सेंटर के बोर्ड सदस्य लॉर्ड हमीद कई दातव्य संगठनों की मदद करते हैं और २००५ में उन्हें ईसाई-मुस्लिम-यहूदी रिश्ते को सुधारने में महती योगदान के लिए स्टर्नबर्ग अवार्ड दिया गया। वे २००६-२००७ में ग्रेटर लंदन के प्रथम एशियाई हाई शरीफ बने। उन्हें २००६ में तीसरे सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्म भूषण से नवाजा गया। ऐसा माना जाता है कि पहली बार फ्रीडम ऑफ द सिटी ऑफ लंदन सम्मान १२३७ में दिया गया था। मूलतः यह पुरस्कार एक वर्किंग टाइटिल था, जो प्राप्तकर्ताओं को अपने व्यापार जारी रखने की अनुमति देता था।

बॉम्बे गर्ल

पत्रकार से उपन्यासकार बनी **कविता दसवानी** का उपन्यास नए भारत की एक ऐसी कहानी है जिसके कथ्य के दायरे में कई महादेश हैं

सोहना बादशाह एक ऐसी आजादख्याल संपन्न मुंबइया लड़की (बाम्बे गर्ल) है जो इंटीरियर डिजाइनिंग की पढ़ाई करने के लिए लंदन चली जाती है। वहां वह परिष्कृत बौद्धिकता वाले एक शख्स जगदीश सचदेव से प्यार कर बैठती है। पर दोनों परिवारों के बीच दुश्मनी की पुष्टि के बाद यह स्वप्निल जोड़ी टूट जाती है।

सोहना जब वापस लौटती है तो वह देखती है कि मुंबई नई किस्म की फैशनेबल लड़कियों से पटी हैं, जिनके बाल भुरे रंग में रंगे हैं और जिन्होंने अपनी भौंह भी करीने से कटवा रखी हैं। ऐसी लड़कियों की जमात जो विशिष्ट पहचानों की होड़ में लगी हैं। परिवार में वह अपनी स्थिति को लेकर असुरक्षित महसूस करती है और उत्तराधिकार को लेकर उसका अपने भाई से टकराव शुरू हो जाता है।

जी हां, यह कहानी लॉस-एंजिलिस स्थित पत्रकार-उपन्यासकार कविता दसवानी की पुस्तक 'बॉम्बे गर्ल' (हार्पर कालिन्स इंडिया) की कहानी है, जिसके कथ्य के दायरे में कई महादेश हैं। यह उन नए क्रॉसओवर उपन्यासों में से एक है, जो लिव-इन रिलेशंस एवं दिल टूटने की बढ़ती घटनाओं को बयां करते हैं।

हांग कांग में साउथ चायना मॉर्निंग पोस्ट की फैशन एडिटर रही दसवानी भलेही पुस्तक प्रेमियों के लिए बेहद चर्चित नाम नहीं हैं, लेकिन उन्होंने अपनी पूर्ववर्ती पुस्तकों से पश्चिमी एवं दक्षिण-पूर्व एशिया में स्मार्ट भारतीय हिरोइन को एक बेस्टसेलर जरूर बना दिया है। उनकी ये पूर्ववर्ती किताबें हैं 'फॉर मैट्रिमोनियल पर्पसेज', 'सलाम, पेरिस', 'द विलेज ब्राइड ऑफ बवर्ली हिल्स (एवरीथिंग हैपन्स फॉर ए रिजन), इंडी गर्ल और 'लवटर्न'।

दसवानी प्रवासी भारतीय समुदायों के बारे में लिखती हैं और इसका विश्लेषण करती हैं कि कैसे वे पारंपरिक विवाह संस्थाओं, परिवारों एवं महिला अवसरों के मामलों में फिट बैठते हैं। वे इसमें पूरब एवं पश्चिम के बीच संस्कृतियों के संघर्ष एवं बदलावों को भी दर्ज करती हैं।

मुंबई ही क्यों? दसवानी का कहना है कि उन्होंने इस कहानी की पृष्ठभूमि में मुंबई को इसलिए रखा है, क्योंकि भारत का यह एकमात्र ऐसा शहर है जिससे मैं सबसे ज्यादा वाकिफ हूं और जिससे वे जुड़ाव महसूस करती रही हैं।

हांग कांग में पली-बढ़ी दसवानी ने आईएएनएस से बातचीत करते हुए कहा, ''इस शहर से सबसे पहले मेरा परिचय तब हुआ जब बचपन में एक पारिवारिक शादी के सिलसिले में मुंबई जाना हुआ। इसके बाद बचपन में कई बार यहां आना हुआ।'' उन्होंने १७ साल की उम्र में बतौर पत्रकार काम करना शुरू किया।

उन्होंने कहा, ''मैंने इस पुस्तक पर शोध के लिए मुंबई में कई दिन बिताये। मुझे आस-पास ऐसी कई चीजें दिखाई दीं जो बचपन में नहीं थीं... इनमें से एक थे शॉपिंग मॉल। शहर के बारे में मेरा पहला अंदाजा यह था कि अब वहां लॉस एंजिलिस ऐसा नजारा दिखेगा... फैशनेबल बार हाउस, नए रेस्तरां और महानगरीय नजाकत।''

दसवानी ने अपनी सभी पूर्ववर्ती छह पुस्तकों में विवाह, आव्रजन एवं आजादी की अवधारणा को केंद्र में रखकर भारतीय महिलाओं को जीवन के विभिन्न परिप्रेक्ष्यों में रखकर परखा है।

'फॉर मेट्रीमोनियल पर्सपसेज' की बागी लड़की अंजू विवाह में असफल होने के बाद भारत से अमेरिका भाग जाती है, ताकि वह अपना करियर बना सके एवं असफल लड़की की अपनी पहचान मिटा सके। वहीं, 'सलाम, पेरिस' की महत्वाकांक्षी तान्या शाह अपनी पसंद के एक युवक से शादी करने के लिए अपने ख्वाब के शहर में पहुंच जाती है, पर वह फैशन एवं ग्लैमरभरी जिंदगी जीने की तमन्ना की खातिर उसे ठुकरा देती है। 'द विलेज ब्राइड ऑफ बेवर्ली हिल्स' की प्रिया आज्ञाकारी बहू के अपने फर्ज एवं गुप्त महत्वाकांक्षा के बीच संतुलन साधने की कोशिश करती हैं।

बेस्ट सेलर

कथा साहित्य

1
फिफ्टी शेड्स ऑफ ग्रे
लेखक : ई.एल. जेम्स
प्रकाशक : ऐरो बुक्स
मूल्य : ₹३५०

2
माइकल बेनेट
लेखक : जेम्स पैटरसन
प्रकाशक : सेंचुरी
मूल्य : ₹५६५

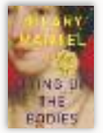

3
ब्रिंग अप द बॉडीज : द टेंटेड ग्रोन
लेखक : हिलेरी मांटेल
प्रकाशक : फोर्थ इस्टेट
मूल्य : ₹३६६

4
नार्कोपोलिस
लेखक : जीत थायिल
प्रकाशक : फैबर एंड फैबर
मूल्य : ₹४६६

5
द केस ऑफ डेडली बटर चिकन
लेखक : ट्रैंक्विन हॉल
प्रकाशक : रैंडम हाउस
मूल्य : ₹४६६

गैर कथा साहित्य

1
टर्निंग प्वाइंट्स
लेखक : ए.पी.जे. अब्दुल कलाम
प्रकाशक : पेंग्विन
मूल्य : ₹१६६

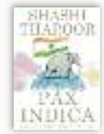

2
पैक्स इंडिका
लेखक : डायना एल. एक
प्रकाशक : हार्मनी बुक्स
मूल्य : ₹५६६

3
इंडिया : ए सेक्रेड जियोग्राफी
लेखक : डायना एल. एक
प्रकाशक : हार्मनी बुक्स
मूल्य : ₹५६६

4
ब्रेकआउट नेशंस
लेखक : रुचिर शर्मा
प्रकाशक : पेंग्विन
मूल्य : ₹५६६

5
पाकिस्तान ऑन द ब्रिंक
लेखक : अहमद राशिद
प्रकाशक : पेंग्विन
मूल्य : ₹४६६

स्रोतः बाहरीसन्स, डेल्ही, कैपिटल बुक डिपो, चंडीगढ़, स्पेल एंड बाउंड बुक्सशॉप एंड कैफे प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली

'विशुद्ध भूमि' की तलाश में

यह संभवतः वस्त्र पर आधारित चीन-भारत राजनय का शुभारंभ है... आर्यों के भारत में प्रवेश से पहले, प्राचीन भारत वर्ष से एक दल ने चीन, जो तब कोसा कारस के नाम से जाना जाता था, की यात्रा की थी और इस यात्रा का उद्देश्य था कपास के बदले सिल्क की अदला-बदली। कनाडा स्थित इतिहासकार, फिल्मनिर्माता एवं लेखक भगवान एस. गिडवानी, जो हाल ही प्रकाशित 'द मार्च ऑफ आर्यनस के लेखक हैं, का यह मानना है। एक प्राचीन संत ऋषि स्कंद ने तिब्बत में सिंधु नदी के उद्गम के पास एक आश्रम की स्थापना की थी, जिसमें कई स्थानीय छात्र पढ़ते थे। गिडवानी ने आईएएनएस से बातचीत करते हुए कहा, ''इनमें से एक छात्र ने इस संत को एक प्रकार का मुलायम एवं चिकना वस्त्र सिल्क प्रदान किया था। संत को बताया गया था कि उत्तर के एक यात्री द्वारा लाया गया यह सिल्क घरेलू कीड़ों द्वारा गढ़े गए कोये से बना है। यह यात्री सिंधु क्षेत्र में तैयार उत्कृष्टत सूती से सिल्क की अदला-बदली कर काफी संतुष्ट और खुश था।''

वे आगे लिखते हैं, ''संत ने राजा कर. कर्ता भरत को यह वस्त्र भेजा, जिन्होंने बुनकर संघ एवं व्यापारी संघ के साथ सिल्क उत्पादन की संभावना पर सिल. सिलेवार मंथन किया।''

व्यापारी संघ ने इस संत की मदद से एक दल को उत्तर की ओर रवाना करने का फैसला किया। यह दल, जिसमें तिब्बत से ५४ स्थानीय व्यक्ति निवासी एवं सिंधु क्षेत्र से छह बुनकर शामिल थे, 'कोसा कारस की धरती' के लिए रवाना हुआ और इसे प्रथम द्विपक्षीय दौरे के तौर पर चिन्हित किया गया। ऐसी दिलचस्प गति. विधियों के अलावा, आर्यों के प्रस्थान का एक बड़ा हिस्सा आर्यों का भारत की ओर भारी पलायन और इस बोध के साथ अपनी धरती पर पुनःवापसी से जुड़ा था कि एशिया एवं यूरोप की कोई भी भूमि भारत की तरह शांत नहीं है। गिडवानी का तर्क है कि आर्यों ने इस देश पर हमला नहीं किया, बल्कि वे धीरे-धीरे देश की पूर्व-वैदिक आध्यात्मिक संस्कृति में घुलमिल गए। लेखक की राय है, ''भारत वर्ष से विदा होने की आर्यों की प्रवृति तब तेज हुई जब उनके आध्यात्मिक गुरू सिंधु पुत्र की हत्या कर दी गई। इससे आर्यों में यह संदेश गया कि यह हत्या बड़े सामंतों ने करवाई।''

सिंधु पुत्र की हत्या के बाद कई बेगुनाह आर्यों की जमीन एवं खेत छीन लिए गए। इस भय पर यह उनका यह विश्वास भारी पड़ा कि इस अनंत आकाश के तले ऐसी कोई विशुद्ध धरती तो जरूर होगी, जहां उनके दिवंगत गुरू (सिंधु पुत्र) अभी भी अमर होंगे।

समय बीतने के साथ ही इन यायावर आर्यों के मन में यह विश्वास जड़ जमा चुका था कि उनकी नई भूमि भारत उस शेष दुनिया से बेहतर है, जहां से वे एक नए घर की तलाश में विदा हुए थे। 'मार्च ऑफ आर्यन्स' इन आर्यों की राजसी गतिविधियों एवं 'दया, दान और धर्म' की अवधारणा के प्रति समर्पण की गहन मीमांसा करती है।

अस्तित्व की कला

आसान अभिव्यक्ति वाले डिजिटल एवं विडियो आर्ट के नए जमाने में वाटरकलर नामक कला रूप अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहा है, यह मानना है **मधुश्री चटर्जी** का

भूरे, धूसर, काले और रोशनाई नीले कोहरे की मोटी चादर में ढंके किसी नदी घाट पर खड़ी शिकार नौका का नजारा किसी भी दर्शक को अंधेरी दृश्यता की बहु-आयामी गहराई तक ले जाता है। बंगाली नदी दृश्यों पर केंद्रित चित्रकार परेश मैती के शुरुआती वाटरकलर चित्र वाकई आंखों के सामने अद्भुत नजारे पेश करते हैं।

लेकिन, आसान अभिव्यक्ति वाले डिजिटल एवं विडियो आर्ट के नए जमाने में वाटरकलर नामक कला रूप अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहा है। स्वतंत्रोत्तर भारत में मैती जैसे वाटरकलर चित्रकारों की जमात छोटी हो गई और उन्होंने दूसरे माध्यमों की ओर खुद को मोड़ दिया।

बंगाल, ओडिसा, आंध्र प्रदेश और राजस्थान कला शैलियों के कलाकारों को इस माध्यम को आगे बढ़ाने में संघर्ष का सामना करना पड़ रहा है, यही हाल शेष देश के दूसरे कलाकारों का है।

कला लेखक, आलोचक, क्यूरेटर और संग्राहक इना पुरी ने आईएएनएस से बातचीत करते हुए कहा, ''ऐसे नए कलाकार जो प्रायोगिक चित्रकारी कर रहे हैं, वे अब वाटरकलर का इस्तेमाल नहीं करते। शांतिनिकेतन में ही कुछ चंद कलाकार इसमें सक्रिय हैं, लेकिन भारत के अधिकांश कलाकारों के लिए यह पसंदीदा माध्यम नहीं रह गया है।''

इसका जिक्र करते हुए कि वाटरकलर को कला दीर्घाओं में भी प्रतिनिधित्व नहीं मिल रहा है, पुरी, जिन्होंने हाल ही में बेसेल आर्ट फेयर में भाग लिया, कहती हैं कि भारत समेत अन्य जगहों पर आयोजित कला महोत्सवों में अधिकांश कला कार्य खूबसूरत विडियो एवं न्यू मीडिया आर्ट का होता है।

यथार्थवादी प्रतिनिधित्व के उपकरण के तौर पर इस माध्यम ने हाल ही में एक असाधारण प्रदर्शनी 'वर्व' में लोगों को ध्यान खूब आकृष्ट किया। राजधानी दिल्ली में आयोजित यह प्रदर्शनी वाटरकलर के माध्यम से जिंदगी एवं भूदृश्यों की अभिव्यक्ति थी।

१८ वाटरकलर कलाकारों की कला कृतियों को प्रदर्शित करने वाली इस प्रदर्शनी ने नए भारत को अभिव्यक्त किया, जहां आधुनिक जिंदगी अभी भी पूरी रहस्यमयता के साथ रहती है। वैसे, इन कलाकारों ने शुरुआती २०वीं सदी की वाटरकलर प्रवृतियों, जो वाश, प्रभाववाद एवं आकृतियों और प्रकृति की झीनी पारदर्शी परछाइयों के साथ अभिव्यक्ति की परंपराओं से लैस है, के साथ इसकी अभिव्यक्ति की। मुंबई स्थित तैल एवं वाटरकलर चित्रकार और जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट के छात्र रहे वासुदेव कामथ ने आईएएनएस से बातचीत करते हुए कहा, ''वाटरकलर गहन अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम रहा है, जिसकी पारदर्शिता एवं आभा वाकई प्रेरक होती है।''

कामथ ने कहा, ''लेकिन यहां आप तैल एवं एक्रिलिक माध्यमों की तरह रंगों के साथ नहीं खेल सकते। इस शैली में जरूरी है कि आपका त्वरित अभिव्यक्ति के माध्यम पर अधिकार हो ताकि आप उस संवेदना को वाटरकलर में व्यक्त कर सकें।''

कामथ ने कहा, ''दिल्ली और शेष उत्तर भारत में युवा कलाकार वाटरकलर में कौशल प्राप्त करने का प्रयास नहीं करते। दरअसल, इसमें काफी मेहनत की जरूरत पड़ती है।''

उन्होंने कहा कि ब्रिटिश उपनिवेशवादियों ने उपनिवेशकाल के भारत को चित्रों में कैद करने के लिए वाटरकलर को बढ़ावा दिया था। इसने अबीनिंद्रनाथ टैगोर, रवींद्रनाथ टैगोर, असित हालदार, एच.एल. मढ़, बिनोद बेहारी मुखर्जी, नंद कात्याल, कृष्णा कुलकर्णी, करुणा सुंदरी चाक, सुनयना देवी और गोपाल घोष जैसे कलाकारों को इसके साथ प्रयोग करने के लिए प्रेरित किया। सावंत ने कहा, ''आज के त्वरित जमाने में वाटरकलर वाकई एक जटिल माध्यम है। कलाकार को लाटट एवं शैडो के कंट्रास्ट को लेकर अग्रिम तैयारी करनी पड़ती है। सिर्फ ऐसे ही चित्रकार जिनका ड्रांइग कान्सेप्ट बेहतर है, इस शैली में पेंटिंग कर सकते हैं।''

अपने वाटरकलर्स के लिए अमेरिका से छह अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार जीत चुका यह कलाकार भारत में इस शैली की उपेक्षा से दुखी है। सावंत कहते हैं, ''यह यूरोप एवं अमेरिका में काफी लोकप्रिय है। अमेरिका में करीब २५० आर्ट सोसायटियां ऐसी हैं जो प्रदर्शनियों एवं सालाना पुरस्कारों की मदद से इस शैली को प्रोमोट करने में लगी हैं।''

कलाकार प्रबल मलिक ने पिछले चार सालों से वाटरकलर पेंटिंग की खातिर दूसरे सभी माध्यमों को छोड़ रखा है और वे कहते हैं कि 'बतौर कलाकार वे पूरे जीवन यह काम करते रहेंगे।'

लैंडस्केप आर्टिस्ट मलिक ने आईएएनएस से बातचीत करते हुए कहा, ''तैल चित्रकारी में किसी सधे हुए पत्रकार की नकल करना तो आसान है, लेकिन वाटरकलर में यही काम करना कठिन है। यह एक आध्यात्मिक और पूर्णतः मौलिक कार्य है, क्योंकि कैनवस पर ऐसी चित्रकारी खुद आपको पूर्णता की ओर ले जाती है।'' उनका कहना है कि नये माध्यमों एवं प्रवृत्तियों के चलन के कारण कलाकार नई कलात्मक शैलियों को आजमाने के लिए प्रेरित हुए हैं।

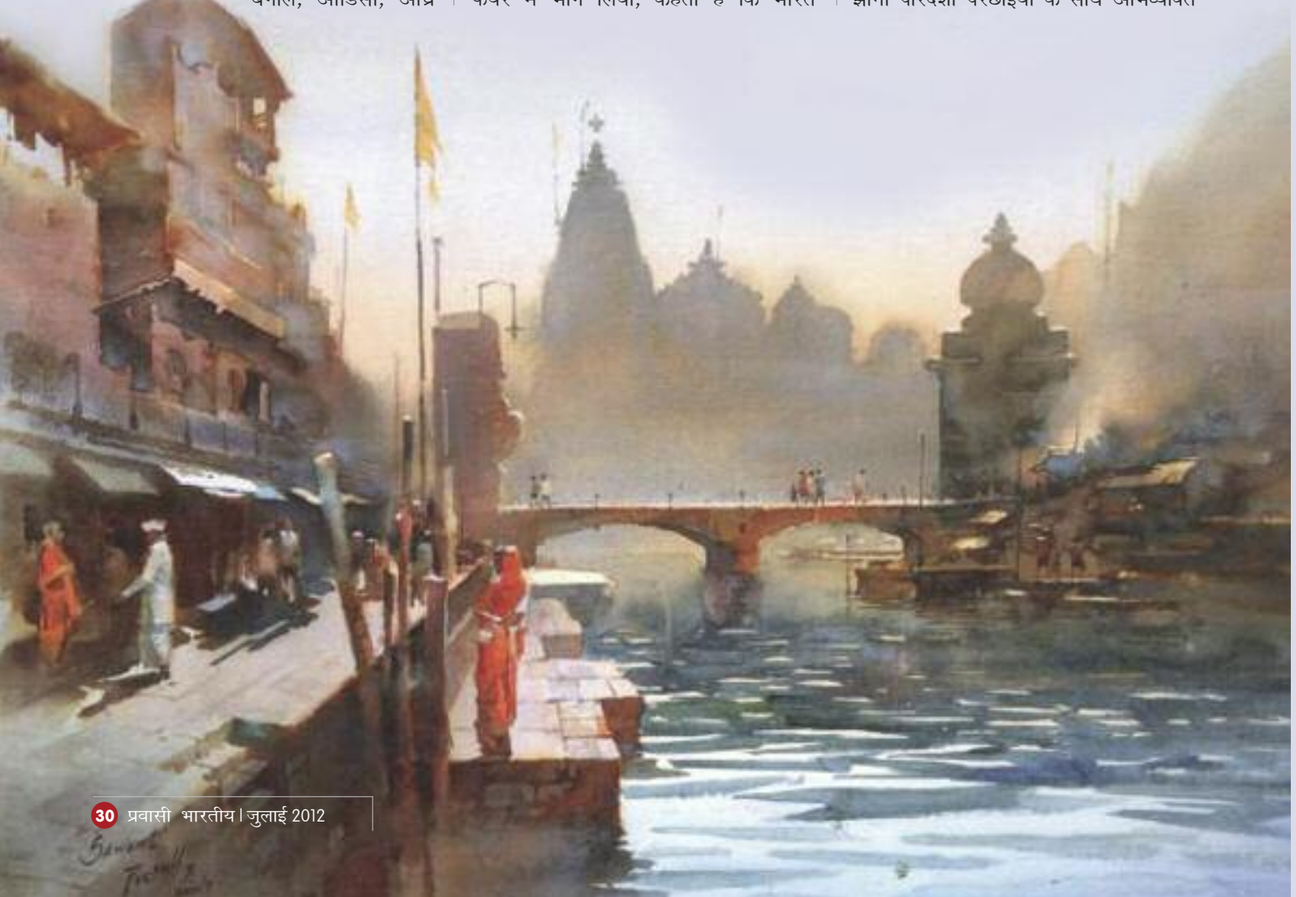

पुणे स्थित कलाकार प्रफुल्ल सावंत द्वारा तैयार गंगा घाट (बायें) एवं ह्वाइट हाउस (दायें)। (ऊपर) प्रबल मलिक की पेंटिंग *लेट्स टॉक*।

> वाटरकलर गहन अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम रहा है, जिसकी पारदर्शिता एवं आभा वाकई प्रेरक होती है। लेकिन यहां आप तैल एवं एक्रिलिक माध्यमों की तरह रंगों के साथ नहीं खेल सकते
>
> **– वासुदेव कामथ**
> वाटरकलरिस्ट

नृत्य में फ्यूजन

शास्त्रीय नृत्य की भंगिमाओं से लैस समकालीन नृत्य भारत में लोकप्रिय होता जा रहा है

प्रदर्शनपरक कलाओं को समर्पित चंद वैश्विक महोत्सवों में से एक एडिनबर्ग इंटरनेशनल फेस्टिवल के हालिया आयोजन में समकालीन भारतीय नृत्य की प्रस्तुति को खूब सराहा गया। कथक कलाकार अदिति मंगलदास के नेतृत्व भारतीय दल ने इस स्कॉटिश शहर में दो प्रस्तुतियां दीं – एक पारंपरिक और दूसरी समकालीन।

मंगलदास ने अपने संस्थान दृष्टिकोण रेपर्टरी के नौ डांसरों के साथ पारंपरिक प्रस्तुति 'अनचार्टर्ड सीज' एवं समकालीन प्रस्तुति 'टाइमलेस' पेश की। १८-१६ अगस्त को इनकी प्रस्तुतियां एडिनबर्ग के रॉयल लिसियम थियेटर में हुईं। ६ अगस्त से शुरू इस महोत्सव का समापन २ सितंबर को हुआ।

पाश्चात्य देशों के विपरीत भारत में समकालीन नृत्य की जड़ें शास्त्रीय हैं। पिछले ६० वर्षों में पारंपरिक नृत्य समकालीन नृत्य के दायरे से भी आगे बढ़ चुका है।

१६५० के दशक में कुछ सधे हुए कलाकारों – जो सभी तब के मजे हुए शास्त्रीय नर्तक थे – ने पारंपरिक नृत्य शैलियों के साथ प्रयोग किया और उन्मुक्त भंगिमाओं एवं मूवमेंट वाली कोरस-टाइप शैलियों का विकास किया। डांसर जयचंद्रन पलाझी ने अपनी पुस्तक 'परफॉर्मिंग आर्ट्स इन इंडिया : डांस एंड थियेटर' में लिखा है कि आजकल, किसी भी कलाकार की सक्रियता बाह्य-संचालित एवं संचरनात्मक रूप से सांस्थानिक होती है।

जयचंद्रन कहते हैं, ''नृत्य के छात्र आजकल विविध इनपुट पर काम करते हैं, जबकि कुछ वर्ष पहले तक यह सब संभव नहीं था। नृत्य के स्थापित रूपों एवं मार्शल आर्ट्स, स्पोर्ट्स, बॉडीकेयर सिस्टम्स आदि जैसी अन्य शारीरिक शैलियों में प्रशिक्षण के लिए बेहद योग्य शिक्षकों एवं संस्थानों की जरूरत पड़ती है। इसमें अपने सहपाठियों के साथ मिलकर अनवरत प्रयोग, विडियो, इंटरनेट की मदद से जानकारी और विरोधाभासी लगने वाली शैलियों आदि से प्रेरणा भी आज नृत्य प्रशिक्षण का हिस्सा हैं।''

कई वर्षों तक विदेशों में शिक्षा हासिल कर चुके जयचंद्रन भारत में समकालीन नृत्य के उदय में आर्थिक उदारीकरण, इंटरनेट की बढ़ती उपयोगिता, आवा-जाही में तेजी और करियर विकल्प के तौर पर उभरती कलाओं के प्रति लोगों के नजरिए में बदलाव प्रमुख कारण है।

विशेषज्ञों का मानना है कि जहां पाश्चात्य देशों में समकालीन नृतक आधुनिक एवं शास्त्रीय बैले नृत्य एवं मार्था ग्राहम जैसे नाम नृत्य सूत्रधारों के प्रयोगों से प्रभावित एवं उत्तर-आधुनिक नृत्य शैलियों से प्रेरणा लेते हैं, वहीं रबींद्रनाथ टैगोर एवं उदय शंकर जैसे भारतीय कला अग्रदूतों ने २० वीं सदी में ही पारंपरिक नृत्य में समकालीन रंग भरना शुरू कर दिया था।

कथक गुरू विक्रम आयंगर के मुताबिक टगौर ने मणिपुरी के लावण्य, भरतनाट्यम की सूक्ष्मता और कथकली के नाट्य तत्व का पुट देकर रबींद्र नृत्य शैली को शांतिनिकेतन में जन्म दिया।

कथक नृत्यांगना शोभना नारायण कहती हैं, ''मैं समझती हूं कि संपूर्ण समकालीन भारतीय नृत्य के पिता उदय शंकर रहे हैं। वे ऐसे शख्स थे जिन्होंने अपने दिल का अनुगमन करते हुए विभिन्न नृत्य शैलियों से प्रेरणा लेकर नृत्य का एक नया मुहावरा गढ़ा। उदय शंकर से पहले टैगोर की शैली भारत में समकालीन नृत्य शैली की पीठिका थी।''

नारायण ने कहा, ''अधिकांश नृतक पारंपरिक शैली में मूल नृत्य प्रशिक्षण से लैस हैं, जिसे बाद में पाश्चात्य शैली के साथ मिलाया जाता है। शास्त्रीय नृत्य की भंगिमाओं से लैस समकालीन नृत्य भारत में लोकप्रिय होता जा रहा है।''

मैं समझती हूं कि संपूर्ण समकालीन भारतीय नृत्य के पिता उदय शंकर रहे हैं। वे ऐसे शख्स थे जिन्होंने अपने दिल का अनुगमन करते हुए विभिन्न नृत्य शैलियों से प्रेरणा लेकर नृत्य का एक नया मुहावरा गढ़ा

जानी-मानी भरतनाट्यम कलाकार प्रतिभा प्रह्लाद कहती हैं, ''समकालीन नृत्य आंदोलन के शीर्ष सूत्रधारों में से एक चंद्रलेखा थीं, जिनकी अनूठी शैली की नकल उनके निधन के बाद भी नहीं हो पाई। चेन्नै की रहने वाली चंद्रलेखा ने सामाजिक चिंताओं एवं स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति के लिए एक तरह की मंदिर नृत्य शैली 'दसी अट्टम को योग एवं कलारीपयट्टू के साथ मिलाकर एक अनूठी शैली विकसित की। वे अपनी ऐसी प्रस्तुति को 'मानव शरीर का उत्सव' कहती थी।''

प्रह्लाद ने आईएएनएस से बातचीत करते हुए कहा, ''अगर आप भारत में समकालीन नृत्य के विकास को गौर से देखें तो अधिकांश कलाकार आपको शास्त्रीय नृत्य के मिलेंगे।''

प्रह्लाद का कहना है कि भारत में समकालीन नृत्य शैलीगत अवधारणा पर केंद्रित है। उन्होंने खुद अपने कंटेंट को भुटाताथाटा के ढांचे में ढाला है। वे कॉल ऑफ फ्लूट में समकालीन भारतीय नृत्य में शहरी-ग्रामीण विभाजन की पृष्ठभूमि में कृष्ण की व्याख्या करती हैं। इसमें कृष्ण बांसुरी, गांव और राधा की दुनिया तक पहुंचना चाहते हैं यानी उन प्रतीकों तक जिन्हें वे पीछे छोड़ आये थे।

मानसिंह ने आईएएनएस से बातचीत करते हुए कहा, ''समकालीन भारतीय नृत्य में तकनीकी पक्ष की महती भूमिका है, वहीं संगीत तबला एवं जाज का मिश्रण है। लेकिन, भाव-भंगिमाओं की प्रेरणा दूसरी भारतीय नृत्य शैलियां ही रही हैं।''

वे आगे कहती हैं, ''मैं पिछले ५० सालों से स्टेज से जुड़ी हूं। मैं हमेशा समकालीन रहीं हूं, क्योंकि मैं समकालीन समय में रह रही हूं।''

कथक डांसर अदिति मंगलदास के डांस ड्रामा *टाइमलेस* का एक दृश्य।

संगीत का मरहम

ग्रैमी पुरस्कार के लिए नामित होने का गौरव प्राप्त कर चुके बौद्ध भिक्षु नवांग केचोग अपनी बांसुरी का इस्तेमाल बौद्ध धर्म, हिंदू धर्म और पाश्चात्य दुनिया के बीच सेतु के रूप में करते हैं। **मधुश्री चटर्जी** की रिपोर्ट...

तिब्बती मूल की एक यायावर जनजाति से रिश्ता रखने वाले नवांग केचोग तभी से बांसुरी बजाते रहे हैं जब उनका परिवार चीनी दमन से बचने के लिए भारत के ओडिसा राज्य में आ बसा।

यू२ जैसे कई नामी बैंड के साथ कार्यक्रम पेश कर चुके एवं वर्ष २००० में ग्रैमी पुरस्कार के लिए नामित हो चुके केचोग उस वक्त सिर्फ ६ वर्ष के थे जब उनका परिवार १९५९ में तिब्बत से भागा। लगभग उसी समय आध्यात्मिक गुरू एवं तिब्बती नेता दलाई लामा भी तिब्बत छोड़कर भारत में आ बसे थे। लेकिन इस बांसुरी वादक की यादें आज भी जीवंत बनी हुई है।

अब अमेरिका के कोलोराडो में रह रहे केचोग ने आईएएनएस से बातचीत करते हुए कहा, ''एक भुमक्कड़ योगी ने हमारे परिवार के लिए बुरे दिन की भविष्य की थी और हमें भारत चले जाने की सलाह दी थी। भारत ने हमारे परिवार को गर्मजोशी अपना लिया।''

उनका कहना है कि वे अपनी बांसुरी का इस्तेमाल बौद्ध धर्म, हिंदू धर्म और पाश्चात्य दुनिया के बीच सेतु के रूप में करते हैं, जो उनके लिए आध्यात्मिक जागरण का प्रतीक है, जिसने उन्हें दलाई लामा के साथ धर्म का अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया। वे पिछले ११ वर्षों से सक्रिय बौद्ध भिक्षु हैं।

हाल ही में वर्ल्ड फ्लूट फेस्टिवल में कार्यक्रम पेश करने आए केचोग बांसुरी से संगीत उपचार की विधि 'बंसी योग' के लिए एक कार्यशाला की रूपरेखा तैयार करने हेतु भारतीय ब्रह्मज्ञानियों के साथ गठजोड़ कर रहे हैं।

केचोग ने कहा, ''मुझे एसवीवाईएएसए यूनिवर्सिटी के विद्वानों के साथ मिलकर बंसी योग सीखाने के लिए अवेकनिंग काइंडनेस टूर एवं कार्यशाला का आयोजन करने को कहा गया।'' अवेकनिंग काइंडनेस मेरे आध्यात्कि दर्शन का सार एवं मेरी पुस्तक का नाम है।

बंसी योग एक तरह का भारतीय योग है और बौद्ध धर्म में दया एवं करुणा ही आध्यात्म है। दोनों मिलकर एक सशक्त उपचारात्मक मिश्रण का निर्माण करते हैं।

वे बांस, लकड़ी और कुछ मामलों में मृत्तिका से निर्मित बांसुरी आदि सहजता से बजा सकते हैं।

इस संगीतकार ने कहा कि बंसी योग – यानी संगीत के साथ आध्यात्मिक प्रशांति – के प्रति उनका झुकाव सहज है। उन्होंने कहा, ''बंसी बजाना मैंने अपने आप सीखा, बिना किसी प्रशिक्षण एवं सूत्र के। इसके साथ ही मैं क्रमशः ज्यादा आध्यात्मिक होने लगा। बौद्ध ध्यान पद्धति ने मुझे प्यार एवं करुणा का वैश्विक संदेश दिया।''

वे बांस, लकड़ी और कुछ मामलों में मृत्तिका से निर्मित बांसुरी, जिसे ओकारिना कहा जाता है और जो बांसुरी की एक प्राचीन श्रेणी है, सहजता से बजा सकते हैं।

अमेरिकी मूल के संगीतकारों के साथ मिलकर एक बांसुरी ऑर्केस्ट्रा एलबम 'इन ए डिस्टेंस प्लेस' के लिए ग्रैमी पुरस्कार से नवाजे गए केचोग पहले से कहीं ज्यादा अब भारत से जुड़े हुए हैं।

उन्होंने आईएएनएस से बातचीत करते हुए कहा, ''मैं अपने पिता के कुछ ऐसे गाने रिकार्ड किए हैं, जो उन्होंने ३० साल पहले गाए थे। वे यायावर गायक हैं। मैंने अपने साउंड इंजीनियर से पिताजी के उन गानों को परिष्कृत करने के लिए कहा जिसे मैंने एक कैसेट में वर्षों पहले रिकार्ड किया था। अपनी यात्राओं के दौरान मैंने महसूस किया कि वे अच्छे गायक रहे हैं।'' उनके पिता ओडिसा के पास बेहरामपुर में एक तिब्बती बस्ती में रहते हैं।

बाद के वर्षों में अमेरिका ने भी उन्हें उभरने का पूरा मौका दिया और वहां उन्हें कई संरक्षक मिले। वे कहते हैं, ''मैंने ब्रैड पिट के साथ उनकी फिल्म 'सेवन ईयर्स इन तिब्बत' में बतौर अभिनेता, सहायक निदेशक एवं संगीतकार काम किया है। हमारे और ब्रैड पिट के बीच वर्षों पुराना बेहतर रिश्ता है।'' उन्होंने 'तिब्बत : बाई द स्नोलाइन' के लिए भी संगीत कंपोज किया है।

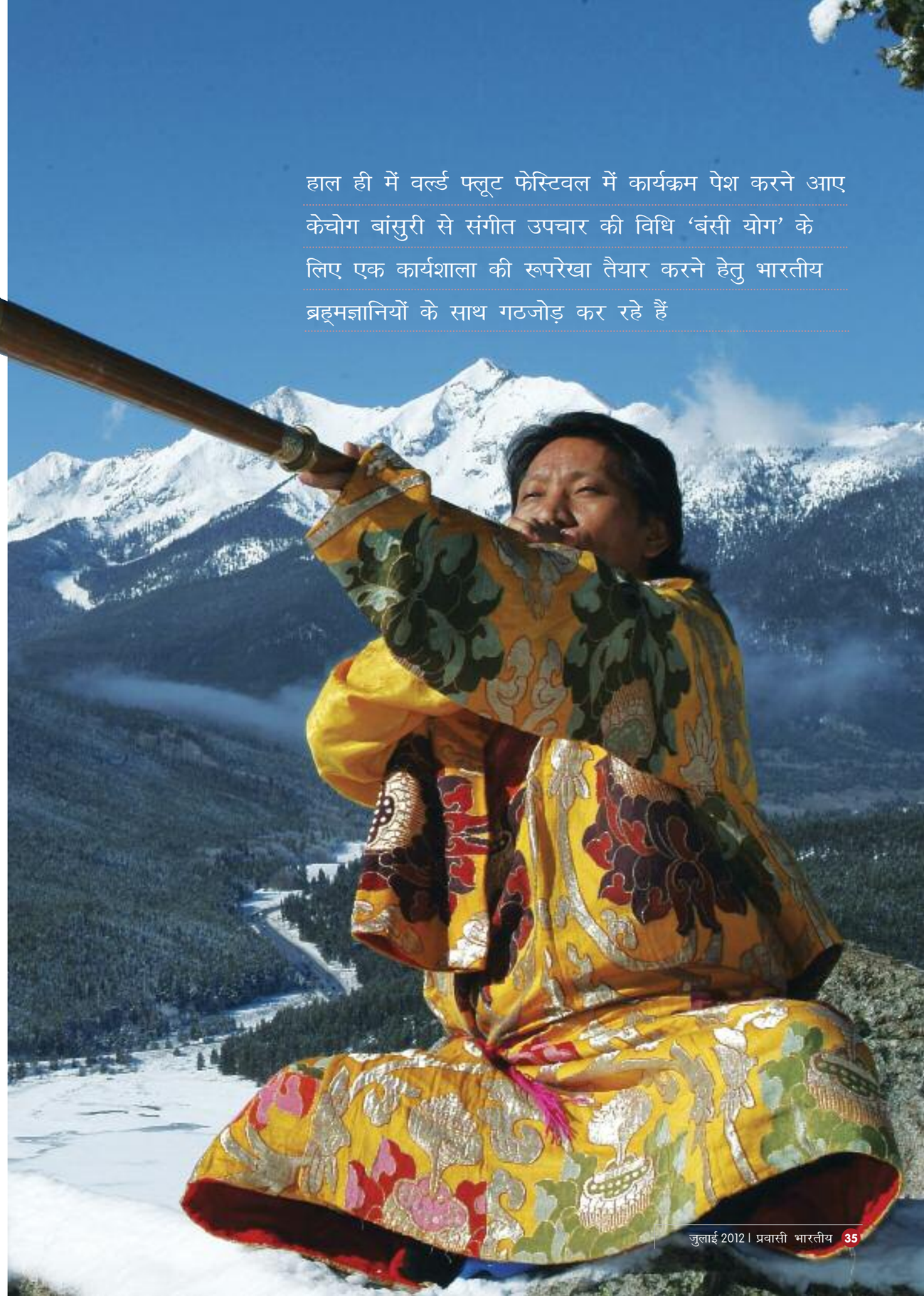

हाल ही में वर्ल्ड फ्लूट फेस्टिवल में कार्यक्रम पेश करने आए केचोग बांसुरी से संगीत उपचार की विधि 'बंसी योग' के लिए एक कार्यशाला की रूपरेखा तैयार करने हेतु भारतीय ब्रह्मज्ञानियों के साथ गठजोड़ कर रहे हैं

फ्रांसीसी विरासत

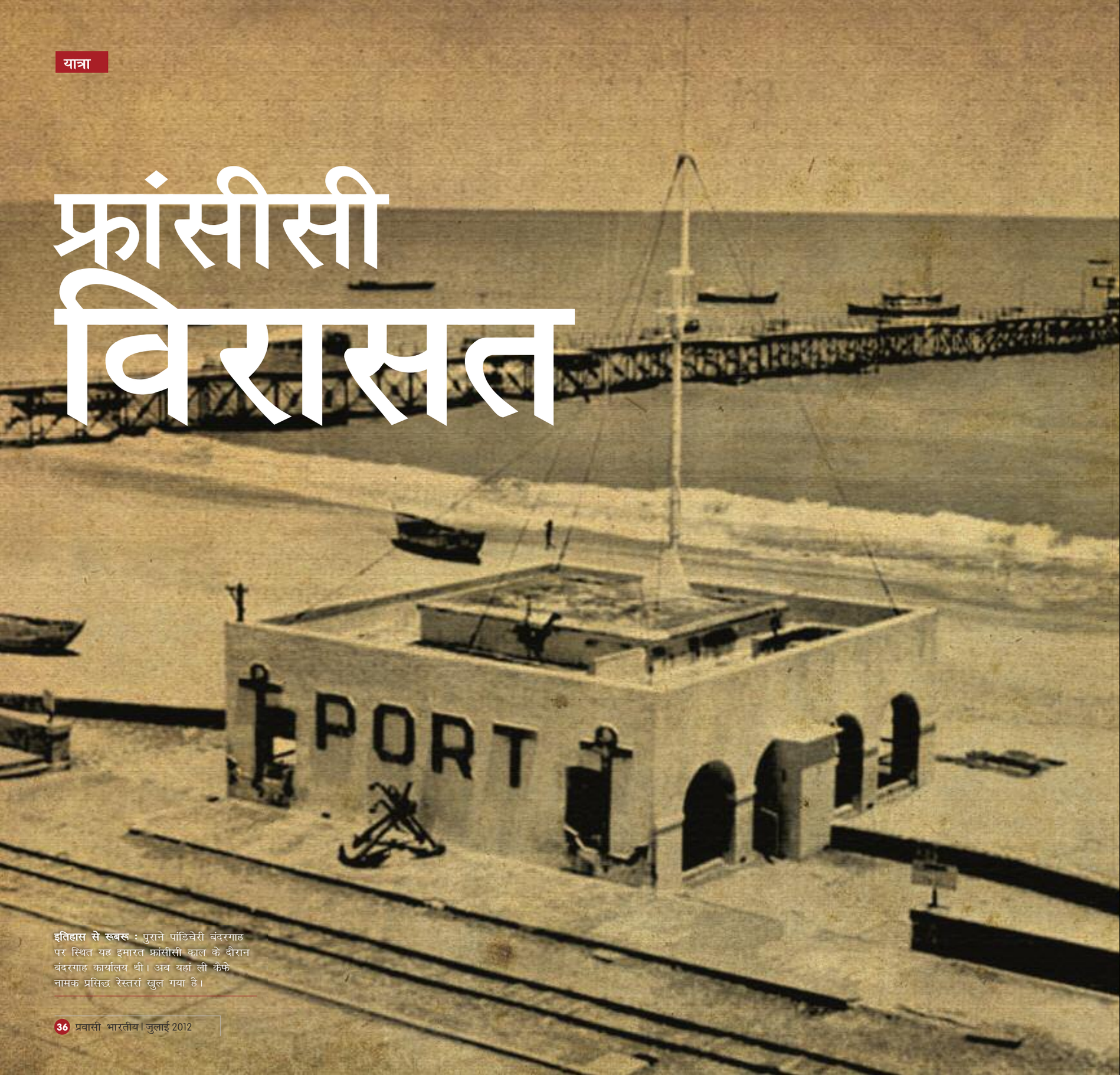

इतिहास से रूबरू : पुराने पांडिचेरी बंदरगाह पर स्थित यह इमारत फ्रांसीसी काल के दौरान बंदरगाह कार्यालय थी। अब यहां ली कैफे नामक प्रसिद्ध रेस्तरां खुल गया है।

ला कंपेग्नी फ्रांकेस डेस इंडेज ओरिएंटल्स। यह शब्द समूह अनजाना सा लग सकता है, पर इसका अर्थ है 'फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी'। भारत में फ्रांसीसियों का प्रवेश मध्य १६वीं सदी में हुआ था, जबकि ब्रिटिश, डच और पुर्तगाली यहां आधी सदी से भी पहले स्थापित हो चुके थे। भारत में अपनी उपस्थिति के चरम के दौरान फ्रेंच इंडिया पांडिचेरी (अब पुड्डुचेरी), कारिकाल, पूर्वी तट पर यानौन और चंदननगर (पहले चंदरनागोर) एवं पश्चिमी तट पर माहे के अलावा छोटी-मोटी बस्तियों से बना था। यूं तो फ्रांसीसियों का भारत में प्रवेश अपेक्षाकृत विलंब से हुआ, पर भारत में उनकी पारी ब्रिटिश उपनिवेशवादियों के चले जाने के बाद भी जारी रही। एक ओर जहां बंगाल में चंदननगर (चंदननागौर) पर से उनका आधिपत्य १९५० में समाप्त हुआ, वहीं पांडिचेरी, माहे, और कारिकाल १९५४ में ही भारत को सौंपे गए। जब उन्होंने अंतिम रूप से भारत छोड़ा, अपने पीछे वे अपनी विरासत छोड़ गए। यह विरासत थी खूबसूरत चर्चों, यूरोपीय शैली की भव्य इमारतों, फ्रांसीसी नाम वाली गलियों और हाल तक फ्रांसीसी पोशाकों में लैस रहने वाले पुलिसकर्मियों की! पीबी आपको उन तीन प्रमुख भारतीय ठिकानों की सैर करा रही है, जो कभी फ्रांसीसियों के गढ़ हुआ करते थे। ये हैं – पुडुचेरी, चंदननगर और माहे। भारतीय शहरी खूबियों के अनुसार ढलने के बावजूद उनकी फ्रांसीसी पहचान बरकरार है।

पुडुचेरी

द्वैत की तलाश

भ्रमण का का उद्देश्य, जैसा कि मेरे एक दोस्त एवं अनुभवी पर्यटक ने कहा था, है नए स्थलों का दर्शन, विभिन्न तरह के व्यंजनों का लुत्फ उठाना एवं तरह-तरह के लोगों से मुलाकात करना। इस नजरिये से देखें तो मेरे इस दोस्त को पुडुचेरी जरूर पसंद आएगा। इस शहर की पहचान दोहरी है - एक पहचान भारतीय और दूसरी पहचान फ्रांसीसी।

१७वीं एवं १८ वीं सदी में जितनी संख्या में यहां भव्य चर्च बने, उसी अनुपात में प्राचीन एवं भव्य मंदिर भी बने। खान-पान के स्तर पर भी यह भव्यता देखने को मिलती है। यह शहर खान-पान के शौकीन लोगों के लिए स्वर्ग है, जहां मौजूद रेस्तरां सर्वश्रेष्ठ फ्रांसीसी एवं कंटीनेंटल फूड परोसते हैं, क्षेत्रीय चेट्टीनाड जायके वाले व्यंजनों का भी जलवा कम नहीं है। यहां के लोगों का व्यवहार काफी मैत्रीवत होता है। सूर्योदय की दिलकश छटा के लिए विख्यात औरोविले एक ऐसा स्थान है, जहां आप हर राष्ट्रीयता वाले लोगों को दोस्ताना माहौल में रहते देख सकते हैं। (और इस सुनियोजित शहर की गलियों से गुजरते वक्त आपकी नजर मार्किस जोसेफ फ्रेंकोइस डपलेक्स, जो १७४२ से १७५४ तक पांडिचेरी के गवर्नर थे, की मूर्ति और इतनी भव्यता वाली गांधी मूर्ति पर पड़ेगी। यह इस शहर की द्वैतता का एक और सबूत है।)

जब आप चेन्नई की तरफ से खूबसूरत ईस्ट कोस्ट रोड से होते हुए पांडिचेरी में प्रवेश करते हैं एवं यहां की विरासत से रूबरू होने के लिए बेसब्र हैं तो आपको स्थानीय निगम कार्यालय में जाने की सलाह दी जाती है। जी हां, मेरा मतलब है पांडिचेरी निगम के मुख्यालय से। समुद्र की ओर मुखातिब गोबर्ट एवेन्यू में यह कार्यालय स्थित, जो खूबसूरत दूधिया रंग में रंगा है। ऐसा लगता

है, मानो इसे किसी भूमध्यसागरीय तट से यहां लाकर स्थापित कर दिया गया हो। पास ही एक फ्रेंच वार मेमोरियल है, जहां प्रथम विश्व युद्ध के दौरान मारे गए सैनिकों को हर साल बास्टिल डे के मौके पर याद किया जाता है। (१४ जुलाई)। पुडुचेरी के फ्रांसीसी अतीत के अन्य आकर्षण हैं १९वीं सदी में बना यहां का लाइट हाउस एवं औपनिवेशिक ढांचा जहां फ्रेंच वाणिज्य दूतावास है और हैरत की बात नहीं है कि यह १५० वर्ग किलोमीटर के दायरे में एकमात्र राजनयिक मिशन है। इत्तफाक से वाणिज्य दूतावास का इस्तेमाल करने वाले अधिकांश फ्रांसीसी पुरुष एवं महिला औरोविले के निवासी हैं, जो श्री अरबिंदो एवं द मदर के अनुयायी होने के नाते हिंदू हैं। हां, निश्चित तौर पर यहां के फ्रेंच प्रवासी समुदाय का बहुसंख्यक हिस्सा हिंदू है। निश्चित तौर पर यहां सादगी भरे चर्च से लेकर भव्य चर्च और दूसरी ऐतिहासिक इमारतें दर्शनीय हैं।

अब खान-पान की बात। सबसे पहले शाकाहारी व्यंजनों की बात। पांडिचेरी में वाकई कुछ बेहतरीन शाकाहारी रेस्तरां हैं, जहां विशुद्ध उम्दा व्यंजनों का लुत्फ उठाया जा सकता है। स्थानीय लोगों से पूछें तो वे आपको सुरगुरू एवं जयाराम रेस्तरां में जाने की सलाह देंगे, जहां विशुद्ध दक्षिण भारतीय भोजन परोसा जाता है। अगर आप उत्तर भारतीय व्यंजनों का लुत्फ उठाना चाहते हैं तो मिशन स्ट्रीट पर बसे पंजाबी ढाबा में जा सकते हैं। यहां आने वाले सैलानियों में से कई यहां के मशहूर डॉन जियोवानी रेस्तरां के कट्टर प्रशंसक हैं, जहां गए बगैर उनकी यात्रा अधूरी मानी जाती है। और इसका केज हो भी क्यों नहीं, क्योंकि यह भारत का सर्वश्रेष्ठ इतालवी रेस्तरां जो है। रांडेबू और सीगल्स जैसे दूसरे रेस्तरां यहां फ्रेंच, कांटीनेंटल एवं सीफूड परोसते हैं।

मांसाहारी व्यंजनों के शौकीन लोगों के लिए अपाची रेस्तरां में कई बेहतरीन व्यंजन पकाए जाते हैं, वहीं रंगापिल्लई स्ट्रीट का एक अपेक्षाकृत कम फैशनेबल रेस्तरां लजीज चेट्टीनाड व्यंजन परोसता है। और जहां यहां के मटन एवं चिकन आइटम खाए बगैर आप वापस लौटना पसंद नहीं करेंगे, वहीं शार्क मिंस नामक व्यंजन का लुत्फ उठाना भी आपकी यात्रा के लिए यादगार होगा। इसे लेकर एकमात्र समस्या यह है कि यह रोजाना की व्यंजन सूची में शामिल नहीं होता। इस यात्रा को अधिक यादगार एवं मजेदार बनाने के लिए आप चाहें तो पांडिचेरी यात्रा की अवधि को एक-दो रोज के लिए आगे खिसका सकते हैं।

-मौसमी मोहंती

यात्रा के गुर

कैसे पहुंचें : सर्वाधिक नजदीकी हवाई अड्डा चेन्नै का है, जो पुडुचेरी से करीब १३५ किलोमीटर दूर है। यूं तो यह इलाका रेलमार्ग से भी जुड़ा है, यहां के लिए रेलयात्रा लोगों में ज्यादा लोकप्रिय नहीं है। सड़क मार्ग से यह सर्वश्रेष्ठ तरीके से जुड़ा है।

वहां क्या देखें : श्री अरबिंदो आश्रम, ऑरोविले, प्रॉमिनेड, चर्च ऑफ ऑवर लेडी ऑफ गुड हेल्थ, चिल्ड्रेन्स पार्क एवं डुप्ले स्टैचू, द मैरी, ले कैफे, गांधी स्टैचू, फ्रेंच वार मेमोरियल, १९वीं सदी का हाइट हाउस, आयी मंडपम, राज निवास, रोम्यां रोल्यां पुस्तकालय, पुडुचेरी संग्रहालय, आरिकमेडु

विश्राम : यहां लग्जरी होटलों, बीच रिसॉर्ट और सस्ता होटलों समेत विभिन्न श्रेणियों होटल हैं।

खान-पान : फ्रेंच एवं यूरोपीय व्यंजनों के लिए ले क्लब, सतसंगा एवं रांडेबू, दक्षिण भारतीय व्यंजनों के लिए सुरगुरु एवं अपाची रेस्तरांओं एवं इतालवी व्यंजनों के लिए डॉन जियोवानी में जायें।

पुडुचेरी के प्रॉमीनेड बीच से महात्मा गांधी की प्रतिमा एवं १९वीं सदी के लाइट हाउस का भव्य नजारा। (ऊपर) फ्रांसीसी युद्ध स्मारक।

चंदननगर

शांति की दुनिया

कोलकाता के उत्तर में स्थित एक छोटा सा है चंदननगर जो समृद्ध फ्रांसीसी विरासत का केंद्र है। गंगानदी के किनारे बसा यह शहर आज भी अपनी विशिष्टता बनाए हुए है। यही विशिष्टता उसे अन्य शहरों अलग करती है। फ्रांसीसी उपनिवेश के तौर पर चंदननगर की स्थापना १६७३ में की गई थी, जब फ्रांसीसियों को बंगाल के नवाब इब्राहिम खान से हुगली नदी के दक्षिणी किनारे पर एक व्यापारिक केंद्र स्थापित करने की अनुमति मिली। समय बदलने के साथ ही चंदननगर वाणिज्य एवं व्यापार की दुनिया में चंदनगर को बंगाल की सभी विदेशी बस्तियों में शीर्ष स्थान हासिल हो गया।

१६४७ में भारत की आजादी के बाद फ्रांसीसी सरकार ने जून १६४८ में एक जनमत संग्रह करवाया, जिनमें ६७ निवासियों ने भारत में विलय की इच्छा जताई। मई, १६५० में फांसीसियों ने भारत सरकार को चंदननगर पर वास्तविक नियंत्रण के लिए आमंत्रित किया और इसका भारत में २ फरवरी, १६५१ को औपचारिक तौर पर विलय हो गया। २ अक्टूबर, १६५५ को चंदननगर का विलय पश्चिम बंगाल में हो गया और यह पूरी तरह से भारत का हिस्सा हो गया।

यह पूर्व फ्रांसीसी उपनिवेश कई खूबसूरत चर्चों, कन्वेंट और औपनिवेशिक अतीत की कई दूसरी पहचानों से लैस है। अगर आप यहां की नीरव शांति में डूबना चाहते हैं, नदी किनारे (स्ट्रैंड) की सैर करें। चंदननगर म्युजियम एवं इंस्टीट्यूट (इंस्टीट्यूट डे चंदन. नगर) फ्रेंच काल का एक अवशेष है और

यात्रा के गुर

वहां कैसे पहुंचे : चंदननगर जी.टी रोड या डेल्ही रोड के जरिए कोलकाता से ३७ किलोमीटर दूर है। सर्वाधिक नजदीकी हवाई अड्डा है कोलकाता है। हावड़ा से चंदननगर के लिए अक्सर स्थानीय ट्रेन जाती हैं।

क्या देखें : इंस्टीट्यूट डे चंदननागोर, नदी घाट, सेक्रेड हार्ट चर्च, नंदुलाल मंदिर, अंडर ग्राउंड हाउस (पाताल-बारी)

विश्राम : चंदननगर नगर निगम द्वारा संचालित रबींद्र भवन गेस्ट हाउस।

खान-पान : सूर्य कुमार मोदक एंड ब्रैंडसन्स में प्रसिद्ध जोलभोरा संदेश एवं रोसोई एंड शालीमार में कई व्यंजनों का लुत्फ उठायें।

(शीर्ष) सेक्रेड हार्ट चर्च हॉफ चंदननगर फ्रांसीसी वास्तु सौंदर्य का केंद्र है, वहीं चंदननगर म्युजियम एंड इंस्टीट्यूट कई फ्रांसीसी धरोहरों से लैस है।

यहां ऐसी दुर्लभ फ्रांसीसी धरोहरों (एंगलो-फ्रेंच युद्ध में इस्तेमाल तोपों, १८वीं सदी की लकड़ी की कुर्सियां आदि) को देखा जा सकता है, जो कहीं और उपलब्ध नहीं। यहां आज भी फ्रांसीसी भाषा की नियमित पढ़ाई होती है।

सैलानियों एवं इतिहासकारों दोनों के लिए एक बेहतरीन जगह है सेक्रेड हार्ट चर्च, जो फ्रांसीसी काल के वास्तु सौंदर्य की निशानी है। यहां के अंडर ग्राउंड हाउस (पाताल-बारी) का दर्शन कर आप उस जमाने के वास्तुशिल्प और तब के लोगों के सौंदर्यबोध की तारीफ किए बगैर नहीं रहेंगे।

माहे

अरब सागर की भृकुटी

किसी भी अनुभवी सैलानी को अघा देने की क्षमता रखने वाला माहे कालीकट के नजदीक पश्चिमी केरल तट पर स्थित पांडिचेरी का एक हिस्सा है। यह छोटा शहर कभी फ्रांसीसी बस्ती हुआ करता था और आज भी अपनी इस विरासत को वह जिंदा रखे हुए है। यह द्वीप अपने विशाल पहाड़ों और अधिकतम ६०५ मीटर की ऊंचाई तक सघन हरियाली का केंद्र है।

माहे २३३ से अधिक वर्षों तक फ्रांसीसी शासन के तले रहा। फ्रांसीसियों ने १७२१ से माहे पर शासन शुरू किया। माहे का मूल नाम मय्याझी जिसका मतलब है ब्लैक रीवर माउथ। फ्रांसीसी कोमोडोर डे पाराडैलन, जिन्होंने वाझूनगर से माहे को छीना, इसका नाम बदलकर माहे कर दिया। यह नामकरण फ्रांसीसी नौसेना के कप्तान माहे डे लेबरडोनैस के सम्मान में किया गया, जिन्होंने तब इस फतह को अपनी चतुराई एवं उद्यमिता से सफल बना दिया था।

जब भारत ने १५ अगस्त, १९४७ को ब्रिटिश शासन से आजादी पाई, तो माहे में भी इसी तरह का स्वतंत्रता संघर्ष शुरू हुआ। अंततः १.११.१९५४ को माहे को भारत सरकार को सौंप दिया गया, पर यह कानूनी प्रक्रिया १६ अगस्त, १९६२ को पूरी हुई।

अरब सागर की भौंह के रूप में विख्यात माह आज भी फ्रांसीसी वास्तुकला एवं भाषा की विरासत को अभी भी अक्षुण्ण बनाए रखे हुए है। इसकी विशिष्टता ही सैलानियों को यहां आने के लिए आकर्षित करती है। माहे का सौंदर्य देश-दुनिया में विख्यात है और यहां की सुकूनदायी शांति सैलानियों को गहमागहमी की दुनिया से दूर ले जाकर मानसिक ताजगी प्रदान करती है।

इस छोटे से खूबसूरत द्वीप का हर कोना अपनी अद्भुत कहानी बयां करता है, जिसे महसूस और देखकर सैलानियों की आंखें फटी रह जाती हैं। फ्रांसीसी क्रांति के गौरवपूर्ण प्रतीकों में से एक मेरियन की मूर्ति यहां देखी जा सकती है।

फ्रांसीसियों ने फ्रेंच रेव्योलूशन के १००वें वर्ष के मौके पर यहां के टैगोर पार्क में मेरियन की मूर्ति स्थापित की थी, जो कि एक काल्पिनिक पात्र है।

यहां गवर्नमेंट हाउस के पीछे मिनी फारेस्ट से गुजरते हुए आप ऐसे स्थलों से रूबरू होंगे जो माहे के सर्वाधिक खूबसूरत नजारों में शामिल हैं।

अरब सागर, सुनहरे रेत से युक्त समुद्र तट, हरा-भरा मय्याझी पूझा, नारियल के बाग, खूबसूरत धर्मडैम आइलैंड सभी यहां से देखे जा सकते हैं। पास के माहे बोट हाउस में नौकायन करना नहीं भूलें।

यहां का सेंट थेरेसा चर्च देखना न भूलें, क्योंकि यह मालाबार क्षेत्र का सर्वाधिक प्रसिद्ध चर्च है, जो आज भी फ्रांसीसी शासन की विरासत के तौर पर यहां खड़ा है

(ऊपर) सेंट थेरेसा चर्च, (दायें) माहे का प्रसिद्ध गवर्नमेंट हाउस, (नीचे) टैगोर पार्क, माहे, में मेरियन की मूर्ति।

यात्रा के गुर

कैसे पहुचें : यहां का सर्वाधिक नजदीकी हवाई अड्डा केरल का कोझीकोड हवाई अड्डा है जो महज ८५ किलोमीटर दूर है। केरल एवं कर्नाटक से भी रेल से माहे आसानी से पहुंचा जा सकता है, क्योंकि सर्वाधिक नजदीकी रेलवे स्टेशन खुद माहे में है। यह शहर रोड से भी सहज रूप से जुड़ा है।

क्या देखें : मेरियन की मूर्ति, अझीमूखम - मय्याझी नदी एवं अरब सागर का मुहाना, सेंट थेरेसा चर्च, पुथलम मंदिर, मांजाकल का बोट हाउस, ओथेनान का किला एवं सेंट जॉर्ज फोर्ट, गवर्नमेंट हाउस।

विश्राम : माहे में ठहरने के कई विकल्प हैं।

भोजन : मालाबार फिश करी, करीमीन पॉलीचाथू, कोंचू करी एवं अप्पम के साथ कुट्टनाड डक करी।

नींद को थाल का आमंत्रण

जाने-माने शेफ गुरपरीत बैन्स का दावा है कि उनकी 'लैम मसाला' करी नींद की गोली की तरह ही काम करती है और इसे खाने वाला व्यक्ति सुकूनदायी नींद का लुत्फ उठाता है

आपको नींद नहीं आती? इसका समाधान रेड हॉट लैम करी हो सकती है! भारतीय मूल के सेलेब्रिटी शेफ एवं टीवी प्रस्तोता गुरपरीत बैन्स ने एक खास तरह की लैम मसाला करी की विकसित की है, जिसके बारे में उनका दावा है कि यह गोली की तरह ही काम करती है और इसे खाने वाला व्यक्ति सुकूनदायी नींद का लुत्फ उठाता है।

इस मसालेदार व्यंजन में बड़ी मात्रा में जायफल होता है, जिसमें मिरिस्टिसिन नामक एक ऐसा तेल होता है, जो व्यक्ति पर मादक असर छोड़ता है।

इस शेफ के हालिया कुक बुक 'इंडियन सुपरस्पाइसेज' में इस व्यंजन की चर्चा है। यह पुस्तक ऐसे व्यंजनों के बारे में ज्ञान संग्रह है जो रोजाना की बीमारियों से लड़ने में मददगार है।

लंदन स्थित इस शेफ, जिन्हें 'एशियन अलकेमिस्ट' के रूप में भी जाना जाता है, का दावा है कि वे पारंपरिक भारतीय व्यंजनों को रोगों से लड़ने वाले मिश्रणों के रूप में तब्दील कर सकते हैं।

वे कहते हैं कि लैम मसाला करी की ईजाद उन लोगों को ध्यान में रखकर किया गया है जो अनिंद्रा के शिकार हैं। बैन्स को यह कहते हुए उद्धृत कहा गया है, ''इसके घटकों का इस्तेमाल सदियों से शमक एवं मादक तत्वों के तौर पर किया जाता रहा है।''

वैसे, विशेषज्ञों का मानना है कि व्यक्ति को रोजाना आधा से ज्यादा जायफल नहीं खाना चाहिए। इस भारतीय शेफ का भी मानना है कि रोजाना उनकी करी का एक हिस्सा से ज्यादा नहीं खाया जाना चाहिए।

बैन्स २००६ में उस वक्त प्रसिद्ध हो गए, जब उन्होंने दुनिया का सबसे स्वास्थ्यवर्द्धक व्यंजन विकसित किया जो कैंसररोधी है। उन्हें एक 'हैंगओवर बस्टिंग कॉकटेल' एवं सर्दी दूर करने वाला डिश विकसित करने का भी श्रेय जाता है

घर में बनायें 'इनसोम्निया-नो-मोर' लैम करी

संघटक :

- जैतून का तेल
- २० ग्राम बारीक इलायची
- ६ लहसुन दाने, जो बारीक कटे हों
- ४ चम्मच ताजा कटा हुआ अदरख
- १ चम्मच हल्दी
- १ १/२ चम्मच मिर्च पाउडर
- १ चम्मच पिसा हुआ जायफल
- जरूरत भर नमक
- ४ कटे हुए प्याज
- दो चम्मच बारीक टमाटर
- ५०० ग्राम लीन लैम (लेग), इसे काट लें
- २ चम्मच गरम मसाला
- २५ ग्राम कटा हुआ धनिया पत्ता

विधि :

१.एक गहरे सॉसपेन में थोड़ा जैतून का तेल डालें, फिर इलायची दाना डालें एवं मध्यिम आंच पर तब तक इसे पकायें जब तक इससे महक न निकलने लगे। इसमें २-३ मिनट से ज्यादा नहीं लगना चाहिए। आंच पर से पैन को हटा लें और तेल को गर्म होने दें।

२.एक बार जब तेल एवं मसाले का मिश्रण पक जाये तो इसमें अदरख, लहसुन डालें और इसे तब तक कम-मध्यिम आंच पर पकायें जब तक लहसुन पककर लाल न हो जाए। इसे बीच-बीच में हिलाते रहें। इसमें दो-तीन मिनट से ज्यादा नहीं लगना चाहिए।

३.इसमें हल्दी, मिर्च, जायफल एवं नमक मिलायें और ठीक से मिलाकर करीब २० सेकंडों के लिए पकायें।

४.पैन में प्याज, टमाटर और लैम डालें और अच्छी तरह मिलाकर इसे तब तक पकायें भुने जब तक यह चिपकने नहीं लगे। इसमें १० मिनट लगता है।

५.इसमें इतना पानी डालें कि लैम डूब जाए और फिर इसे उबालें। फिर इसे मध्यिम आंच पर बिना ढके आधे घंटे तक पकायें। अगर यह ठीक से नहीं पके तो ज्यादा समय तक भी पकाया जा सकता है। इस प्रक्रिया में झोल गाढ़ा हो जाना चाहिए।

६.इसमें गरम मसाला एवं कटा हुआ धनिया डालें। इसके बाद इसे मनचाहा तरीके से परोसें।

अलौकिक स्वाद

पूर्वोत्तर की खान-पान दुनिया हमेशा से संतुलित रही है, जिसमें मसालेदार एवं सादा दोनों तरह के व्यंजनों को अपनी-अपनी महत्ता हासिल है, असमी शेफ **अतुल लहकार** का एक आकलन

पूर्वोत्तर भारत की खान-पान दुनिया का कैनवस उतना ही विशाल और विविधतामय है, जितना कि नीली पहाड़ियों एवं हरी-भरी घाटियों की इस दिलकश धरती के लोगों की विविधतामय जीवनशैली। एक ओर जहां यहां के हर जातीय समुदाय के अपने विशिष्ट व्यंजन हैं, वहीं ऐसे व्यंजन की निर्माण प्रक्रिया भी शायद ही मेल खाती है। वैसे, जहां तक खान-पान संस्कृति की बात है तो पूर्वोत्तर भारत के राज्य शेष भारतीय राज्यों से इस मामले में जुदा हैं।

देश के किसी एक कोने में बैठकर पूर्वोत्तर के जंगलों में और नदी किनारे उपलब्ध विविध मसालों, जड़ी-बूटियों एवं पत्तेदार सब्जियों के बारे में अंदाजा लगाना कठिन है। त्योहारी सत्र के दौरान जंगली सूअर, वनमुर्गा और गयाल अक्सर उनके खान-पान में शामिल होते है और यह भी सही है कि कम ही ऐसा दिन होता है जब वे उत्सवी मिजाज में नहीं होते हैं। दरअसल, पूर्वोत्तर में उत्सव के बगैर जिंदगी की कल्पना नहीं की जा सकती। यहां जिंदगी उत्सव से कम नहीं है।

पूर्वोत्तर की खान-पान दुनिया हमेशा से संतुलित रही है, जिनमें मसालेदार एवं सादा दोनों तरह के व्यंजनों को अपनी-अपनी महत्ता हासिल है। पहाड़ी इलाकों में रहने वाली जनजातियों के लिए कोई भी भोजन तब तक पूरा नहीं होता जब तक उसमें सादी उबली सब्जियां शामिल नहीं हो। इसके अलावा मसालेदार व्यंजन भी शामिल होते हैं। इन उबली हुई सब्जियों का सूप ही इन जनजातीयों को पहाड़ों पर लंबी चढ़ाई और खेतों में मीलों की यात्रा की ताकत देता है।

वेजीटेबल स्ट्यू, मिर्च के साथ बांस का कोमल कोपल, बांस तने के साथ मछली, अरवी के पत्तों के साथ पोर्क, बांस पिकल एवं मछली, लौकी के साथ मछली, फरमेंटेंड फिश चटनी, केले के पत्ते में पकी हुई मछली, अदरख के साथ चिकन, चावल, सरसों में बना सूअर गोश्त, स्वीट राइस पैन केक, स्टर फ्राइड डक आदि इस क्षेत्र के कुछ लोकप्रिय व्यंजन हैं।

सबसे पहले पूर्वोत्तर भारत के व्यंजनों के प्रमुख घटकों के बारे में चर्चा की जानी चाहिए, क्योंकि इसके बगैर इस चर्चा अधूरी होगी। ये संघटक यहां की जनजातीयों द्वारा खुद तैयार किए जाते हैं। अधिकांश जनजातियों द्वारा इस्तेमाल इस संघटकों में किण्वित बैंबू शूट, मिर्च, खार (अल्केलाइन), ड्राई फिश, विभिन्न तरह के हर्ब, चावल आटा और अदरख, लहसुन एवं हल्दी पाउडर जैसे मसाले शामिल हैं। बेंत की कली, बेंत के पेड़ के मुलायम हिस्सों, केला पेड़ा का तना, हरा केला, ऑ टेंगा (एलीफैंट एपल) और विभिन्न तरह के चावल पूर्वोत्तर के व्यंजनों में इस्तेमाल किए जाते हैं।

खर्सिया टेंगा या बन्हगाज (फर्मेंटेड बैंबू शूट), जैसा कि असमी में कहा जाता है, तैयार करने के लिए बांस की कलियां समय पर चुनी जाती हैं, ताकि उन्हें ३-४ दिनों तक किण्वित किया जा सके। खरिसा कई तरह के हो सकते हैं, मसलन जुकान खरिसा (ड्राई बैंबू शूट), खारिसार असार (अचार), खरिसा पानी (लिक्विड बैंबू शूट) आदि। नगा समुदाय के लोग अपने स्वादिष्ट ड्राई पोर्क को बांस की कली के साथ पकाते हैं और इसे उबले हुए चावल के साथ खाते हैं। नगा व्यंजनों में खरिसा जूस का भी इस्तेमाल किया जाता है। खरिसा के साथ बैंबू स्टेम और मछली को भुना जाता है, जिसे स्थानीय भाषा में पोंगसेन कहा जाता है। यह नगा समुदाय के सर्वाधिक पसंदीदा व्यंजनों में से एक है। मणिपुर, मिजोरम और त्रिपुरा जैसे राज्यों में भी इसी प्रक्रिया का इस्तेमाल किया जाता है।

बांस की कलियों का इस्तेमाल कई असमी व्यंजनों में भी किया जाता है। इस क्षेत्र में बांस की कलियों के साथ पोर्क, मछली एवं डक पकाए जाते हैं। कच्ची बांस कली का इस्तेमाल चटनी एवं अचार के तौर पर भी किया जाता है। असम में अधिकांश तेल मुक्त व्यंजनों में बांस की कलियों का इस्तेमाल होता है। दक्षिण एशियाई मंगोलियाई जनजातीयों से रिश्ता होने के कारण इनमें बांस कली के व्यापक चलन की संस्कृति पनपी है।

इस क्षेत्र में इस्तेमाल होने वाला एक और महत्वपूर्ण संघटक है खार। यह मिजोरम, असम, मणिपुर, मेघालय, त्रिपुरा की अधिकांश जनजातीयों में काफी लोकप्रिय है। खार एक प्रमुख संघटक से तैयार किया जाता है जिसे भी खार ही कहा जाता है। पारंपरिक संघटक को केला तने के भष्म से पानी को छानकर तैयार किया जाता है, जिसे तब कोला खार कहा जाता है। पारंपरिक असमी भोजन किसी खार डिश से ही शुरू होता है, जिसे कच्चे पपीता, दाल एवं दूसरे अन्य संघटकों के साथ पकाया जाता है। वैसे, खार एवं टेंगा का मिश्रण सही नहीं माना जाता। असम के बोडो, राभा एवं कचारी समुदायों के लोग खार के शौकीन हैं। चावल के आटे में पके पोर्क और खार को इस क्षेत्र में लजीज व्यंजन माना जाता है।

पूर्वोत्तर भारत में हरी एवं लाल दोनों तरह की मिर्ची का व्यापक इस्तेमाल होता है। त्रिपुरा एवं मणिपुर में सूखे मिर्च पाउडर का इस्तेमाल अधिक होता है। इस क्षेत्र में विभिन्न प्रजातियों की मिर्च उपजायी जाती है। इसका इस्तेमाल नगाओं में लोकप्रिय चटनी अखुनी, मणिपुरियों की इरुंबा, खासियों की नगाखंबकापा और अरुणाचलियों की इकुंग में व्यापक तौर पर किया जाता है। नगा भूत जोलोकिया जिसे भूत जोलोकिया या राज जोलोकिया भी कहा जाता है, इस क्षेत्र में काफी लोकप्रिय है। मिर्च, अदरख, लहसुन और मेसेंजा (एक तरह के हर्ब) से तैयार नगा ड्राई पोर्क डिश काफी लोकप्रिय है जिसे भारत से बाहर कई देशों में पसंद किया जाता है। असम में भी खरिसा एवं भूत जोलोकिया से तैयार पोर्क काफी लोकप्रिय है। बांस की कली एवं भूत जोलोकिया से तैयार चटनी भी काफी लोकप्रिय है। इस प्रजाति की मिर्च से तैयार अचार इस क्षेत्र में काफी लोकप्रिय है।

(शीर्ष बायें से दक्षिणावर्त), एक संपूर्ण असमी आहार, असम में एक कर्बी महिला स्थानीय व्यंजन तैयार करती हुई, बांस कली के साथ पोर्क, औषधीय बूटियों के साथ फिश करी।

पूर्वोत्तर के व्यंजनों में ग्रीन हर्ब का इस्तेमाल भी काफी होता है। इनमें से कुछ हर्ब का इस्तेमाल औषधीय उद्देश्यों के लिए भी किया जाता है। कुछ जनजातियां इन्हें हरी पत्तियों में लपेटकर बांस के तने के साथ रोस्ट कर पकाती हैं। खासकर, मेसेंजा हर्ब, लाई, लेंगमसूर, मनीमून, वेदैलोटा और डिमोरूपट जैसे कुछ बेहद लोकप्रिय हर्ब पूर्वोत्तर में काफी पसंद किए जाते हैं। अरुणाचल में ओइंग, मणिपुर में वोकसा, मेघालय में वाक पुरा और मिजोरम में मैयान

बाई कुछ ऐसे विशेष व्यंजन हैं जिन्हें हर्ब में तैयार किया जाता है। हरी बूटियों के साथ मछली पकाना असम के लोगों को काफी पसंद है।

चटनी को पूर्वोत्तर में काफी पसंद किया जाता है। इसमें मसालों, सब्जियों और फलों का मिश्रण भी होता है। चटनी सूखी या तरह हो सकती है। यह चिकनी से लेकर खुरदरा हो सकती है। चटनी एक मसाले मिश्रण है जिसे मुख्य व्यंजन के साथ लिया जाता है। इस क्षेत्र की हर जनजाति को अपनी-अपनी चटनी पसंद है। आखुनी, इरुंबा, कहुदी, खराली, जुकुटी, बेटगज और पानीटेंगा आदि इस क्षेत्र की कुछ लोकप्रिय चटनी हैं। इन्हें सिलौट पर पीसा जाता है।

चावल इस क्षेत्र का मुख्य आहार है। इस क्षेत्र में चावल की कई प्रजातियों की मौजूदगी से इस विश्वास को बल मिलता है कि सबसे पहले असम में भी इसकी खेती हुई थी। असम में इंडिसिया एवं जापोनिका दोनों प्रजातियों के चावल उपजाए जाते हैं। चावल की कुछ उत्कृष्ट प्रजातियों में कराबल्लम या

(ऊपर) बांस के तने में मछली एवं चिकन तैयार करता हुआ एक ग्रामीण। (बायें) कटोरे में संग्रहित खार।

कौरीबदाम आदि सिर्फ असम में ही उपलब्ध हैं।

चावल को स्नैक्स के तौर पर विभिन्न रूपों में खाया जाता है : रोस्टेड और पिसे हुए (जैंडोफ) रूप में, भूसी के साथ उबालकर एवं चूरा बनाकर या चबेने के रूप में। यहां कई और तरह के चावल भी उपजाए जाते हैं, जिन्हें सिर्फ पानी में भिंगोकर दूध एवं गुड़ के साथ खाया जा सकता है। मणिपुर का काला शिकी एवं भूरा चावन एवं असम का जोहा एवं बोरा चावल विश्व प्रसिद्ध हैं।

पूर्वोत्तर की विभिन्न जनजातियों के लिए पोर्क के बगैर खाने की कल्पना नहीं की जा सकती। असम के लोगों को बांस की कली के साथ तैयार पोर्क यानी ऑ टेंगा काफी पसंद है। नगा जनजाति के लोगों को ड्राई बैंबू शूट एवं मेसेंजा सीड्स के साथ स्मोक्ड

ऐसे में जब पूर्वोत्तर के आहार में चावल, मछली, ताजा सब्जियों, फलों आदि का व्यापक इस्तेमाल होता है, ये आहार काफी पौष्टिक, कम कैलोरी और अधिक फाइबर वाले होते हैं

– शेफ अतुल लहकार

पोर्क काफी पसंद है। मेघालय की खासी जनजातियों में डोहनियोंग पोर्क डिश काफी लोकप्रिय है।

पूर्वोत्तर के आहारों में मछलियों को भी महत्वपूर्ण स्थान हासिल है, खासकर असमी एवं मणिपुरी व्यंजनों में। फिश डिशेज बांस की कलियों एवं विभिन्न औषधीय हर्ब के साथ तैयार किये जाते हैं। केले के पत्ते में लपेटकर भी मछली पकाई जाती है। बैंबू स्टेम में किण्वित मछली को भी पकाया जाता है। यह यहां काफी लोकप्रिय है। पूर्वोत्तर के किसी भी राज्य की तुलना में असम में ज्यादा मछलियां पाई जाती हैं। ऑ, थेकेरा और नींबू से बनने वाली खट्टी मछली असम में काफी लोकप्रिय है।

पूर्वोत्तर की सभी जनजातियों में राइस बियर बेहद लोकप्रिय अल्कोहलिक बेवरेज है। अधिकांश त्योहारों, शादियों या धार्मिक आयोजनों में चावल की शराब जरूर परोसी जाती है। विभिन्न मौकों पर मेहमानों को भी राइस बियर परोसी जाती है। पारंपरिक तौर पर अधिकांश जनजातियों में घर की महिलाएं ही बियर तैयार करती है। विभिन्न व्यंजनों की तरह अलग-अलग क्षेत्रों में राइस बियर का स्वाद भी भिन्न होता है। मिसिंग जनजाति की साईमोद, ताई अहोम जनजाति की लुकलाउ और देउरी जनजाति की सुजे बियर असम की कुछ प्रमुख बियर में शामिल हैं।

अरुणाचल के लोगों की सादगी उनके खान-पान में दिखती है, जिन्हें बनाना और परोसना उतना ही आसान है। इसके लिए आपके पास पसंद की सब्जी और घर में उपजाया गया अदरख होना चाहिए। वे कलरिंग या व्यंजन का रंग बदलने के लिए मसाले और तेल का इस्तेमाल नहीं करते। वे खान-पान को सजावटी बनाने से परहेज करते है, इसलिए प्राकृतिक अवस्था में भोजन परिरक्षण को महत्व देते हैं। अरेक, लुक्तार, आसो अदीन, गोर्व आओन, अमील यिनिग अरुणाचल के कुछ लोकप्रिय व्यंजन हैं।

असम के लोग सबसे ज्यादा चावल पसंद करते हैं। बहुसंख्यक गैर-जनजातीय असमियों एवं असम की दूसरी जनजातियों में मुख्य अंतर यह है कि जनजातियों को सूअर मांस, धूप में सुखाई गई एवं किण्वित मछली पसंद है। असमी व्यंजनों में लेमन ग्रास, पिसा हुआ नारियल, पिसी हुई मिर्च और बांस की कलियों का इस्तेमाल थाई व्यंजनों से प्रभावित है। माशेद पोटैटो (आलूपिटिका) और अरवी के व्यंजन असम के कुछ लोकप्रिय व्यंजनों में शुमार हैं।

कान्यनोई, उटी, इरोनबा, वोकसा पोर्क मणिपुर के कुछ लोकप्रिय व्यंजन हैं, वहीं कई मछली व्यंजन भी इनमें काफी लोकप्रिय हैं। मणिपुर के व्यंजनों ने न सिर्फ अपनी कुछ मौलिकता बचा रखी हैख बल्कि उन्होंने खुद को समय के अनुसार ढाला भी है। अन्य पड़ोसी राज्यों की तुलना में मणिपुर के लोग

(ऊपर) बांस की कली, (नीचे) एक असमी चटनी *काहुदी*।

अपने खान-पान में अधिक से अधिक व्यंजनों को शामिल करना अपने लिए गौरव की बात समझते हैं।

चावल और पोर्क के अलावा एक और ऐसी चीज जिसके बगैर मेघालय के लोग रह नहीं सकते, वह है कवई यानी स्थानीय सुपारी। किसी भी असली खासी रसोईघर में स्मोक्ड मीट बनाने की व्यवस्था जरूर होती है। इस समुदाय के लोग महीनों मांस या मछली का परिरक्षण कर सकते हैं।

मिजोरम के लोग चावल ज्यादा पसंद करते हैं। वे अपने दिन की शुरुआत तड़के करते हैं और उनका पहला आहार होता है टुकथेनान जो करीब ६ बजे सुबह लिया जाता है। किसी भी असली मिजो रसोईघर में एक बड़ी भट्ठी होती है, जिसके ऊपर टंगी सीख में कबाब लगा होता है, वहीं इसमें केले के पत्तों में लिपटी सब्जी या सरसों के पत्ते भी लगे गूंथे होते हैं। मिजो समुदाय के लोग बाई खूब पसंद करते हैं जो खार की तरह की उबली हुई सब्जी होता है। बाई एवं खार लगभग एक तरह के होते हैं, लेकिन उनके बनाने के तरीका अलग एवं स्वाद भी भिन्न होता है।

वर्षों से त्रिपुरा की जनजातियां पूर्वी बंगाल से आए आप्रवासियों के साथ रहते आए हैं। उन्हें सादा भोजन पसंद है। बस, अदरख एवं मिर्च के साथ उबली हुई सब्जी। बांस की कली भी एक अनिवार्य तत्व है, जो त्रिपुरा के लगभग सभी शाकाहारी व्यंजनों में इस्तेमाल होती है।

ऐसे में पूर्वोत्तर के आहार में चावल, मछली, ताजा सब्जियों, फलों आदि का व्यापक इस्तेमाल होता है, ये आहार काफी पौष्टिक, कम कैलोरी और अधिक फाइबर वाले होते हैं।

पूर्वोत्तर के व्यंजनों को बनाना काफी आसान है। अधिकांश व्यंजनों के निर्माण में किण्वन, रोस्ट एवं उबाल नामक तीन प्रक्रियाओं का इस्तेमाल होता है। पूर्वोत्तर के आहार दशकों से विभिन्न समुदायों से प्रभावित रहे हैं, जिनमें थाई, जिन्होंने कभी इस क्षेत्र के कुछ हिस्सों पर शासन किया, भौगोलिक नजदीकी के कारण चीनी और बंगाली आप्रवासी प्रमुख रूप से शामिल हैं। इन बाह्य प्रभावों एवं स्थानीय परंपराओं का अनूठा मिश्रण पूर्वोत्तर के व्यंजनों को अनूठा बनाते हैं।

(अतुल लहकार असम के जाने-माने शेफ एवं पूर्वोत्तर के व्यंजनों के विशेषज्ञ हैं। वे गुवाहाटी में दो नामी रेस्तरांओं खोरिका एवं भूत जोलोकिया का संचालन करते हैं)

भारतीय मूल के चार वैज्ञानिकों को राष्ट्रपति पुरस्कार

चार भारतीय-अमेरिकी शोधकर्ताओं ने उन ९६ लोगों की जमात में जगह बनाई है जिन्हें राष्ट्रपति बराक ओबामा ने युवा पेशेवरों को दिए जाने वाले सर्वोच्च अमेरिकी पुरस्कार 'प्रेजीडेंशियल अर्ली करियर अवार्ड्स फॉर साइंटिस्ट्स एंड इंजीनियर्स' से नवाजा है।

सम्मानित भारतीय-अमेरिकी वैज्ञानिक हैं मासाचूसेट्स जनरल हॉस्पिटल एवं हार्वर्ड मेडिकल स्कूल के बीजू परेक्कडन, मासाचूसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के पवन सिन्हा एवं पराग ए. पाठक और जॉन्स हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी की श्रीदेवी वेदुला शर्मा। ओबामा ने पुरस्कारों की घोषणा करते हुए कहा, ''विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में आविष्कारों से न सिर्फ हमारी अर्थव्यवस्था मजबूत होती है, बल्कि वे हमें बतौर व्यक्ति भी प्रेरित करते हैं।''

उन्होंने कहा, ''इन होनहार वैज्ञानिकों के शुरुआती करियर में ऐसी उपलब्धियां आने वाले वर्षों में उनकी बड़ी उपलब्धियों की ओर इशारा करती हैं।''

हाइट हाउस की घोषणा में कहा गया, ''ये पुरस्कार देश के लक्ष्यों को हासिल करने, बड़ी चुनौतियों से निपटने एवं अमेरिकी अर्थव्यवस्था में विज्ञान का योगदान बढ़ाने के लिए प्रखर वैज्ञानिकों एवं इंजीनियरों की जमात पैदा करने की ओबामा प्रशासन की प्राथमिकताओं को साबित करते हैं।'' रोजगारशुदा या सरकार वित्तपोषित ऐसे वैज्ञानिकों का चयन विज्ञान एवं तकनीकी के मोर्चों पर अभिनव शोध की उनकी प्रतिबद्ध कोशिश को ध्यान में रखकर किया जाता है। बयान में यह कहा गया है।

श्रीदेवी वेदुला शर्मा

अमेरिकी कला परिषद में रानी रामास्वामी

अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने भारतीय-अमेरिकी शिक्षिका एवं १९७८ से भरतनाट्यम कलाकार रानी रामास्वामी को प्रतिष्ठित नेशनल काउंसिल ऑन आर्ट्स (एनसीए) में बतौर सदस्य शामिल किया है। उनके नामांकन एवं अन्य प्रमुख प्रशासनिक पदों की घोषणा करते हुए राष्ट्रपति ने एक बयान में कहा है, ''ये प्रतिबद्ध एवं निपुण व्यक्ति मेरे प्रशासन के लिए मूल्यवर्द्धन होंगे।''

रागमाला डांस कंपनी के संस्थापक एवं सह-कला निदेशक रामास्वामी १९८४ से भारत की महानतम जीवित नर्तकों में से एक अलारमेल वल्ली की शिष्य रही हैं।

वे २०११ की मैकनाइट डिस्ट्विंगिस्ट आर्टिस्ट अवार्ड की विजेता रहीं, वहीं उन्हें मिनेपॉलिस स्टार ट्रिब्यून ने '२०११ आर्टिस्ट ऑफ द ईयर' घोषित किया।

रानी रामास्वामी

जर्मन फुटबॉल निकाय में दत्त को जगह

भारतीय मूल के फुटबॉल प्रबंधक रोबिन दत्त को जर्मन फुटबॉल फेडरेशन (डीएफबी) का खेल निदेशक नियुक्त किया गया है।

दत्त के पिता सब्यसाची ने आईएएनएस से बातचीत करते हुए कहा, ''मेरे पुत्र रोबिन को डीएफबी द्वारा खेल निदेशक नियुक्त किया गया है और वे टीम प्रबंधन के भी हिस्सा हैं।'' दत्त ने पूर्व जर्मन अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी मैथियास सैमर की जगह ली है।

भारतीय पिता एवं जर्मन माता की संतान दत्त उस वक्त सुर्खियों में आए जब उन्हें जून २०११ में टॉप बंडेसलिगा क्लब लेवरकुसेन का कोच बनाया गया था। वैसे, उन्हें १६ यूईएफए चैंपियंस लीन मैच के राउंड में एफसी बार्सीलोना से अपने क्लब की १-७ से हार और बंडेसलिगा टीम की लगातार चार हार, जिसके कारण यह तालिका में छठे स्थान पर पहुंच गया, के कारण १ अप्रैल को बर्खास्त कर दिया गया था।

रोबिन दत्त

राजन गंगाहर ने 'खुशियां' की कहानी के लिए पुरस्कार पाया

भारतीय-अमेरिकी लेखक राजन गंगाहर ने हाल ही में टोरंटो में आयोजित पंजाबी इंटरनेशनल फिल्म एकेडमी अवार्ड्स (पीफा) में अपनी फिल्म 'खुशियां' के लिए बेस्ट स्टोरी अवार्ड पाया है, जो काफी अहम है।

इसमें धर्मेंद्र, ओमपुरी, जिम्मी शेरगिल और सोनू सूद जैसी हस्तियों ने भाग लिया।

बतौर कहानी लेखक अपनी पहली फिल्म में राजन ने फिल्म संवाद एवं स्क्रीन प्ले भी लिखे। भारतीय-अमेरिकी त्रिलोक मलिक ने इस फिल्म का निर्देशन किया है। यह फिल्म एनआरआई बाजार में काफी चर्चित रही है, जिसमें पंजाबी सिनेमा की नामी नामों कुलभूषण खरबंदा, राम विज, टिस्का चोपड़ा (तारे जमीं पर), दीप ढिल्लन, श्रेय बावा, विवेक शौक, गुरप्रीत जग्गी आदि ने रोल किया है।

यह फिल्म पंजाबी गायक जसबीर जस्सी को लीड रोल में पेश करती है। फिल्म की कहानी काफी रोचक है, वहीं फिलमांकन काफी सशक्त है। इसे काफी सराहना मिली है।

Ministry of Overseas Indian Affairs
CII
Confederation of Indian Industry
OIFC
Overseas Indian Facilitation Centre
Expanding the Economic Engagement of the Indian diaspora with India
OIFC completes 5 years
- Over 9930 Overseas Indians received answer to their queries in the areas of returning to India, taxation, market entry, capital markets, real estate, FDI, FEMA etc
- Over 12,122 Overseas Indians & Indian companies have networked with each other through OIFC online business networking portal
- Registrations received from 178 countries
- Monthly e-Newsletter 'India Connect' has more than 32,613 subscribers
- About 6400 Overseas Indians engaged with India through OIFC activities
- 21 Diaspora Engagement Meets conducted in Africa, Asia, Caribbean, Europe, Middle East, North America and South East Asia
OIFC Facilitation Services
ASK THE EXPERT
Query addresal of Overseas Indians
INVESTOR SERVICES
End-to-end facilitation services through hand-holding investors
BUSINESS NETWORKING PORTAL
www.oifc.in
FACE TO FACE
Diaspora Engagement Meets and Business Forums
For further details, please contact :
Ms. Debasmita Roy Chakraborty
Overseas Indian Facilitation Centre
C/o Confederation of Indian Industry
249 F, Sector 18, Udyog Vihar, Phase IV, Gurgaon -122 015, Haryana, INDIA
Tel: +91 124 4014060-67; Fax: +91 124 4309446; Email: debasmita.chakraborty@cii.in
www.oifc.in

आम का जलवा

यह दिल्ली के आम प्रेमियों के लिए यादगार महोत्सव था जहां उन्हें फलों के राजा आम की ६०० से अधिक प्रजातियों को ८ जुलाई को दिल्ली में संपन्न हुए तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय मैंगो फेस्टिवल में चखने का मौका मिला। इसमें लंगड़ा, दसहरी, आलफांसो, केला, इलायची और रसगुल्ला जैसी नामी प्रजातियों के आमों को पेश किया गया। नई दिल्ली के पीतमपुरा स्थित दिल्ली हाट में १७ पारंपरिक आम उत्पादकों, जिनमें जनरल इंस्टीट्यूट फॉर सब-ट्रॉपिकल हॉर्टीकल्चर, मुस्तफा ऑर्चार्ड्स एवं पुरजाकी प्रमुख थे, ने भाग लिया। इसमें न सिर्फ स्थानीय लोगों, बल्कि सैलानियों एवं एनआरआई ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। इसमें सिर्की, केंगिस्टन, आम्रपाली, मल्लिका फाजली जैसी कई और प्रजातियों का दर्शन हुआ। इन आमों को विभिन्न हॉलों में प्रदर्शित किया गया और इनमें से कई प्रजातियों की बिक्री भी हुई। यहां मैंगो स्क्वैश एवं अचार जैसे उत्पाद भी बिक्री के लिए मौजूद थे। इस महोत्सव की एक और विशेषता थी आम खाने की प्रतियोगिता का आयोजन, वहीं मैंगो क्वीज एवं मैंगो स्लोगन प्रतियोगिता भी प्रमुख आकर्षण थे। दिल्ली सरकार के पर्यटन विभाग, इंक्रीडेबल इंडिया, कृषि एवं प्रसंस्करित उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण एवं नेशनल हॉर्टीकल्चर बोर्ड द्वारा इसका आयोजन किया गया।

सत्यमेव जयते

Ministry of Overseas Indian Affairs
www.moia.gov.in
www.overseasindian.in